शिक्षा में सृजनात्मक नाटक एवं कठपुतली नर्तन

सृजनात्मक शिक्षा

शिक्षा में सृजनात्मक नाटक एवं कठपुतली नर्तन

मेहर आर. कांट्रेक्टर

अनुवाद

हरबंस लाल लूथरा

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

विषय-सूची

प्राक्कथन

मैं अमेरिका में सान्ता फ़े की डॉ. (श्रीमती) मर्जोरी मैक फर्लिन की अत्यंत आभारी हूं जिनका "उत्तरी अमेरिका के प्राचीन निवासियों की लोक कला" तथा "शिक्षा में पुतली नर्तन" के विषयों पर पूर्ण अधिकार है, तथा जिनके सहयोग, प्रोत्साहन एवं सहायता के बिना यह पुस्तक प्रकाशित न हो पाती। मैं उनके मार्गदर्शन तथा अनुभवों से लाभान्वित हुई हूं, अतः मैं उन्हें अपना गुरु मानती हूं और वस्तुतः उनकी अनुग्रहीत हूं।

मैं अपनी पुत्र वधू रशीदा तथा पुत्र नवरोज के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करना चाहती हूं, जिन्होंने व्यस्त कार्यक्रमों के बावजूद, पुस्तक के स्वरूप तथा उसकी तस्वीरों और रेखा चित्रों को सुधारने में मेरी सहायता की है।

—मेहर आर. कांट्रेक्टर

चित्र-सूची

परिचय

यह पुस्तिका उन लोगों के सामान्य मार्गदर्शन के लिए है जो कठपुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक के लिए प्रशिक्षण प्रणाली का संचालन करना चाहते हैं, अथवा इन तकनीकों का, शिक्षा, सामाजिक कार्य, मनोविनोद, व्यावसायिक चिकित्सा तथा दृश्य-श्रव्य शिक्षा में प्रयोग करना चाहते हैं, ताकि वे अपने विचार प्रभावी ढंग से प्रौढ़ों एवं बच्चों तक पहुंचा सकें।

सृजनात्मकता का अर्थ है, अपनी कल्पना का प्रयोग करना तथा अपने ही उत्तरदायित्व पर, अपने विचारों को क्रिया रूप देना। कला के बहुत से रूपों का अब शिक्षा में प्रयोग किया जा रहा है किंतु यह शिक्षण बहुधा औपचारिक होता है। छात्र से केवल नकल करने की अपेक्षा की जाती है और उसे अपने विचारों को प्रकट करने तथा निजी तकनीक को विकसित करने के बहुत कम अवसर दिए जाते हैं। इसके विपरीत, कला की सहायता से दी गई शिक्षा सृजनात्मक हो सकती है यदि उसका उद्देश्य, छात्रों को अपने ही ढंग से विचार व्यक्त करने में सहायता देना हो। इस पुस्तिका में इसी सृजनात्मक दृष्टिकोण का वर्णन किया गया है। शैक्षिक कार्य के लिए कठपुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक विशेष रूप से उपयुक्त तकनीकें हैं क्योंकि इनसे बहुत-सी कलाएं संबद्ध हैं। सृजनात्मक नाटक का कहीं और किसी समय भी प्रयोग किया जा सकता है, चूंकि इसके लिए किसी उपकरण की आवश्यकता नहीं होती मात्र कुछ स्थान के, जहां पात्र बिना किसी बाधा के चल-फिर सके तथा एक नेता की, जो कुछ प्रशिक्षित हो। कठपुतली नर्तन में नाटक की प्रायः सभी विशेषताओं के अतिरिक्त, कारीगरी एवं डिजाइन की आवश्यकता होती है। वास्तव में यह एक नाटकीय कला है, क्योंकि पुतलियों से अभिनय करवाया जाता है। तालबद्ध, गति, मूक अभिनय तथा आशुरचित संवादों एवं क्रियाओं सहित अभिनय, सृजनात्मक नाटक की कुछ तकनीकें हैं जिन्हें कठपुतली नर्तन में सम्मिलित किया जाना चाहिए ताकि वह शिक्षा के प्रसार के लिए व्यावहारिक एवं अभिव्यंजक कला बन सके।

(क) भारत में सृजनात्मक कला की आवश्यकता

तेजी से विकास की ओर बढ़ते हुए देश में, शिक्षा तथा उसकी प्रगति के लिए बहुत कुछ किया जा रहा है, किंतु शायद प्रशिक्षित लोगों की कमी के कारण सृजनात्मक कलाओं की ओर यथोचित ध्यान नहीं दिया गया। यही कारण है कि बच्चों को एक पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार, शिक्षा दी

जाती है, जिसका उद्देश्य उन्हें केवल परीक्षा पास करने के योग्य बनाना है। इसके परिणामस्वरूप उनकी कल्पना बहुत कम उभर पाती है और उन्हें सृजनात्मक ढंग से सोचने के अवसर प्रायः नहीं मिलते। इससे उनका विकास एकांगी रहता है, किन्तु बहुत से शिक्षक ऐसे हैं जो यह महसूस करते हैं कि बच्चों को सृजनात्मक दृष्टिकोण से पढ़ाया जाना चाहिए। यह पुस्तिका उन लोगों के लिए तैयार की गई है। भारत में कठपुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक—दोनों का ही प्रयोग कम हुआ है। हमें आशा है कि इस निर्देशिका में सुझाया गया उपाय, बच्चों के शिक्षण के लिए नई दिशा प्रदान करेगा, और हमारे शिक्षा शास्त्री उसी मार्ग का अनुसरण कर पाएंगे जो इंग्लैंड, अमेरिका तथा अन्य पाश्चात्य देशों में बच्चों के बहुमुखी विकास के लिए सफल सिद्ध हुआ है।

डर इस बात का है कि अन्य विषयों के अध्यापन के लिए, कहीं इन कलाओं का प्रयोग केवल साधन के रूप में न किया जाए। शिक्षा में कठपुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक का पहला काम, कल्पना, नेतृत्व शक्ति तथा व्यक्तिगत सोच-विचार को विकसित करना है, इसके अतिरिक्त उनका यह कार्य भी है कि वे हमें इस योग्य बनाएं कि हम अन्य सभी कलाओं को, जो राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर हैं, ग्रहण कर सकें। भारतीय शिक्षा के एक नेता के अनुसार स्कूलों में कठपुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक के प्रयोग का महत्वपूर्ण उद्देश्य यही है कि अधिक से अधिक छात्र इनमें भाग लें और यह भागीदारी उन गिने-चुने विद्यार्थियों तक सीमित न रहे जो अक्सर औपचारिक नाटकों में अभिनय करते हैं। इसके साथ ही सृजनात्मक नाटक, बच्चों को इस बात के सुयोग्य बनाता है कि वे औपचारिक नाटक को समझें तथा उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में पहुंचने पर उसमें भाग ले सकें। यही विचार सृजनात्मक नाटकों के पाश्चात्य व्याख्याताओं के सर्वथा अनुरूप है। उनके विचार में तेरह-चौदह वर्ष से कम आयु के बच्चों को विद्वत्तापूर्ण संवादात्मक नाटकों में अभिनय नहीं करना चाहिए क्योंकि ये प्रौढ़ क्रियाएं हैं और बच्चों की आत्माभिव्यक्ति के लिए स्वाभाविक माध्यम नहीं हैं। इसके विपरीत, सृजनात्मक नाटक, बच्चे की नाटकीय क्रीड़ा पर आधारित होता है जिसमें वह भिन्न-भिन्न लोगों, पशुओं, मशीनों तथा उन वस्तुओं के रूप धारण करता है, जिन्हें उसने गौर से देख रखा है। वह इस खेल में पूर्णतया तल्लीन हो जाता है। उसे एक पात्र से दूसरे पात्र का रूप धारण करने में तनिक भी देर नहीं लगती। वह उपलब्ध स्थान में आजादी से चलता-फिरता है और दर्शकों की आवश्यकता महसूस नहीं करता। सृजनात्मक नाटक एक निजी, अंतरंग सामूहिक क्रिया है जिसमें नेता तथा बच्चे मिलकर कहानियों का नाटकीकरण करते हैं तथा आशुरचित संवादों और अभिनय द्वारा इन नाटकों को स्वच्छंदता से खेलते हैं। इनमें रंगमंच के अतिरिक्त कमरे के सभी भागों का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक बच्चे को अपने विचारों को व्यक्त करने, नाटकों के आयोजन में सहयोग देने तथा उनमें भाग लेने का अवसर मिलता है। 'पात्र वर्ग' में बारंबार परिवर्तन किए जाते हैं ताकि प्रत्येक बच्चा, संपूर्ण अभिनय तथा सभी पात्रों की भूमिका से अवगत हो जाए।

स्कूलों में कठपुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटकों की व्यवस्था का उद्देश्य सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए नाटक तैयार करना नहीं है। उनका उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को आत्माभिव्यक्ति के ऐसे

अवसर प्रदान करना है जो सारे समूह की क्रियाओं से संबद्ध हों। इसका अर्थ प्रदर्शनों का पूर्णतया बहिष्कार करना नहीं, बल्कि यह कि उन्हें इस व्यवस्था का प्रमुख लक्ष्य न माना जाए।

एक और बात का संशय है कि शैक्षिक कार्यक्रम में कलाओं का प्रयोग बच्चों के हितों के लिए कम और स्कूल तथा अध्यापकों के गौरव बढ़ाने के लिए अधिक होता है। पारितोषिक एवं प्रदर्शन के उद्देश्य से बनाए गए चित्र, मॉडल तथा अन्य कलाकृतियां प्रौढ़ भावना की परिचायक हैं। वे बच्चों के हित के लिए स्थापित किए गए मूल्यों को नष्ट करती हैं। यदि बच्चा वयस्कों से प्रेरित न हो, तो उसे कार्य पूर्ण करने में इतनी रुचि नहीं होती जितनी कि कार्य के करने में। वयस्क बच्चों के कार्य का मूल्यांकन अपने ही दृष्टिकोण से करते हैं। वे इस बात को नहीं समझते कि बच्चा जो देखता और जानता है, उसे अभिव्यक्त करने का उसका अपना ढंग होता है। आजकल बच्चों को अपने ही ढंग से चित्रांकन तथा अन्य संबद्ध कलाओं के अभ्यास के लिए अधिक अवसर प्रदान नहीं किया जाता। संगीत तथा नृत्य में तो वयस्क विचारों का ही हाथ प्रायः ऊपर रहता है। नृत्य में प्रशिक्षित बच्चों द्वारा प्रस्तुत बैले तथा उनके द्वारा तैयार लघु संगीत नाटकों का निर्देशन भी, वयस्क निर्देशन जैसा ही होता है। उन्हें अभिनय प्रदर्शन के लिए यदा-कदा भिन्न-भिन्न स्थानों पर भी ले जाया जाता है। इन गतिविधियों से बच्चों में सृजनात्मकता के विकास को विशेष सहायता नहीं मिलती क्योंकि इस प्रक्रिया का लक्ष्य तो बच्चों के नृत्य एवं संगीत में वह संपूर्णता प्राप्त करवाना है जो सार्वजनिक प्रदर्शनों के लिए आवश्यक होती है। नाटक में भी प्रायः ऐसी ही स्थिति रहती है। अध्यापकों तथा शैक्षिक प्रशासकों के लिए सृजनात्मक नाटक की उपयोगिता को स्वीकारना कठिन प्रतीत होता है क्योंकि इसके सिद्धांतों को मान्यता प्रदान करने के लिए उन्हें नया दृष्टिकोण अपनाना पड़ेगा।

बच्चों को रंगमंच पर अभिनय के लिए प्रशिक्षित करना स्कूल की सर्वाधिक प्रिय क्रियाओं में से है जिससे वे कार्यक्रमों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पाते हैं। यह प्रायः महसूस नहीं किया जाता कि बच्चों पर लादी गई यह एक वयस्क भावना है और बच्चे अपने बड़ों का अनुसरण करने में प्रवीण होते हैं। किंतु यदि तेरह-चौदह वर्ष से पहले इन्हें रंगमंच से अलग रखा जाए और उन्हें स्कूल के प्रारंभिक वर्षों में सृजनात्मक नाटक में नियमित रूप से भाग लेने के अवसर जुटाए जाएं, तो यह अनुभव उन्हें औपचारिक नाटकों में भाग लेने के सर्वथा योग्य बना देता है। वे पात्र के चरित्र को समझने, संवादों तथा क्रियाओं की आशुरचना के लिए सृजनात्मक ढंग से सोचने तथा अपनी वाणी और शरीर को नियंत्रित करने में प्रवीण हो जाते हैं या यूं कह लीजिए कि वे अभिनेता की बुनियादी तकनीक को ग्रहण कर लेते हैं। विवेकशील शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों को वयस्कों का अनुकरण करने, स्टेज पर अभिनय का आडंबर रचने तथा समझे बिना संवादों का उच्चारण करने के लिए उत्साहित न करें, बल्कि उन्हें, व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक बातों को अपनाने तथा सृजनात्मक नाटक से प्राप्त नाटक की सही सूझबूझ हासिल करने में सहायता दें।

(ख) कठपुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक का भारत में प्रयोग

इन कलाओं की कल्पना तथा सृजनात्मक सोच-विचार को विकसित करने के अतिरिक्त उचित रीति से प्रयोग किया जाए, तो वे भूगोल, इतिहास, स्वास्थ्य तथा सामाजिक ज्ञान के अध्यापकों के लिए भी बहुत उपयोगी हो सकती हैं। उनकी सहायता से याद करने की पद्धति की बजाए 'करो और सीखो' की प्रणाली को अपनाया जा सकता है। यदि बच्चों का, अन्य देश के लोगों के रहन-सहन के संबंध में पुतली प्रदर्शन अथवा सृजनात्मक नाटक प्रस्तुत करने के लिए कुशल मार्गदर्शन किया जाए, तो वे केवल उस देश के विषय में ही ज्ञान प्राप्त नहीं करते, बल्कि जिज्ञासावश इस संबंध में स्वयं अधिक जानकारी पाने के लिए उत्सुक हो उठते हैं।

जैसे पुतलियों के प्रदर्शन से बच्चों में विचारों का संचार होता है, वैसे ही वयस्कों, विशेष रूप से ग्रामीण वयस्कों में, विचार संप्रेषण के लिए, पुतलियों का प्रभावी प्रयोग किया जा सकता है। किंतु शर्त यह है कि सूचित किए जाने वाले संदेश को नाटकीय ढंग से विकसित किया जाए (इसकी व्याख्या हम बाद में करेंगे) अन्यथा डर इस बात का है कि पुतलियों से व्यर्थ ही बुलवाया जाता रहेगा जैसा कि कुछ लोग बेमतलब बोलते चले जाते हैं।

बाल भवनों जैसे कुछ स्थानों को छोड़कर, भारत में मनोरंजन के लिए कलाओं का प्रयोग अभी विकसित नहीं हुआ है। नगरों तथा ग्रामों में निर्धन वर्गों के बच्चों के पास अपने मनोविनोद के लिए कुछ भी करने को नहीं है। दिए गए डिजाइन से नकल करने के स्थान पर अपने हाथों से कुछ करने तथा अपने विचारों को व्यक्त करने के जितने अधिक अवसर इन बच्चों को मिलेंगे, उतना ही अधिक उनके व्यक्तित्व का विकास होगा। सृजनात्मक नाटक मनोविनोद की उत्कृष्ट कला है। उसके लिए अभी तक बहुत कम लोग प्रशिक्षित किए गए हैं। किंतु अन्ततः यदि ग्रामों में कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा अध्यापकों को कलाओं के सृजनात्मक प्रयोग के प्रारंभिक नियमों से अवगत करा दिया जाए तो इस दिशा में बहुत कुछ किया जा सकता है।

व्यावसायिक चिकित्सा के लिए कई कलाएं उपयोगी हैं, कुछ अस्पतालों में बच्चों के मन बहलाव के लिए तथा अन्य विकलांगों के अभ्यास के लिए। किंतु चिकित्सा क्षेत्र की विशिष्टता के नाते, इनका प्रयोग चिकित्सकों के निर्देशन में तथा सतर्कता से करना चाहिए। कठपुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक ने चिकित्सा के कार्यक्रमों को रोचक बनाने में योगदान दिया है, इसीलिए इन कलाओं का उल्लेख यहां किया गया है।

भारत में सृजनात्मक कलाओं के विकास की बहुत संभावना है। उनके प्रयोग के लिए जैसे अधिक लोग प्रशिक्षित होंगे वैसे ही उनकी उपयोगिता के संबंध में जागरूकता बढ़ती जाएगी।

1

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन

क. पाठ्यक्रम की रूपरेखा

पुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक के शैक्षिक प्रयोग की सुझाई गई विधि बुनियादी है। चूंकि सृजनात्मकता पर बल दिया गया है इसलिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के आयोजन के लिए भी सृजनात्मक रूपरेखा की आवश्यकता होगी। इसके लिए जहां एक ओर सतर्क आयोजन की आवश्यकता होगी, वहां इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि पाठ्यक्रम के विषय ऐसे हों कि प्रशिक्षणार्थी चाहें तो उसमें मनचाहे सुधार तथा परिवर्तन कर सकें। योजना बनाते समय, प्रशिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं का भी यथासंभव ध्यान रखना होगा। यह देखना होगा कि उन्हें वयस्क लोगों के साथ काम करना है अथवा सामाजिक समस्याओं को अपना कार्य क्षेत्र बनाना है। यदि उन्हें बच्चों के साथ काम करना है तो वे किस आयु वर्ग के होंगे। नेता का यह भी कर्तव्य होगा कि वह प्रशिक्षण के बुनियादी नियमों को प्रशिक्षणार्थी के निजी व्यवसाय के अनुकूलन में सहायता दे। प्रत्येक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम अलग होता है। सारे समूह एक जैसे नहीं होते और न ही प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित समय एक होता है। किंतु कुछ बुनियादी बातें ऐसी हैं, जो प्रत्येक पाठ्यक्रम में सम्मिलित की जानी चाहिए।

1. पुतली मंचन की संक्षिप्त पृष्ठभूमि, विशेषकर भारत में इसके विकास का इतिहास, वर्तमान विश्व में इसका महत्व, रंगकला के रूप में इसके विशेष लक्षण दिए जाने चाहिए।

2. सृजनात्मक नाटक की व्याख्यात्मक परिभाषा जिसका प्रयोग प्रत्येक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में होना चाहिए। पाठ्यक्रम में कुछ अभ्यास भी शामिल किए जाने चाहिए। नाटक के मूल तत्वों पर विचार-विमर्श, नाटकों की रचना तथा आशुरचित शब्दों एवं क्रियाओं द्वारा उनका अभिनय पाठ्यक्रम के अन्य आवश्यक अंग हैं। यह भी आवश्यक है कि प्रशिक्षणार्थियों को लोक गीतों, इतिहास अथवा बाल-साहित्य में से चुनी हुई कथाओं के समुचित नाटकीकरण की शिक्षा दी जाए।

3. सरल कठपुतलियों की बनावट तथा उनकी रूपरेखा तैयार करने की क्षमता को विकसित करने के साथ-साथ प्रशिक्षणार्थियों को सामान्य सामग्री के उपयोग से कम समय में पुतलियां बनाना

सिखाना।

4. बनाए गए पुतली पात्रों पर आधारित नाटकों की रचना तथा आशुरचित संवादों एवं अभिनय द्वारा उनका विकास करना। सरल रंगमंचों को तैयार करने की नाना विधियों का प्रदर्शन किया जाए और उन पर नाटक खेले जाएं। इसके अतिरिक्त चुनी हुई कहानियों के विशिष्ट पुतली पात्रों को बनाने का कुछ अभ्यास कराया जाए।

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के ये चार मूल तत्व पुस्तिका में, इस क्रम के अनुसार प्रस्तुत नहीं किए गए हैं। आवश्यकता पड़ने पर इनमें फेर बदल किया गया है और कहीं-कहीं उन्हें एक-दूसरे के साथ मिला दिया गया है। यही परिवर्तन नेता के कार्य को सृजनात्मक बनाते हैं। किंतु इस पुस्तिका के चौथे अध्याय में हम नमूने के तौर पर एक प्रायोजना क्रमानुसार प्रस्तुत करेंगे जिसमें यह सुझाया जाएगा कि कठपुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक की दो तकनीकें आपस में कैसे मिलाई जा सकती हैं।

ख. प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के लिए व्यावहारिक व्यवस्था

किसी भी प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन के लिए संयोजक तथा संचालक (नेता) के अलग-अलग उत्तरदायित्व होते हैं। प्रारंभिक योजना बनाते समय ही इन पर चर्चा कर लेनी चाहिए।

1. वित्त व्यवस्था

यदि नेता को अपने काम के लिए वेतन की अपेक्षा हो, तो उसे संयोजक से बात कर लेनी चाहिए। उसे संयोजक को पाठ्यक्रम के लिए आवश्यक सामग्री पर अनुमानित खर्च भी बता देना होगा।

2. प्रशिक्षणार्थियों की संख्या

यह संख्या 15 से लेकर अधिकतम 25 तक होनी चाहिए। समूह को दो या दो से अधिक कार्यकारी दलों में बांट देना उचित होगा। वैसे तो, ऐसी परियोजनाएं भी हो सकती हैं। जिनमें समूह के सभी सदस्य एक साथ भाग लें, किंतु पुतलियों के निर्माण के संबंध में यदि दो या तीन छोटे दल स्वतंत्र रूप से काम करें तो सभी मिलकर कला के समूचे अनुभव को समृद्ध बना सकेंगे। नाटकों की योजना बनाते समय भी अच्छे परिणाम तभी उपलब्ध हो सकते हैं जबकि छोटे दल, निरंतर लगन और परिश्रम के साथ अपने नाटकों की स्वयं रचना करें। हां, नाटक के मूल सिद्धांतों पर विचार करते समय, समूह के सभी सदस्यों का एक साथ उपस्थित होना आवश्यक है।

एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के लिए एक की बजाए दो नेताओं का होना अधिक उपयुक्त होगा, किंतु यह आवश्यक है कि दूसरा नेता भी दोनों तकनीकों के बुनियादी सिद्धांतों से परिचित हो तथा वह मुख्य नेता के सहायक के रूप में काम करे। (दूसरे नेता की व्यवस्था पाठ्यक्रम के बजट पर भी निर्भर करती है) वैसे तो समूह में से भी अक्सर नेतृत्व के स्वाभाविक गुण वाले व्यक्ति मिल जाते
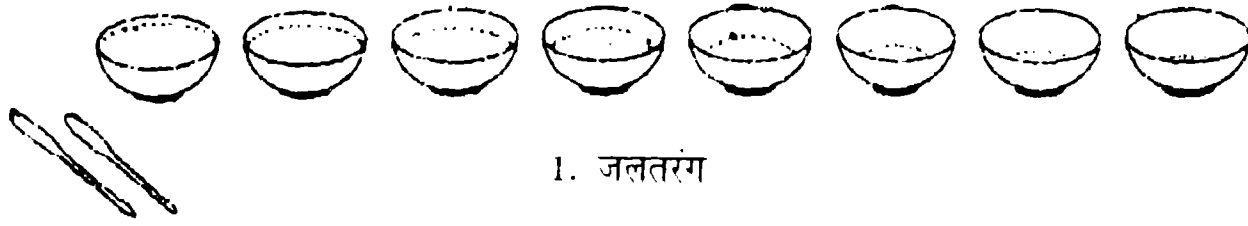
1. जलतरंग
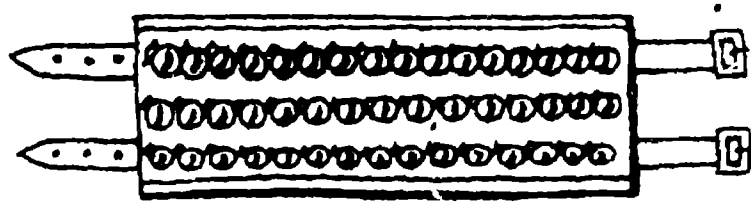
2. नूपुर
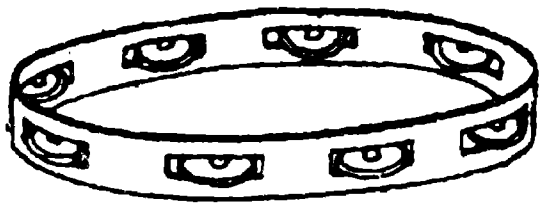
3. हलित्र (कंपक)

4. ढफली

5. डुगडुगी

6. नारियल के खोल

7. मोड़ा हुआ पीपल का पत्ता
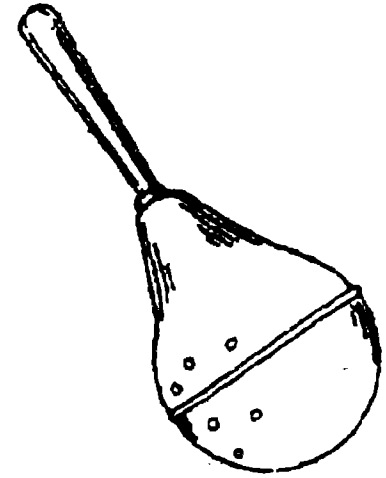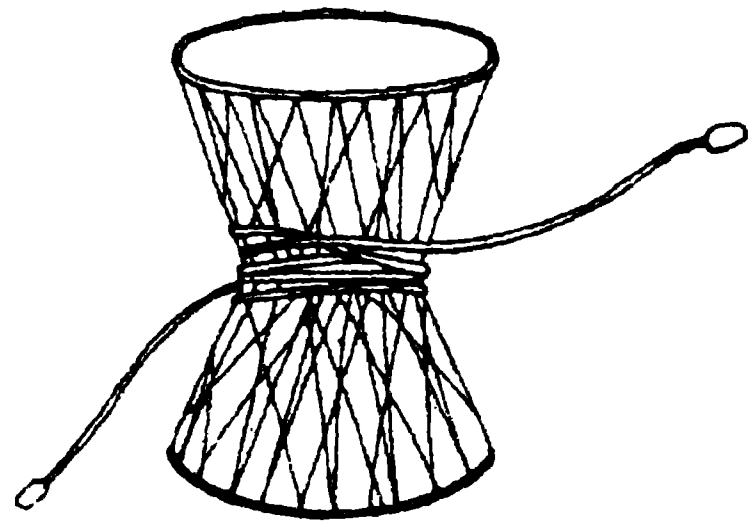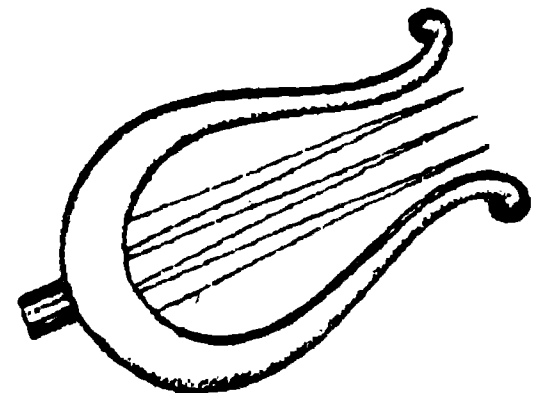
8. मोर चंग
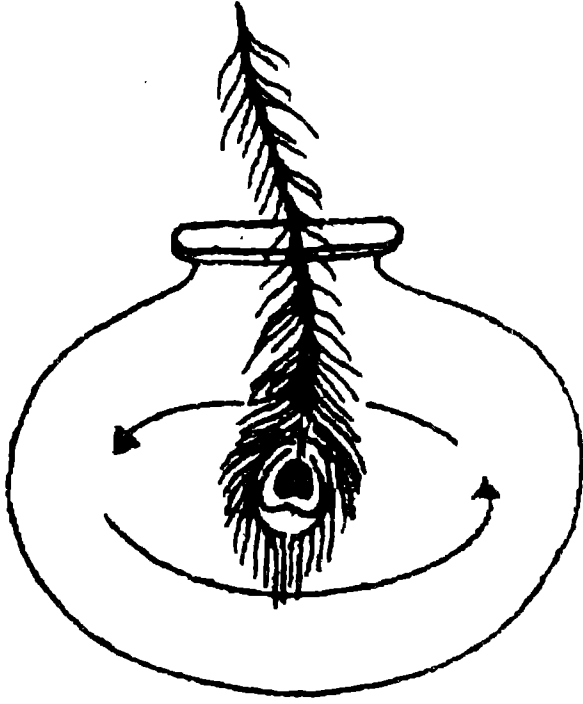
9. मोर पंख के साथ चाटी
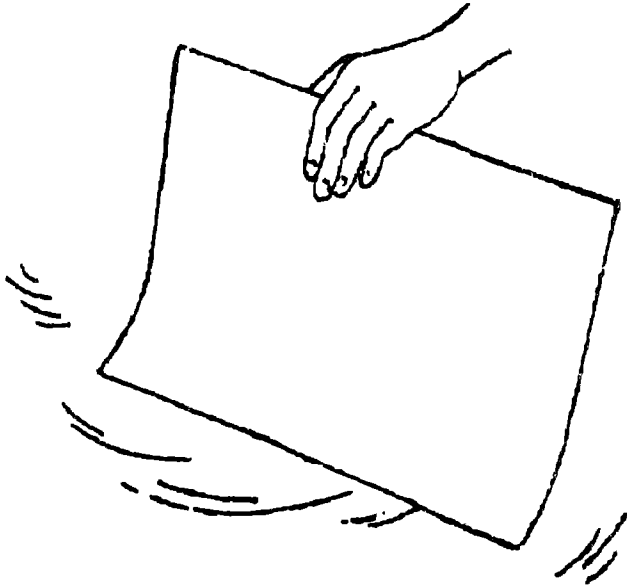
10. जाइलोफोन

11. बांसुरी

13. घन गर्जन के आभास के लिए
कार्ड पेपर या टीन का पतरा

12. लचकदार लकड़ी की पट्टी
(लकड़ी का चिमटा)
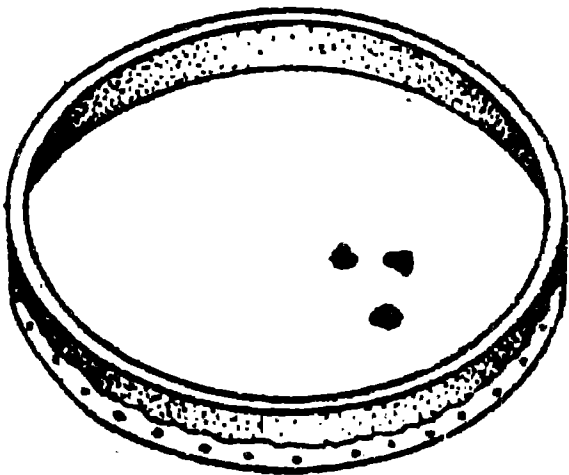
14. स्वेज़ल

16. ड्रम जिसमें वर्षा की ध्वनि के आभास
के लिए छोटे-छोटे पत्थर डाले गये हों
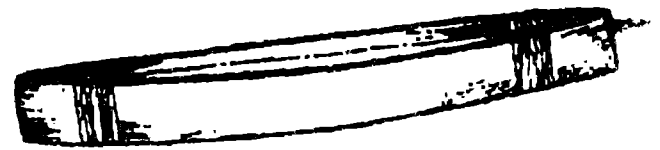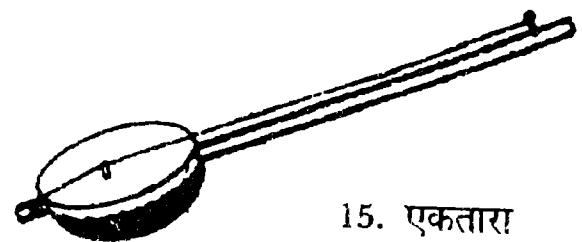
15. एकतारा

हैं, जिन्हें छोटे दलों की सहायता करने का उत्तरदायित्व सौंपा जा सकता है।

3. प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की अवधि

सामान्य नियमों के अनुसार, कार्य के लिए यथासंभव समय दिया जाना चाहिए। मात्र एक भाषण एवं प्रदर्शन दर्शकों को प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में भाग लेने के लिए उत्साहित तो कर सकता है, किंतु उन्हें कठपुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक के प्रयोग के लिए अच्छी तरह तैयार नहीं कर सकता। यदि समूह दस व्यक्तियों तक सीमित हो और सत्रों की योजना सावधानी से बनाई जाए तो दो दिनों के निरंतर परिश्रम से कुछ जानकारी दी जा सकती है। यदि पाठ्यक्रम के लिए अधिक दिनों की व्यवस्था की जा सके, तो दो से ढाई घंटे तक का दैनिक प्रशिक्षण भी प्रभावी हो सकता है, क्योंकि इस कार्य के लिए पूर्ण एकाग्रता की आवश्यकता है। यदि प्रतिदिन एक सत्र की व्यवस्था 12 दिन के लिए हो और कुल 20 घंटों का प्रशिक्षण समय उपलब्ध हो तो कठपुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक की तकनीकों का व्यावहारिक ज्ञान भली-भांति दिया जा सकता है। तीन, चार या छह सप्ताह के पाठ्यक्रम में, छात्र पूर्णतया प्रशिक्षित किए जा सकते हैं। लंबे पाठ्यक्रम विशेष रूप से लाभदायक होते हैं, क्योंकि इनमें प्रशिक्षणार्थियों को नई तकनीकों को पूर्ण रूप से सीखने का समय मिल जाता है। वे मिलकर काम करना सीख जाते हैं और उनमें कुछ प्रौढ़ जो शुरू-शुरू में कुछ सकुचाहट महसूस करते हैं, समय मिलने पर सहज हो जाते हैं।

4. प्रशिक्षणार्थियों का चयन

संयोजक, प्रायः नेता के परामर्श से प्रशिक्षणार्थियों का चयन करता है। अध्यापक तथा अन्य नाटकों में रुचि रखने वाले व्यक्ति जो कल्पनाशील, बहिर्मुखी एवं प्रयोग करने के लिए उत्सुक होते हैं, प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों से सबसे अधिक लाभ उठाते हैं। शर्मीले व्यक्ति भी कुछ समय के बाद अच्छा काम करने लगते हैं। वे व्यक्ति जो कला के अध्यापक होते हैं, पाठ्यक्रम के लिए वरदान सिद्ध होते हैं, क्योंकि वे पुतलियों को अधिक कलात्मक बनाने में सहयोग देते हैं।

प्रशिक्षण के लिए एक सामान्य भाषा अधिक सहायक हो सकती है, किंतु लोग अलग-अलग भाषाई क्षेत्रों से आते हैं। ऐसे में प्रशिक्षण का माध्यम अंग्रेजी है तो प्रशिक्षणार्थियों में इसे समझने तथा भली-भांति बोलने की क्षमता होनी चाहिए ताकि वे पुतलियों के खेलों तथा सृजनात्मक नाटकों में सक्रिय भाग ले सकें और कुछ सार्थक अनुभव प्राप्त कर सकें। नाटक रचना के लिए कक्षा को दलों में बांटते समय, इस बात का ध्यान रखा जाए कि किसी दल विशेष के सदस्य एक ही भाषा बोलते हैं, चाहे वह भाषा प्रशिक्षण के माध्यम से भिन्न ही क्यों न हो। प्रशिक्षणार्थी के लिए मातृभाषा में शब्दों की आशुरचना अधिक सुलभ होगी।

5. सामग्री की व्यवस्था

संयोजक के लिए अच्छा होगा, कि वह बुनियादी सामग्री की व्यवस्था स्वयं करें, न कि प्रशिक्षणार्थी क्योंकि पाठ्यक्रम के लिए विभिन्न पदार्थों की आवश्यकता होती है। कुछ ऐसे पदार्थ होते हैं, जिनका प्रयोग छात्रों द्वारा थोड़ी ही मात्रा में हो पाता है। कुछ पदार्थ तथा पुतलियों के निर्माण में प्रयोग होने वाला कुछ रद्दी सामान छात्रों से मंगवाया जा सकता है।
(पदार्थों की सूची पांचवें अध्याय में देखें)

6. संगीत तथा ध्वनि प्रभाव

यदि संयोजक ग्रामोफोन तथा रिकार्ड अथवा टेप रिकार्डर का प्रबंध कर सके, तो वे उपयोगी हो सकते हैं : प्रशिक्षण के लिए मूड अथवा भाव दशाओं के अनुकूल भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत, ऐसे कार्यक्रमों के लिए उपयुक्त होगा जिसमें लय या ताल की आवश्यकता होती है। ऐसा वाद्य संगीत जिससे आम लोग परिचित न हों, गति को निर्बाध रूप से बनाए रखने में सहायक होता है, हो सकता है समूह में कुछ संगीत वादक भी हों, कार्यक्रम में उनकी देन बहुमूल्य हो सकती है।

इसके अतिरिक्त, डमरुओं, झुनझुनों, घंटियों, तुरहियों, सीटियों तथा चीखने-चिल्लाने जैसी आवाज निकालने वाले उपकरणों का संग्रह सदा उपलब्ध होना चाहिए। इनमें से बहुत से उपकरण स्थानीय बाजार से लिए जा सकते हैं अथवा कक्षा में बनाए जा सकते हैं। यदि खरीदने की आवश्यकता हो तो संयोजक को धन की व्यवस्था के लिए पहले से कह देना चाहिए।

यदि नेता, कठपुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक के लिए नियमित रूप से प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन करता है तो उसे साधारण औजार, सिलाई सामग्री तथा प्रशिक्षणार्थियों की रुचि बढ़ाने के लिए कुछ चुनी हुई पुतलियों की आवश्यकता हो सकती है।

7. स्थान की आवश्यकता

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के लिए कम से कम दो कमरे होने चाहिए। एक कमरे में कुर्सियां और मेजें हों, जो आवश्यकतानुसार अपनी जगह से हटाई जा सकें। इस कमरे का उपयोग पुतली निर्माण के लिए किया जा सकता है। दूसरा कमरा पहले से बड़ा हो, जिसमें केवल कुर्सियां हों और जो सृजनात्मक नाटक संबंधी कार्य तथा मंच स्थापित करने के काम आए। ये कमरे अलग-अलग हों और यदि संभव हो, तो एक-दूसरे के निकट हों।

एक से अधिक दल होने पर अधिक स्थान की आवश्यकता हो सकती है ताकि प्रत्येक दल अपने नाटक की रचना तथा उसका पूर्वाभ्यास अलग से कर सके। रंगमंचों से युक्त, बड़े सभा भवन के उपयोग से जहां तक संभव हो, बचना चाहिए, क्योंकि उनमें घनिष्ठता का वातावरण नहीं बन पाता जो समूह के काम के लिए आवश्यक है। यदि कक्षा सत्रों के बीच कमरों को ताला लगाना संभव न हो, तो सामग्री आदि संभालकर रखने के लिए अलमारियों आदि का होना भी आवश्यक है।

8. एकांतता

किसी भी सृजनात्मक कार्य के लिए ऐसी जगह का होना आवश्यक है जहां छात्र, बिना किसी बाधा के, एकाग्रचित्त होकर काम कर सकें। सृजनात्मक नाटक तथा पुतली नाट्यों की तैयारी के लिए यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। केवल यह जानने के लिए कि अंदर क्या हो रहा है, किसी को प्रवेश की अनुमति तब तक नहीं दी जानी चाहिए जब तक कि उनकी उपस्थिति छात्रों के काम में बाधक न बनती हो। अनुचरों तथा स्टाफ के सदस्यों को भी बिना किसी कारण कक्षा में जाने से रोकना चाहिए। दरवाजे का खुलना अथवा एक व्यक्ति का प्रवेश भी समूह की तल्लीनता भंग कर सकता है। विशेषकर तब जब वे किसी कहानी का अभिनय कर रहे हों अथवा कठपुतली नर्तन के संबंध में हस्त प्रयोग में व्यस्त हों। यद्यपि पुतलियां बनाते समय तल्लीनता आवश्यक नहीं किंतु दर्शक उस समय भी उल्टे-सीधे प्रश्न पूछने लगते हैं। एकांतता बहुत महत्वपूर्ण है, इसे बनाए रखने के लिए, संयोजक की स्वीकृति से ठोस कदम उठाने भी अनुचित न होंगे।

2

कठपुतली नर्तन

क. ऐतिहासिक टिप्पणियां

पुतली इतिहासकारों का कहना है कि लगभग 200 वर्ष पूर्व, प्राचीन भारत में, थियेटर के रूप में केवल पुतली थियेटर ही प्रचलित थे। इन प्रारंभिक पुतली प्रदर्शनों में अधिकतर महान राजाओं, राजकुमारों तथा वीरों की गाथाओं के वर्णन के साथ ही राजनीतिक व्यंग्य भी दर्शाए जाते थे, जो अत्यंत लोकप्रिय थे। उस समय लोगों को उन प्रदर्शनों पर तत्कालीन निरंकुश शासकों के हाथों अपनी जान गंवाने का भय नहीं था। राजनीतिक व्यंग्यों के प्रदर्शनों की परंपरा मुगलों के आने तक चलती रही। चूंकि मुगल बादशाह इस प्रकार के उपहास को सहन करने के लिए तैयार नहीं थे अतः इनके स्थान पर, राजाओं तशा वीरों की कहानियां और धार्मिक कथाओं तक ही विषय सीमित रह गए।

इन प्रदर्शनों का धार्मिक पहलू विशेष रूप से दक्षिण भारत में विकसित हुआ जहां महाशिवरात्रि में, भगवान शिव की पूजा के अवसर पर, छाया पुतलियों द्वारा महाभारत तथा रामायण की कहानियों का नाट्य प्रदर्शन प्रस्तुत किया जाता था। आज भी आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु तथा उड़ीसा में पारंपरिक छाया पुतलियों के नर्तकों के ऐसे परिवार मौजूद हैं, जो इन नाटकों के अभिनय प्रस्तुत करते हैं। ये पुतलियां चमड़े से बनाई जाती हैं। इनमें बारीकी से छेद कर रंगा जाता है। ये काफी बड़ी होती हैं किंतु इनका वास्तविक आकार प्रादेशिक परंपरा तथा पात्र विशेष पर निर्भर करता है। उदाहरण के तौर पर, रावण जैसे दस मुखों वाले भयंकर असुर नृप की पुतली चार फुट लंबी हो सकती है। दो बल्लियों के बीच कसा हुआ मलमल का बड़ा पर्दा, जो पीछे से प्रकाशित हो, रंगमंच बन जाता है, जिस पर रंगीन तथा काली और सफेद पुतलियां अपना अभिनय दिखाती हैं।

भारत में पारंपरिक पुतलियों की कई अन्य किस्में भी हैं। आंध्र प्रदेश की 'बोम्मल अत्तम' नामक सुंदर वेशभूषा से सुसज्जित पुतलियां धागों से संचालित होती हैं। पुतलियों के धागे चक्राकार लकड़ी तथा कपड़े से जोड़े जाते हैं जिन्हें नर्तक के सिर पर रखा जाता है ताकि वह पुतलियों के हाथों, बाजुओं तथा टांगों को सक्रिय बनाने वाले धागों का स्वतंत्रता से संचालन कर सके। धागों

से संचालित आकर्षक पुतलियां, कर्नाटक और केरल में भी मिलती हैं जिन्हें क्रमशः यक्षगान तथा कथकली लोक नृत्य शैलियों के अनुसार बनाया जाता है। जिनके सिर का पहनावा तथा वेशभूषा अत्यंत आकर्षक होती है। राजस्थानी पुतलियों के विपरीत इनकी टांगें एंव पांव भी होते हैं। राजस्थान में भी पुतलियां धागों से संचालित की जाती हैं, किंतु वे आकार में छोटी होती हैं और उनका कद 20'' से 24'' तक होता है। पुतलियों की यह किस्म भारत में प्राचीनतम मानी जाती है। इनके सिर नक्काशी की हुई लकड़ी के बने होते हैं तथा धड़ और बाजू अलग से लगाए जाते हैं। इनमें बहुत से पात्रों की टांगें नहीं होतीं। शब्द उच्चारण की व्यवस्था भी योद्धाओं, नर्तकों, बाजीगरों तथा अन्य मनोरंजन कर्ताओं जैसे कुछ विशेष पात्रों के लिए ही होती है। इनके लिए लकड़ी के नियामक का प्रयोग नहीं किया जाता क्योंकि इन पुतलियों के साथ दो धागे लगाए जाते हैं जिन्हें उंगलियों से चलाया जाता है। स्त्री और पुरुष, दोनों ही पूरा लंबा लहंगा पहनते हैं। इन पुतलियों की वेशभूषा बादशाह, शाहजहां के दरबारियों की वेशभूषा से मिलती-जुलती होती है। पुतलियों के अधिकतर नर्तक, तत्कालीन विख्यात योद्धा, 'अमर सिंह राठौर' की जीवनी पर आधारित नाटक का प्रयोग करते हैं। पश्चिमी बंगाल में बड़ी-बड़ी दंड पुतलियों का प्रयोग किया जाता है। ये प्रायः चार फुट ऊंची होती हैं। बांस की लकड़ी को आधार बनाकर इन्हें सहारा दिया जाता है और उसे नर्तक की कमर से बंधे एक बड़े बांस में फंसा दिया जाता है। इन पुतलियों के पांव नहीं बनाए जाते क्योंकि इनका निचला भाग दिखाई नहीं देता। वास्तव में इनका दो तिहाई भाग ही दिखाई देता है। कुछ पुतलियों में बाजुओं को दंडों से संचालित किया जाता है तथा कुछ अन्य में यंत्रों से। दोनों ही स्थितियों में गति सीमित होती है।

पड़ोसी देश श्रीलंका में, तीन से चार फुट लंबी पारंपरिक पुतलियां मिलती हैं जिनका प्रयोग बुद्ध की जीवनी प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। वे लकड़ी से बनाई जाती हैं तथा उनका संचालन थोड़ा मुश्किल होता है। कई पात्रों की टांगें नहीं होतीं, अतः गति बाजू क्रियाओं तक ही सीमित रहती है। अन्य पात्रों की टांगें होती हैं। दो उत्साही नर्तक प्रदर्शन की शुरुआत करते हैं तथा एक प्रलोभिका नर्तकी होती है जो कंधों और ग्रीवा को दोनों ओर इस तरह घुमाती है मानो दक्षिण भारत तथा सिंहल में प्रचलित नृत्यों का सूक्ष्म अनुकरण कर रही हो।

ये सभी पारंपरिक प्रदर्शन, गान एवं वाद्य संगीत का प्रयोग करते हैं जिसे ढोलक पर बजाया जाता है और जिसमें मंजीरे, ताल-वाद्य और कभी-कभी बांसुरी की संगत भी रहती है। संगीत प्रदर्शन का अभिन्न अंग है और गीतों के शब्द विशेष रूप से दर्शकों की रोचकता को बढ़ाते हैं। राजस्थान के पुतली नर्तक, चरमराहट पैदा करने वाले 'रीड वाद्य' का प्रयोग करते हैं जो मिस्टर पंच[1] के वाद्य से मिलता-जुलता है। इसमें से विविध प्रकार की ध्वनियां निकाली जा सकती हैं जिनकी व्याख्या गायक अपने गीतों में करते हैं।

---

1. हमारे विदूषक से मिलता-जुलता पारंपरिक अंग्रेजी पुतली पात्र।

विश्व के कई अन्य भागों में, कठपुतली लोक नर्तन के जीवंत रूप मिलते हैं। उत्तरी फ्रांस, बैलजियम तथा सिस्ली में बड़ी-बड़ी दंड पुतलियां हैं, जो शौर्य एवं साहस की गाथाओं को प्रदर्शित करती हैं जिनमें धार्मिक (ईसाई) युद्धों में जौहर दिखाने वाले शूरवीरों की कहानियां प्रमुख होती हैं। सिस्ली के नाटकों का एक लंबा सिलसिला, अरिओस्टो के 'आरलैंडो फ्यूरासो' पर आधारित है जिनमें योद्धा ठोक पीट कर बनाए कवचों, मखमली अंगरखों तथा कलगियों को पहने, लोहे की मजबूत तलवारों तथा नक्काशीदार ढालों के साथ युद्ध करते हैं। कुछ सुंदर स्त्रियां तथा कभी-कभी एक राक्षस प्रविष्ट होकर इन दृश्यों में विविधता लाने में सहायक होते हैं।

तुर्की में छाया पुतलियों के नाटकों का एक लंबा इतिहास है। ये नाटक आज भी कभी-कभी देखे जा सकते हैं। 'कराग्यूज' तथा 'हाजीवत' इनके प्रधान पात्र होते हैं तथा प्राचीन ओतोमन साम्राज्य की भिन्न-भिन्न राष्ट्रजातियों के लोग सहायक पात्रों की भूमिका निभाते हैं। इन्हीं पात्रों की हास्य जनक चेष्टाएं यूनानी छाया रंगमंच पर कुछ भिन्न रूप में देखने को मिलती हैं। यहां पर नाटक यूनानी तुर्की युद्धों की घटनाओं पर आधारित होते हैं जिनमें यूनानी सैनिक योद्धाओं को प्रस्तुत किया जाता है।

दुर्भाग्य से वर्तमान काल में इन पुतली मंचों की लोकप्रियता प्रायः समाप्त हो गई है। मनोविनोद के अन्य साधनों, विशेष रूप से सिनेमा की उपलब्धि के पश्चात दर्शक इनमें रुचि नहीं लेते। चूंकि अधिकतर नर्तक परंपरावादी हैं, वे अपने कार्य को आधुनिक समय की मांग के अनुकूल नहीं बना पाए हैं। इन प्रदर्शनों में नई नाटकीय सामग्री का प्रायः अभाव है जो आधुनिक दर्शक को बेहद पुराने तथा घिसे-पिटे लगते हैं। किंतु अब भी बहुत से ऐसे लोग हैं जिन्हें लोक-कलाओं से लगाव है और जो इन पारंपरिक पुतली एवं लोक नाटकों की लोकप्रियता के कम होने से चिंतित हैं। वे उन्हें वित्तीय सहायता देने, उन्हें पुनः जीवित करने के लिए उनके निर्माताओं के साथ काम करने, समय-समय पर प्रदर्शनों को प्रस्तुत करने, लोक कला समितियां बनाने तथा संबंधित पुस्तकें प्रकाशित करने के कई प्रयास कर रहे हैं। इनमें अधिकतर प्रयास सफल रहे हैं, यद्यपि उनकी प्रक्रिया धीमी रही है। 'उनीमा' अर्थात 'यूनियन इंटरनेशनल दी ला मेरियनेते' पारंपरिक कलाकारों का विश्वभर में प्रचार कर रहा है। श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने भी संगीत नाटक अकादमी के माध्यम से इन पारंपरिक कठपुतली नर्तकों के लिए बहुत काम किया है।

जावा तथा बाली जैसे कुछ देशों में मनोविनोद के नए साधनों के बावजूद लोकमंच के विविध रूपों में लोगों की रुचि बनी हुई है। छाया नाटक अब भी खेले जाते हैं और जनता उनका आनन्द लेती है, यद्यपि वे अक्सर ही खेले नहीं जाते। चीन ने कठपुतली नर्तन के पारंपरिक रूपों को नए ढंग से प्रस्तुत करने के उपाय ढूंढ़ लिए हैं। यहां परंपरानुसार सुंदर ढंग से रंगी एवं छेदी हुई आकर्षक वेशभूषा से सुसज्जित छाया पुतलियों तथा कुशलता से संचालित हस्त पुतलियों और साथ ही पहले जमाने के घुमक्कड़ प्रदर्शकों द्वारा प्रयुक्त दंड पुतलियों को वर्तमान शासन के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में, धागों से संचालित आधुनिकतम पुतलियों के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

जापान में बनराकु रंगमंच ने पारंपरिक होते हुए भी सदैव परिपूर्णता का परिचय दिया है जिनका पारंपरिक पुतली प्रदर्शनों में प्रायः अभाव मिलता है। इस रंगमंच की पुतलियां तीन से चार फुट लंबी तथा बहुमूल्य वस्त्रों से सुसज्जित होती हैं। उनके लिए कुशल शब्दोच्चारण की व्यवस्था भी होती है। कुछ पुतलियों की भौंहें, आंखें, मुंह तथा उंगलियों के जोड़ भी गतिशील होते हैं। प्रत्येक पुतली के एक से तीन तक संचालक होते हैं जिन्हें दर्शक भली-भांति देख सकते हैं। पहला संचालक सुंदर कसीदाकारी की हुई पोशाक पहनता है, किंतु अन्य दोनों कंटोप के साथ काले या भूरे वस्त्र पहनते हैं। मंच इतना बड़ा होता है कि मनुष्य पात्रों के लिए भी पर्याप्त हो। उसे रमणीय तथा आकर्षक बनाने के सभी प्रयास किए जाते हैं। संचालकों, सेमिसेन संगीत (जापानी बैंजो) तथा गाई जाने वाली कहानियों में संपूर्ण तालमेल रहता है, जो वर्षों के लंबे प्रशिक्षण का परिणाम होता है। यद्यपि आधुनिक दर्शकों के लिए ये प्रदर्शन अत्यंत आकर्षक हैं, फिर भी बनराकु के समाप्त हो जाने का भय बराबर बना हुआ है। कारण यह है कि अच्छा नर्तक बनने के लिए जिस दीर्घ प्रशिक्षण की आवश्यकता है, उसे नई पीढ़ी के युवक ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं हैं। आशा की जानी चाहिए कि इस अतीव मनोहर एवं अद्भुत कला को उद्योगपति की ओर जाने से रोका जा सकेगा। अब पिता पुत्र की एक टीम ने, बनराकु में नई तकनीक का समावेश किया है। वे पहियों से युक्त एक स्टूल का प्रयोग करते हैं जिस पर एक ही संचालक बैठता है, जो पुतली के जूते पहन स्वयं ही बनराकु पुतली का संचालन करता है।

ख. समकालीन कठपुतली नर्तन

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दौर में 'केफ चाट नायर' के छाया नाटकों तथा पैरिस के 'ले पेटिट' रंगमंच ने दंड पुतलियों के साथ किए जाने वाले प्रयोगों से बीसवीं शताब्दी में मनोरंजन के नवीनतम उपकरणों के स्वरूप का आभास मिल गया था, चाट नायर में कवि, संगीतज्ञ तथा कलाकार एकत्रित होते थे। हेनरी रिवीरे कटी हुई आकृतियों को प्रकाशित छाया पट पर प्रदर्शित करने लगे थे और चाट नायर की छोटी-सी रंगशाला शीघ्र ही काव्य एवं प्रतिभा के आकर्षक प्रदर्शन का केंद्र बन गई जहां कलात्मक ढंग से बनी छाया आकृतियों तथा मनोरम दृश्यों को प्रस्तुत किया जाता था। ले पेटिट रंगमंच उच्चकोटि की रचनाओं के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए विख्यात हो गया था। उनको देखने के लिए जो सुप्रसिद्ध लेखक उपस्थित होते थे उनमें अनातोले फ्रांस भी थे, जो हमारे लिए पुतली रंगमंच के सिद्धांत पर कुछ आलोचनात्मक टिप्पणियां छोड़ गए हैं जिनमें मानव पात्रों और पुतली रंगमंच के अंतर का विश्लेषण किया गया है।

इंगलैंड में गार्डन क्रेग ने अपनी रचनाओं में कठपुतली रंगमंच पर गंभीर चिंतन की आवश्यकता पर बल देते हुए पुतली पात्रों की विशेष उपयोगिता का वर्णन किया है। क्रेग के सिद्धांतों की सहायता से प्रथम विश्व युद्ध के आसपास कलाकारों, संगीतज्ञों तथा लेखकों ने यूरोप और अमेरिका में कठपुतली नर्तन की कला में रुचि को पुनः जागृत किया।

यह पुनरुत्थान किसी एक देश तक सीमित न रह कर दूर दराज के इलाकों तक प्रभावी हुआ। रूस में एक चित्रकार, नोना एफीमोवा ने, अपने मूर्तिकार पति आईवन की सहायता से पुतली रंगमंच की स्थापना की। टोनी सर्ग इंगलैंड के अपने स्टूडियो में कुछ पुतलियों का निर्माण एवं प्रयोग करने के बाद अमेरिका चले आए। न्यूयार्क में उन्होंने अपने स्टूडियो में पुतलियों का प्रदर्शन करके लोगों को आकर्षित किया और इससे उन्हें एक संपूर्ण पुतली नाटक तैयार करने का प्रोत्साहन मिला। तब से लेकर, 1942 में टोनी सर्ग के देहांत होने तक, उसकी कंपनी प्रतिवर्ष दूर-दूर तक यात्रा करती रही और देश के स्कूली बच्चे धागों से संचालित पुतली प्रदर्शनों का आनंद लेते रहे। तत्कालीन अमेरिकन कठपुतली नर्तन कला पर भी उसका सर्वाधिक प्रभाव पड़ा। हालांकि एलिन वॉन वाकनबर्ग जैसे अन्य लोग भी इस संबंध में प्रारंभिक प्रयोग करने वालों में थे। चेकोस्लोवाकिया में कठपुतली नर्तन की परंपरा 200 वर्ष पुरानी है। जिन दिनों यह देश आस्ट्रिया के अधीन था, कठपुतली नर्तकों ने देश की भाषा (जिसका प्रयोग निषिद्ध था) तथा लोक साहित्य को जीवित रखने में सहयोग दिया। किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कठपुतली नर्तन की कला, देशव्यापी मनोरंजन का साधन बन गई। प्रायः प्रत्येक सोकोल (व्यायाम एवं मनोविनोद के अन्य साधनों का केंद्र) के पास अपना पुतली रंगमंच था जहां विभिन्न व्यवसायों से जुड़े प्रौढ़ व्यक्ति समूह बनाकर, बच्चों के लिए खेल प्रस्तुत करते थे। द्वितीय महायुद्ध के समय कला प्रेमियों की अनेक ऐसी रंगशालाएं थीं जहां उत्कृष्ट प्रदर्शन प्रस्तुत किए जाते थे। इनमें सभी प्रकार की आधुनिक दृश्यावलियों तथा प्रकाशन की व्यवस्था थी जैसा कि पादक्षेपणी, ऊपर उठाया जा सकने वाला रंगमंच तथा मेघाभास देने वाला यंत्र। कुछ व्यावसायिक भ्रमणशील कंपनियां भी थीं और जोसफ स्कुपा का नाम सारे यूरोप में प्रसिद्ध हो गया था।

जर्मनी में हेरो सीगेल तथा अन्य बहुत से लोग, इटली में विट्टोरियो पादरेका, इंग्लैंड में वाल्डो तथा मुरियेल लानचेस्टर, वाल्टर तथा विनिफ्रेड विल्किसन, फ्रांस में मारसेल टैंपोरल ने पुतली रंगमंच के विकास में योग दिया। समस्त यूरोप तथा उत्तरी अमेरिका, मैक्सिको तथा दक्षिणी अमेरिका में ऐसे सैकड़ों लोगों के नाम गिनवाए जा सकते हैं जिन्होंने कठपुतली नर्तन कला के पुनरुत्थान में सहायता दी।

यद्यपि अंग्रेजी पुंच तथा जूडी शो जैसे कुछ पारंपरिक रूप अब भी प्रचलित हैं लेकिन पश्चिम में समकालीन कठपुतली नर्तन नाना रूपों में विकसित हुआ है। पुतलियों का प्रयोग विज्ञापनों में किया जाता है और इस प्रकार वे शिक्षण के सृजनात्मक कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण अंग बन गई हैं। दूरदर्शन के बहुत से कार्यक्रमों में उन्हें शामिल किया जाता है। विशेष रूप से बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक रोगों के इलाज के लिए उनका प्रयोग किया जाता है। प्रारंभ से ही व्यावसायिक गश्ती कंपनियां, जगह-जगह उनके खेल का प्रदर्शन करती हैं। बालक तथा बालिका स्काउटों के समूहों समेत अनेक कला प्रेमी कठपुतलियों के खेल को मनोविनोद के उत्कृष्ट साधन मान कर इसका व्यापक प्रयोग करते हैं। अमेरिका में एक पुरुष (अथवा स्त्री) द्वारा सभी दर्शकों के समक्ष किए गए

नए ढंग के विविध कार्यक्रम नाईट क्लब के मनोरंजन के रूप में सर्वप्रिय हो गए। द्वितीय महायुद्ध के समय कठपुतली नर्तकों में से बहुतों ने युद्ध के अग्रिम मोर्चे पर तैनात सैनिकों के लिए प्रदर्शन प्रस्तुत किए। संगीत प्रायः सदा से ही पाश्चात्य पुतली प्रदर्शनों का अभिन्न अंग रहा है और इसके साथ पुतलियों ने अद्भुत प्रस्तुति क्षमता का परिचय दिया है। स्ट्रविंस्की की दुखांत कोरल रचना, 'ओडीपस रेक्स' को 1933 में फिलेडेलफिया के सिंफनी आरकेस्ट्रा ने न्यूयार्क में प्रस्तुत किया था और इसमें दस फुट ऊंची पुतलियों ने मुख्य पात्रों की भूमिका को निभाया था, जिन्हें कथानक की क्रिया को मूक अभिनय द्वारा प्रदर्शित करने के लिए प्रयुक्त किया गया था। डेटराइट में प्रतिवर्ष सिंफनी आर्केस्ट्रा द्वारा किसी आर्केस्ट्रा की कृति को प्रस्तुत किया जाता है जिसमें बड़ी-बड़ी पुतलियों से अभिनय करवाया जाता है। ये कृतियां डेटराइट इंस्टीट्यूशन आफ आर्ट्स के रंगमंच विभाग के सहयोग से प्रस्तुत की जाती हैं। कनाडा, केलिफोर्निया एवं अमेरिका में बहुत से स्थानों पर ओपेरा तथा संगीत की अन्य विधाओं के साथ पुतलियों के छोटे-छोटे व्याख्यात्मक प्रदर्शन प्रस्तुत किए गए हैं।

बीसवीं शताब्दी में, पुतली रंगमंच में हुए विकास का यहां पूर्ण रूप से विवरण देना संभव नहीं है, किंतु हमने इसकी सजीवता एवं कार्यशीलता को समझाने का प्रयत्न अवश्य किया है।

आजकल पुतली रंगमंच को और भी अधिक सुविधाएं मिल रही हैं, विशेषकर पूर्वी यूरोप में, जहां इसे वित्तीय सहायता भी मिल रही है। यहां सरकारी रंगमंचों को भी स्थापित किया गया है, जिनमें काफी प्रयोग किए गए हैं तथा एक विशिष्ट कला के रूप में पुतली रंगमंच की क्षमताओं को प्रदर्शित किया गया है। बहुत से प्रदर्शन, बड़े स्तर पर किए जाते हैं और उनमें अधिकतर तकनीकी उपकरणों का प्रयोग होता है। कुछ नाटकों में मानव एवं पुतली पात्र एक साथ रंगमंच पर उपस्थित होते हैं। पुतलियों की रूपरेखा में भी अंतर आ गया है और अब उनसे यथार्थ के स्थान पर परंपरागत शैली में अथवा अमूर्त व्याख्या करवाई जाती है। उनको संचालित करने के लिए भी सभी प्रकार के विलक्षण यंत्रों की रचना की गई है। पुतली रंगमंच के लिए, विशेष प्रकार का संगीत तैयार किया जाने लगा है तथा विशेष नाटक लिखे जाने लगे हैं। उनका आलोचनात्मक मूल्यांकन भी उतना ही सजीव एवं व्यापक होता है जितना कि मानव पात्रों के रंगमंच का। ये सभी रचनाएं सफल नहीं होतीं, क्योंकि उनमें वे कुछ मानव पात्रों के रंगमंच के लिए अधिक उपयुक्त होती हैं अथवा तकनीकी रूप से अधिक व्यापक किंतु वे सब मिलकर पुतलियों के ऐसे कार्यक्रम का परिचय देती हैं, जो उन गतिविधियों से कहीं अधिक विस्तृत है, जिससे विश्व पहले परिचित था।

पूर्वी यूरोप में हुए इस विकास की कुछ झलक भारत में भी मिलती है, क्योंकि कुछ भारतीयों ने वहां अध्ययन किया है। बाहर से सीखी गई तकनीकों के अनुसार अभ्यास करना भारत के लिए सदा उपयुक्त नहीं हो सकता, किंतु हमारी कठपुतली नर्तन कला में नवजीवन का संचार हो रहा है, जिसे युवक समूहों ने विशेष रूप से आगे बढ़ाया है। इनमें से कुछ ने नृत्य एवं नाटक का प्रशिक्षण प्राप्त कर रखा है। चेकोस्लोवाकिया, रूस, हालैंड, स्वीडन, फ्रांस, हंगरी, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, मिस्र

तथा अमेरिका से आने वाली पुतली कंपनियों से भी भारत में इस कला को काफी प्रोत्साहन मिला है।

पुतली थियेटर के विकास के प्रति विश्व भर में कठपुतली नर्तकों की रुचि बढ़ रही है तथा 1929 में स्थापित अंतर्राष्ट्रीय संगठन, 'यू. एन. आई. एम. ए.' (यूनियन इंटरनेशनल दे मेरियनेटेस) की स्थापना की गई है। कई स्थानों पर अंतर्राष्ट्रीय उत्सवों को आयोजित किया जा रहा है, जहां बहुत से देशों के प्रदर्शनों को प्रस्तुत किया जाता है। कठपुतली रंगमंच संसार के भिन्न-भिन्न देशों के बीच महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कड़ी का काम कर रहा है और ऐसा प्रतीत होता है कि कठपुतलियां सर्वप्रियता एवं उपयोगिता के नए चरण में प्रवेश करने लगी हैं।

ग. नाट्य कला के रूप में कठपुतली नर्तन

1. पुतली रंगमंच की अनूठी विशेषता

समकालीन प्रयोगों के फलस्वरूप इस बात की धारणा बढ़ती जा रही है कि पुतलियां रंगमंच के एक ऐसे रूप को जन्म दे सकती हैं, जो मानव पात्रों के रंगमंच से सर्वथा भिन्न होगा। कई वर्ष पूर्व 'सेरजाइ ओवरात्सव' इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि मानव पात्र के रूप में वे दर्शकों पर जो प्रभाव डाल सकते थे, पुतलियों की सहायता से डाला जाने वाला भाव बिल्कुल भिन्न प्रकार का था। तब से वे पूरे प्रयास से मास्को में केंद्रीय सरकारी पुतली रंगमंच को विकसित करने में लगे हैं और इससे विश्व के बहुत से अन्य भाग भी प्रभावित हुए हैं।

2. पुतली पात्र का स्वरूप

पुतली रंगमंचों की अद्वितीय विशेषता पुतली पात्रों के स्वरूप पर निर्भर करती है। उनकी रूपरेखा एवं कल्पना कलाकार करता है। वे उसकी कल्पना में जन्म लेते हैं और विभिन्न वस्तुओं में साकार होते हैं। वे समकालीन कला के कई पहलुओं से प्रभावित होते हैं क्योंकि पुतलियों को रेखांकित करने वाले श्रेष्ठ कलाकार भी, भावाभिव्यक्ति के लिए समकालीन विधियों का प्रयोग करते हैं। चेहरों को साकार करने के लिए प्रायः सरल (अथवा पारंपरिक) विधि को अपनाया जाता है। कभी-कभी अति वर्णन तथा मिथ्या वर्णन का प्रयोग भी किया जाता है और कई पुतलियां रूपरेखा की दृष्टि से काफी अमूर्त होती हैं। अन्य रूपांकनकार उनका वास्तविक रूप उभारने का प्रयास करते हैं, अतः पुतलियों की रूपरेखा वास्तविक से लेकर काल्पनिक तक हो सकती है। इसके अतिरिक्त पुतलियों की गति को नियमित करने की भी बहुत सी विधियां हैं, उन्हें हाथ पर रखकर, पहली उंगली को सिर में डाल देते हैं और पुतली के हाथों का संचालन अंगूठे और छोटी (अथवा तीसरी) उंगली से किया जाता है, उन्हें एक दंड पर भी बनाया जा सकता है। हो सकता है वे जोड़दार हों जिनका संचालन धागों को लकड़ी के नियामक से बांध कर किया जाता है। हाथ और दंड का संयुक्त रूप से भी प्रयोग हो सकता है, जिसमें पुतली को संचालक के हाथ के ऊपर रखा जाता है किंतु उसके बाजू लंबे होते

हैं और दंडों से नियंत्रित होते हैं अथवा उन्हें छाया पुतलियों के रूप में, पीछे से प्रकाशित छाया पट पर प्रदर्शित किया जाता है। इनमें प्रत्येक पुतली की गति क्षमता भिन्न होती है।

3. सामग्री

पुतली पात्रों का डिजाइन उस सामग्री पर भी निर्भर करता है, जिससे वे बनाई जाती हैं। जैसे मूर्तिकार, मनुष्य अथवा पशु की आकृति के निर्माण के लिए लकड़ी, पत्थर अथवा धातु का प्रयोग करता है, उसी प्रकार पुतली बनाने वाला भी तार, लकड़ी, कागज, वस्त्र तथा प्राकृतिक पदार्थ जैसे कि वृक्षों की शाखाओं, प्लास्टिक, चमड़ा एवं अन्य वस्तुओं का प्रयोग करता है। कई बार कुछ विशेष सामग्री पुतली पात्र की अजीबो गरीब कल्पना एवं हास्य जैसे अभीष्ट गुणों की अभिव्यक्ति में सहायक होती है।

4. विशिष्ट कठपुतली पात्र

मनुष्यों के अतिरिक्त, पुतली पात्र, फर्नीचर, भवनों जैसे निर्जीव पदार्थों का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। मानव पात्रों द्वारा दर्शाए जाने की अपेक्षा वृक्षों, फूलों, पक्षियों, कीड़ों, मछलियों तथा पशुओं को पुतली मंच के माध्यम से दर्शाना अधिक सफल रहता है। नक्षत्र तथा अंतरिक्ष युग के सभी अद्भुत यंत्र पुतली पात्र हो सकते हैं और वे राक्षस, अनाड़ी व्यक्ति तथा भीमकाय दैत्यों जैसे कितने ही काल्पनिक जीव भी हो सकते हैं। असल में पुतली पात्रों की विविधता उनके निर्माताओं की कल्पनाशक्ति पर निर्भर करती है।

5. कठपुतली नाटक

कठपुतलियों की नाट्य क्रीड़ा के लिए कहानी अथवा कथानक का चुनाव करते समय इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि "क्या यह विचार नाटक के किसी अन्य रूप की अपेक्षा पुतलियों द्वारा अधिक अच्छी तरह प्रस्तुत किया जा सकता है ?" पुतली निर्देशकों के समक्ष व्यंग्य, परिहास एवं कल्पना शक्ति का संसार खुला पड़ा है। पुतली रंगमंच आम पात्रों के लिए उपयुक्त तो है ही, सामाजिक तथा राजनीतिक विषयों पर विशेष दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने के लिए भी इसका प्रयोग अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है, क्योंकि पुतली पात्रों से अक्सर ऐसी बातें कहलवाई जा सकती हैं जो मानव पात्र नहीं कह सकते। पुतली नाटक में आम आदमी असाधारण साहसिक कार्यों की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं अथवा ऐसे पशुओं एवं अन्य प्राणियों के साथ तालमेल स्थापित कर सकते हैं जिनका प्रस्तुतीकरण मानव पात्रों के माध्यम से कठिन होगा।

पुतली रंगमंच को मनुष्यों के रंगमंच के लघु रूप में प्रस्तुत करने से बेहतर होगा कि हम डिजाइन के उन विशेष गुणों, गति तथा पात्रों की किस्मों का लाभ उठाएं जो पुतलियों द्वारा प्रस्तुतीकरण के लिए उपयुक्त हैं। एक अच्छे पुतली प्रदर्शन को मानव पात्रों के प्रदर्शन के लिए

आवश्यक या उससे भी अधिक परिश्रम की आवश्यकता होती है। अतः यदि पुतली रंगमंच का अनुभव, बड़े रंगमंच के अनुभव से भिन्न हो तो वह अधिक लाभदायक होगा।

तीसरे अध्याय में कहानी के रचनात्मक पहलुओं का वर्णन किया गया है। इनका उपयोग पुतली प्रदर्शनों के साथ-साथ सृजनात्मक नाटकों के लिए भी किया जा सकता है। पुतलियों के समूह का निर्माण किसी कहानी विशेष को ध्यान में रखे बिना ही किया जाता है। ये दंडों के साथ बंधे कागज के मुखौटों का समूह हो सकता है, नारियल के कलछुलों से बने कुछ पात्र अथवा विभिन्न प्राकृतिक रूप हो सकते हैं, जैसे कि ताड़ के पत्ते, सूखे हुए बीज कोष, शाखाएं तथा ऐसी 'पुष्प कन्याएं' जिनके सिर, बोतल में कलियों के गुच्छे लगाकर और वस्त्र पत्तों के बनाए गए हों। इनमें से प्रत्येक समूह के लिए पात्रों के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए मौलिक कहानी की रचना की जा सकती है।

ऊपर वर्णित समूहों के अनुसार यदि सभी पात्र गैर मानव हों तो प्रस्तुत पौधों और फलों के दृष्टिकोण से ही कहानी की रचना की जानी चाहिए। उनका विषय उनके समक्ष आने वाली कठिनाइयां अथवा वे संघर्ष हो सकते हैं, जो मनुष्य की विध्वंसक प्रवृतियां अथवा तूफान, बाढ़ या अकाल जैसी प्राकृतिक विपत्तियां पैदा करती हैं। मानव विचारों से अलग दृष्टिकोण अपनाकर पुतली रंगमंच से अपनी विशिष्टता कायम की जा सकती है। रंगमंच से इस प्रकार पुतलियों की रचना से गुणों पर आधारित नाटकों के प्रदर्शन तक, वास्तविक सृजनात्मक कार्य को करने का अवसर मिलता है।

इस पुस्तिका में आरंभ से अंत तक नाटक के साथ-साथ पुतलियों को नाटक का माध्यम बना कर किसी कहानी को अभिनय और संवादों के साथ प्रस्तुत किए जाने पर बल दिया गया है। अक्सर, पुतलियों को अलग-अलग कार्यों के लिए प्रयुक्त किया जाता है। वे नाचती, गाती तथा कलाबाजी के कौशल दिखलाती हैं। पुतलियां दर्शकों का मनोरंजन तो अवश्य करती हैं परंतु जिन पात्रों की भूमिका वे निभाती हैं उनकी समस्याओं के समाधान के लिए समस्त कार्यकलापों के प्रति तालमेल स्थापित करने की अनुभूति को जुटा नहीं पातीं।

3

सृजनात्मक नाटक

इस अध्याय का उद्देश्य, सृजनात्मक नाटक के स्वरूप, बुनियादी तकनीकों तथा इसमें भाग लेने वालों के लिए उसकी उपयोगिताओं की व्याख्या करना है।

क. सृजनात्मक नाटक क्या है ?

सृजनात्मक नाटक, कहानी का नाटकीकरण तथा नाट्य क्रीड़ा जैसे शब्दों का प्रयोग अनौपचारिक नाटक के लिए किया जाता है। इन नाटकों की रचना, कल्पनाशील व्यक्ति के मार्गदर्शन में आशुरचित संवादों तथा क्रियाओं की सहायता से की जाती है। ये नाटक बच्चों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त हैं, लेकिन इनकी बुनियादी तकनीक औपचारिक व्यस्क नाटकों में भी लाभप्रद होती है।

अनौपचारिक नाटक, बच्चों की नाटकीय क्रीड़ा पर आधारित होते हैं, जो उनकी अभिव्यक्ति का स्वाभाविक साधन हैं। किसी व्यक्ति, मशीन, पशु आदि का स्वांग रचना या आप बीते अनुभवों को दोहराना ऐसी स्वाभाविक क्रिया होती है, जिसमें सभी बच्चे भाग लेते हैं। इस प्रकार क्रीड़ा का आरंभ और अंत कहीं भी हो सकता है। इसका कोई कथानक नहीं होता किंतु इसमें प्रभावी चरित्र-चित्रण उस समय देखने को मिलता है, जब बच्चे अपने से भिन्न, अन्य पात्र होने की कल्पना करते हैं।

ख. सृजनात्मक नाटक तथा औपचारिक नाटक

नाटकीय क्रीड़ा पर आधारित सृजनात्मक नाटक औपचारिक नाटक से बिल्कुल भिन्न होता है। औपचारिक नाटक वयस्कों के रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है। बच्चों को अक्सर औपचारिक नाटकों की प्रथा के अनुसार प्रशिक्षण दिया जाता है क्योंकि वे अपने बड़ों का अनुकरण भली-भांति कर सकते हैं। किंतु वयस्कों द्वारा निर्देशित नाटकों में, बच्चों को अपने विचार व्यक्त करने के अवसर नहीं मिलते और उन्हें इस अनुभव से विशेष लाभ नहीं होता। अधिकतर वे 'दिखावा' बन कर रह जाते हैं। प्रौढ़ोचित (औपचारिक) तथा बालोचित (सृजनात्मक) नाटकों के बुनियादी अंतरों का वर्णन नीचे दिया गया है।

सृजनात्मक नाटक	*औपचारिक नाटक*
1. इसमें रंगमंच नहीं होता। बच्चे उपलब्ध स्थान का आजादी से प्रयोग करते हैं। यही उनके खेलने की स्वाभाविक विधि है।	1. प्रस्तुतीकरण के लिए रंगमंच आवश्यक है।
2. क्रियाएं तथा संवाद दोनों आशुरचित होते हैं।	2. संवादों को बोलने से पहले याद किया जाता है लेकिन बच्चे अक्सर उन्हें समझ नहीं पाते।
3. सृजनात्मक नाटक में नेता बच्चों के साथ मिल कर काम करता है और उनका मार्गदर्शन भी करता है। वह उन्हें अपने विचार प्रकट करने के लिए उत्साहित करता है तथा नाटक उन्हीं विचारों पर आधारित होते हैं।	3. निर्देशक, प्रायः विशिष्ट निर्देश देता है, जो बच्चों की अपेक्षा प्रौढ़ विचारों के अधिक अनुरूप होते हैं।
4. वेषभूषा तथा अन्य सामग्री, सृजनात्मक नाटक के लिए अधिक महत्वपूर्ण नहीं होती, क्योंकि यथार्थ चरित्र-चित्रण; अंग संचालन, मूक अभिनय तथा आशुरचित संवादों पर निर्भर करता है। वस्त्रों के कुछ टुकड़े तथा थोड़े से पदार्थों का कभी-कभी प्रयोग किया जाता है किंतु इनके बिना भी काम चलाया जा सकता है।	4. संपूर्ण वेषभूषा तथा बहुत सी सामग्री प्रायः औपचारिक नाटक के आवश्यक अंग होते हैं। जो यथार्थ अभिव्यक्ति में सहायक न हो कर, अक्सर बाधक बन जाते हैं।
5. फर्नीचर को व्यवस्थित करके स्थल विशेष का संकेत दिया जा सकता है। उदाहरणतया एक मेज से पर्वत अथवा वृक्ष का संकेत दिया जा सकता है। चित्रित दृश्यों का प्रयोग बहुत कम होता है।	5. बहुत से नाटकों के लिए रंगमंच के अगले भाग में आवश्यक सामग्री का अक्सर पूर्ण प्रबंध रहता है।
6. नाटक खेलने और देखने वालों में कोई अंतर नहीं होता। अपनी क्रीड़ा में तल्लीन बच्चों को दर्शकों की जरूरत नहीं होती। सृजनात्मक नाटक में जब समूह के कुछ सदस्य दृश्य को प्रस्तुत करते हैं, तो अन्य सदस्य उसे देखते	6. औपचारिक नाटक में पात्र और दर्शक अलग-अलग रहते हैं तथा पात्र दर्शकों के लिए प्रदर्शन प्रस्तुत करते हैं।

हैं। किंतु अगले दृश्य में उनकी भूमिका उलट सकती है। पात्र, दर्शक बन जाते हैं और दर्शक, पात्र। वैसे भी दर्शक प्रायः ध्वनि आभास देकर, प्रदर्शन में भाग ले सकते हैं।

7. सृजनात्मक नाटक का उद्देश्य, बच्चों के लिए उपयोगी सृजनात्मक अनुभव जुटाना है। प्रत्येक नाट्य क्रीड़ा अपने आप में पूर्ण होती है लेकिन निर्देश देने के लिए उसमें बाधा नहीं डाली जाती। प्रत्येक नाट्य-क्रीड़ा की समाप्ति पर विचार-विनिमय होता है, जिसमें बच्चे तथा नेता अभिनय को सुधारने के लिए अपने सुझाव दे सकते हैं।

7. औपचारिक नाटक का उद्देश्य दर्शकों के लिए प्रदर्शन प्रस्तुत करना है। कुशल प्रदर्शन के लिए पूर्वाभ्यास किए जाते हैं जिनके बीच में निर्देशक कई निर्देश देता है।

बच्चों में निस्संदेह प्रदर्शन का चाव होता है और यदि कुछ समय के लिए उन्होंने मिल कर अभ्यास किया है और किसी नाट्य-क्रीड़ा को प्रस्तुत करने के लिए, उनमें आत्मविश्वास है तो कोई कारण नहीं कि वे अन्य बच्चों तथा माता-पिताओं की उपस्थिति में उसे प्रदर्शित न करें। यदि आवश्यकता हो तो नाट्य-क्रीड़ा को अधिक खुली जगह पर प्रस्तुत किया जा सकता है जहां अभिनय के लिए स्वछंद गति की वैसी सुविधा प्राप्त हो, जैसी कक्षा में उपलब्ध होती है। किंतु रंगमंच इसके लिए उपयुक्त स्थान नहीं होगा। तेरह-चौदह वर्ष की उम्र में ये बच्चे सृजनात्मक नाटक का काफी अनुभव प्राप्त कर लेते हैं। वे पात्रों तथा संवादों को अच्छी तरह समझने और अपने शरीर को भली-भांति नियंत्रित करने में निपुण हो जाते हैं। उनमें आत्मविश्वास की भावना आ जाती है और वे पूर्वलिखित औपचारिक नाटकों में भाग लेने तथा दर्शकों के सामने कुशल अभिनय का प्रदर्शन करने योग्य हो जाते हैं। इस प्रकार सृजनात्मक नाटक, औपचारिक नाटक की तैयारी का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है और इसमें प्रशिक्षित लोग, औपचारिक नाटक में भी उसी कल्पनाशक्ति का परिचय देते हैं, जो सृजनात्मक नाटक के प्रदर्शन में उनकी विशेषता मानी जाती है।

ग. बाल-नाटक तथा बाल-कला

सृजनात्मक नाटक में बच्चों के साथ काम करनेवालों के मतानुसार बच्चे जिस स्वाभाविक ढंग से अन्य पात्रों की भूमिका निभाते तथा भिन्न-भिन्न स्थितियों को अभिनय द्वारा प्रस्तुत करते हैं वह उतना ही प्रशंसनीय है जितना उनके द्वारा बनाये गये चित्र अथवा मिट्टी के मॉडल। कुछ पाश्चात्य

देशों में सृजनात्मक नाटक को व्यापक समर्थन मिलने लगा है किंतु बाल-कला के रूप में भारत में तो सृजनात्मक नाटक के संबंध में जानकारी और भी कम है। अध्यापकों के लिए निर्धारित प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में इसे सम्मिलित नहीं किया जाता। यदि इसे अध्यापकों के प्रशिक्षण का अनिवार्य अंग मान लिया जाए, तो हम बच्चों को शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, अध्यापकों को एक नया और मूल्यवान साधन दे पाएंगे। यहां यह कहना प्रासंगिक होगा कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद् द्वारा शिक्षकों के लिए तैयार पाठ्यक्रमों में इस सृजनात्मक दृष्टिकोण को अपनाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, दर्पण अकादमी, अहमदाबाद; तथा एम. एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदरा के गृह विज्ञान विभाग में भी व्यक्तिगत रूप से इस दिशा में प्रयत्न किए जा रहे हैं।

घ. सृजनात्मक नाटक की उपयोगिता

शिक्षा बच्चे के संतुलित विकास से संबंधित होनी चाहिए। शिक्षा से छात्र को व्यक्तिगत चिंतन के अवसर मिलने चाहिए, जो लोकतंत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। लोकतंत्र का प्रभावी संचालन इस बात पर निर्भर है कि अधिकांश लोग आजादी से सोचने, अपने निर्णय स्वयं करने तथा उत्तरदायित्व संभालने के योग्य बनें। ये गुण केवल नेताओं तक ही सीमित नहीं रहने चाहिए बल्कि इनका आम लोगों में यथासंभव विस्तार होना चाहिए। शिक्षा का दायित्व व्यक्तित्व का विकास करना है। हमारी धारणा है कि यदि सभी कलाएं सृजनात्मक विधि से पढ़ाई जाएं, तो वे व्यक्तित्व के विकास में सहायक हो सकती हैं। प्रत्येक बच्चे के पास कल्पना भी होती है और सृजनात्मक योग्यता भी, किंतु बहुधा इन गुणों को ईश्वरीय देन समझा जाता है, जो कुछ गिने-चुने व्यक्तियों को ही प्राप्त हैं। बच्चों को ऐसे संवेदनशील प्रौढ़ से प्रोत्साहन की आवश्यकता है जो सृजनात्मकता की बुनियादी प्रक्रिया को समझता हो। सृजनात्मक नाटक एक ऐसा उत्कृष्ट साधन है, जो अध्यापक को बच्चों के साथ अपनापन स्थापित करने तथा उनके आंतरिक विचारों एवं भावनाओं को समझने में सहायता देता है। शिक्षक और छात्रों के बीच यह अपनत्व स्कूल की सभी क्रियाओं के संपादन में सहायक सिद्ध होता है। सृजनात्मक नाटक की उल्लेखनीय उपयोगिताएं इस प्रकार हैं।

1. सृजनात्मक नाटक, समूह में व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देता है। इसमें स्वतंत्रता तथा अनुशासन दोनों ही हैं, क्योंकि सभी सदस्य एक साथ काम करते हैं और प्रत्येक की भूमिका सामूहिक क्रिया से संबद्ध होती है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति भाग लेता है। शुरू में जो दर्शक होते हैं, वे बारी आने पर पात्र बन जाते हैं और पात्र, दर्शक। स्वभाव से ही जिनमें नेता के गुण होते हैं, उन्हें नेतृत्व करने का अवसर दिया जाता है, किंतु कभी-कभी दूसरों को भी यह अवसर मिलता है, जब वे लोग दर्शक की भूमिका निभाते हैं। शर्मीले बच्चों को भाग लेने के लिए मजबूर नहीं किया जाता किंतु धीरे-धीरे वे भी संकोच छोड़कर आगे आने लगते हैं। यह समस्त क्रिया, सामाजिक व्यवस्था में सहायक है जो कि व्यावहारिक लोकतंत्र का आधार है।

2. सृजनात्मक नाटक, मन और शरीर में समन्वय स्थापित करता है। कहानियों का आयोजन, पात्रों का मनोविश्लेषण, उनकी आकृति तथा आचरण पर विचार-विमर्श आदि में सृजनात्मक चिंतन की आवश्यकता होती है। दूसरी ओर, एक नाटकीय स्थिति में शरीर की गति, मूक अभिनय तथा आशुरचित वाणी पात्रों की संपूर्ण अभिव्यक्ति के आवश्यक अंग हैं।

3. सभी प्रकार के पात्रों का अभिनय, बच्चों को स्वस्थ आत्माभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करता है। दुष्ट पात्रों की भूमिका निभाना भी उपयोगी हो सकता है, क्योंकि इससे बच्चों में आक्रामकता, घृणा तथा अन्य अवांछनीय भावनाओं का आविर्भाव होता है, जिनके अंदर रहने से पैदा हुई घुटन हानिकारक होती है। बच्चों की इस क्रीड़ा से अक्सर उनकी दुर्भाग्यपूर्ण घरेलू परिस्थितियों तथा अन्य कारणों का आभास मिल जाता है, जो उनके अभिनय में बाधक होते हैं। एक चतुर नेता, इनसे उत्पन्न अवांछनीय भावनाओं को स्वस्थ दिशा प्रदान करने में बहुधा सफल होता है।

4. परियों की कहानियों, लोक कथाओं तथा वीरों की जीवनियों से जो कथानक लिए जाते हैं, वे अधिकतर चिरंतन सत्यों, नैतिक आचरण के नियमों तथा बहुत-सी अन्य विशेषताओं पर आधारित होते हैं तथा बच्चों में स्वस्थ विचार-पद्धति के विकास में सहायक होते हैं। बुनियादी तौर पर अच्छाई, बुराई पर विजय पाती है, चाहे इस प्रक्रिया में उसे कितनी ही बाधाओं का सामना क्यों न करना पड़े। नाटक का सार यही होता है। मानवीय आचरण के श्रेष्ठ मूल्यों के संबंध में जो शिक्षा बच्चों को सृजनात्मक नाटक के खेलने से मिलती है, मन पर पड़ी उसकी छाप, बार-बार दिए गए कोरे उपदेशों से कहीं अधिक गहरी होती है।

5. सृजनात्मक नाटक आनंददायक होता है। यह आवश्यक नहीं कि शिक्षा प्रक्रिया नीरस हो। आनंद की अनुभूति शिक्षा प्राप्ति में बाधक नहीं होती। यदि कलाओं का उचित प्रयोग किया जाए, तो वे शिक्षा-प्राप्ति को आनंददायक बनाने में सहायक होती हैं।

ड. सृजनात्मक नाटक के कुछ उपयोग

स्कूल के पाठ्यक्रम में किसी भी कला को उसकी मुख्यतया उन विशेषताओं के लिए ही सम्मिलित किया जाना चाहिए, जो बच्चों के बहुमुखी विकास में सहायक हो सकती हैं। इसके लिए किसी अन्य तर्क संगति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। किंतु अक्सर यह देखा गया है कि कलाओं को जब अन्य विषयों के अनुरूप सम्मिलित किए जाने की मांग की जाती है तो बहुत से शिक्षा शास्त्री इस बात का ध्यान रखते हैं कि स्वीकृत की जाने वाली कलाएं किसी 'व्यावहारिक' उद्देश्य की पूर्ति में कहां तक सफल होती हैं। इस बात की आशंका भी रहती है कि कलाओं का प्रयोग, अन्य विषयों को पढ़ाने के लिए केवल साधन के रूप में ही न किया जाए। अत्यधिक उपयोग अथवा दुरुपयोग किसी भी साधन की उपयोगिता को नष्ट कर सकता है। वैसे, सृजनात्मक नाटक स्कूल के बहुत-से विषयों को पढ़ाने के लिए उपयुक्त हैं। यदि इसका समुचित प्रयोग किया जाए तो 'ख' अनुभाग में उल्लिखित इसके बुनियादी मूल्यों को नष्ट किए बिना, इसका कई तरह से लाभ उठाया जा सकता है।

1. संकलित परियोजनाएं

नाट्य रचना के विषय लोक कथाओं या परियों की कहानियों अथवा देश की लोक संस्कृति एवं इतिहास से संबद्ध घटनाओं से लिए जा सकते हैं। ये विषय विदेशों में रहने वाले लोगों के रहन-सहन या आधुनिक विज्ञान के चमत्कारों से संबंधित हो सकते हैं। कई बार चित्रकला, मूर्तिकला तथा संगीतकला की उत्कृष्ट कृतियों से भी इस संबंध में सुझाव मिल जाते हैं।

2. संचार

इस बात के पहले ही संकेत दिए जा चुके हैं कि सत्य तथा अन्य नैतिक मूल्य, श्रेष्ठ बाल साहित्य में निहित हैं। बच्चों में आवश्यक विचारों का संचार करने के लिए सृजनात्मक नाटकों का प्रयोग उपयोगी होता है। किंतु यदि हम चाहते हैं कि बच्चे इन विचारों को आत्मसात करें तो हमें विशेष सावधानी बरतनी होगी। सबसे पहले जो समस्या सामने है, उसके प्रभावशील नाटकीकरण की आवश्यकता होगी। उदाहरणस्वरूप यदि हम बच्चे को भोजन करने से पहले हाथ धोने की आदत सिखाना चाहते हैं तो कुछ पात्रों से इसकी आवश्यकता पर केवल बातचीत करवाना प्रभावी नहीं होगा। इसके लिए एक बच्चे को ही नाटक में प्रभावशाली भूमिका निभानी होगी। नाटक की रूपरेखा कुछ इस प्रकार की हो सकती है कि पात्र बच्चा गंदे हाथों से भोजन करने की आदत पर अड़ा रहता है, जिसके परिणामस्वरूप वह बीमार पड़ जाता है और उसे अपने साथियों के साथ खेलने से रोक दिया जाता है। वह ऊब जाता है। मन बहलाने के लिए वह कई प्रयत्न करता है, किंतु सब व्यर्थ। क्रुद्ध होकर वह अपने खिलौनों को तोड़ देता है, अथवा उसकी मां खिलौने छीन लेती है। जब वह शांत होता है तो वह उसे प्यार से समझाती है कि वह उसे उसके सबसे प्रिय मित्र के साथ बाहर भोजन करने के लिए भेजेगी, यदि वह भोजन से पहले हाथ धोने का वचन दे। यह प्रयोग बहुत सफल रहता है और बच्चा हर्षोल्लास से भर उठता है। दर्शक समझ जाते हैं कि इसके पश्चात बच्चा हाथ धोए बिना भोजन नहीं करेगा। इस कथानक में कई अन्य काल्पनिक पुट भी दिये जा सकते हैं। जैसे कि, उसके खिलौने सजीव हो उठते हैं और जब वह उन्हें छूने लगता है, तो वे भाग खड़े होते हैं। यह भी हो सकता है कि बच्चा दुःस्वप्न देखे जिसमें कीटाणु राक्षस बन कर उस पर आक्रमण करें।

3. चिकित्सा

अस्पतालों में स्वास्थ्य लाभ कर रहे बच्चों के मनोरंजन का प्रभावी उपाय यह है कि सृजनात्मक नाटक में उनकी रुचि पैदा की जाए। जो उन्हें पुट्ठों तथा जोड़ों का व्यायाम करने अथवा चोटों को ठीक करने में भी सहायता देगा। किंतु ये सारा काम डाक्टर अथवा नर्स के निर्देशन से होना चाहिए। मानसिक चिकित्सा के क्षेत्र में और भी अधिक सावधानी की आवश्यकता है। किंतु बहुत हद तक प्रासंगिक चिकित्सा स्कूल में भी की जा सकती है। बच्चों के लिए कहानियों को रचने तथा घटनाओं

का अभिनय करने की व्यवस्था होनी चाहिए, जिनके लिए नेता की सहमति की आवश्यकता नहीं है। वह बच्चों को ऐसी कहानियों के नाटकीकरण में मार्गदर्शन कर सकता है, जिनका उद्देश्य बच्चों का भय उनकी पारिवारिक परिस्थितियों तथा अन्य व्याकुल करने वाली समस्याओं का समाधान करना हो। यह मार्गदर्शन परोक्ष रूप से बच्चों को वैकल्पिक कार्यविधि के सुझाव देकर, किया जाना चाहिए। किंतु 'पीटर स्लेड' के सुझावानुसार, यदि सृजनात्मक नाटक का प्रयोग स्कूल में नियमित रूप से किया जाए, तो वह बच्चों में मनस्ताप को बढ़ने से रोकने में सहायक हो सकता है।

च. सृजनात्मक नाटक संबंधी कार्य के लिए तैयारी

1. नेतृत्व

यह याद रखना चाहिए कि सृजनात्मक नाटक के प्रशिक्षणार्थी समूह का नेता, न तो अध्यापक की तरह होता है और न ही उस निर्देशक की तरह, जो बच्चों को बताता है कि क्या करना है और साथ ही करके भी दिखाता है कि कैसे करना है। नेता, तालबद्ध गति तथा मूक अभिनय द्वारा उनका मार्गदर्शन करता है। उनके साथ कहानी की रचना के सभी पहलुओं पर चर्चा करता है ताकि प्रत्येक बच्चा पात्रों की भूमिका और नाटक के अभिनय को समझ जाए। तब वह उन्हें स्वयं अभिनय करने का अवसर देता है। एक अच्छा नेता कल्पनाशील एवं उत्साही होना चाहिए ताकि वह प्रत्येक बच्चे के साथ विश्वास तथा मैत्री का संबंध स्थापित कर सके। नेता सांकेतिक प्रश्नों द्वारा अथवा वैकल्पिक सुझाव देकर, समूह से अपनी इच्छानुसार कार्य करवा सकता है। सृजनात्मक नाटक के लिए मार्गदर्शन की संपूर्ण क्रिया, प्रश्न पूछने, उनके उत्तर सुनने, बच्चों में ध्यानपूर्वक सुनने की आदत डालने तथा समुचित उत्तरों को क्रियान्वित करने पर आधारित है।

2. आयोजन

नेता को सावधानी से अपने कार्य का आयोजन करना चाहिए, किंतु यदि बच्चों से कुछ लाभकारी सुझाव मिलते हैं, तो उसे अपनी योजना में यथोचित परिवर्तन के लिए भी तैयार रहना चाहिए, उदाहरणतया यदि बच्चे, आंखों देखी किसी घटना अथवा स्थिति का अभिनय करने के लिए उत्सुक हों, तो उनके सुझाव को मान लेना चाहिए। उन्हें किसी एक दृश्य अथवा संपूर्ण कहानी को तैयार करते समय नेता को समूचे समूह तथा बच्चों की व्यक्तिगत इच्छाओं का ध्यान रखना चाहिए जिससे वह यथासंभव सभी को संतुष्ट कर सके। सृजनात्मक नाटक में प्रशिक्षण के लिए पाठ्यक्रम अपरिवर्तनीय नहीं होना चाहिए। नेता को अपने समूह के प्रति जागरूक रहना पड़ता है, ताकि उनके साथ काम करते हुए, वह अपने कार्यक्रम को विकसित कर सके। प्रत्येक पाठ की रूपरेखा तैयार करने से पहले, नेता को उसका भलीभांति विश्लेषण भी कर लेना चाहिए।

यदि समस्त स्कूल प्रणाली के लिए सृजनात्मक नाटक के कार्यक्रम की योजना तैयार करनी

हो, तो उसके सामान्य उद्देश्यों के अतिरिक्त, नाटक की तकनीकों तथा कथा सामग्री संबंधी सुझावों और पर्याप्त संदर्भ पुस्तकों आदि का भी उल्लेख होना चाहिए। (इस पुस्तक के अंत में, संदर्भ ग्रंथ सूची पर टिप्पणी देखें) प्रत्येक नेता को, अपने समूह के साथ व्यक्तिगत संबंध रखने तथा सृजनात्मक नाटक को प्रभावात्मक रूप देने की पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए।

3. विकसित की जाने योग्य अभिवृत्तियां

सृजनात्मक नाटक एक सामूहिक क्रिया है किंतु प्रत्येक सदस्य का अपना व्यक्तित्व होता है। कुछ बच्चे आक्रामक प्रवृत्ति के होते हैं और कुछ शर्मीले। पहली किस्म के बच्चों को इस शर्त के अनुसार नेतृत्व के अवसर जुटाए जाने चाहिए जिससे वे उनका दुरुपयोग न करें। शर्मीले बच्चों को उत्साहित करना चाहिए किंतु उन्हें किसी काम के लिए मजबूर नहीं करना चाहिए। वे, समय आने पर; स्वयं सक्रिय भाग लेने लगेंगे। साथ ही सभी बच्चों में आदत डालनी चाहिए कि वे नेता तथा एक-दूसरे की बात सुनें। जब कुछ बच्चे अभिनय करते हैं, तब उसे देख रहे बच्चों को नाटक की समाप्ति पर वाद-विवाद के लिए उत्साहित कर ये अनुभव कराया जाना चाहिए, जैसे वे स्वयं अभिनय कर रहे हों, इस विवेचना में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसी अभिनय की आलोचना करते समय, अभिनेता के स्थान पर अभिनीत पात्र का उल्लेख किया जाए। उदाहरणस्वरूप, "राजा बोला तो राजा की तरह, किंतु उसका गद्दी पर बैठने का ढंग ठीक नहीं था" अथवा "कुत्ता इतने जोर से नहीं भौंका कि डाकू डर कर भाग जाएं"। यदि नेता स्वयं अभिनय में कुछ बातों की आलोचना करना चाहता है तो वह बच्चों से ऐसे प्रश्न पूछे जिनमें उन बातों का संकेत हो। उदाहरणतया "युवक का वयोवृद्ध मुनि को अभिवादन करने का ढंग तुम्हें कैसा लगा ?"

यह विशेष महत्वपूर्ण है कि नाटक खेलने की स्वतंत्रता के साथ-साथ अनुशासन भी बनाए रखा जाए। यदि संभव हो तो इस व्यवस्था के लिए बच्चों के साथ विचार-विमर्श कर लेना चाहिए। वे शीघ्र ही समझ जाएंगे कि अनुशासन के बिना कोई भी खेल का आनंद नहीं ले पाएगा। बच्चों को कहा जाए कि प्रत्येक क्रीड़ा प्रदर्शन के पश्चात वे शीघ्र ही अपना स्थान ग्रहण कर लें (बैठने की व्यवस्था पर टिप्पणी देखें)। सभी बच्चे नेता के किसी ऐसे संकेत पर भी सहमत हो सकते हैं जिसका पूर्ण शांति की आवश्यकता होने पर प्रयोग किया जाए। छोटे बच्चों के लिए यह संकेत उन्हीं द्वारा सुझाया गया कोई 'जादुई शब्द' हो सकता है, जिसका उच्चारण होते ही वे सभी क्रियाएं एवं बातचीत बंद कर दें। बड़े बच्चों के लिए, छोटे हार्न अथवा किसी प्रबल घंटी के संगीतात्मक स्वर अथवा सीटी जैसे वाद्य की ध्वनि का प्रयोग किया जा सकता है। इस संकेत के लिए, स्कूल की घंटी अथवा पुलिस के सिपाही की सीटी जैसे सत्ता के प्रतीकों का प्रयोग कदापि नहीं करना चाहिए।

4. सृजनात्मक नाटक समूहों का संगठन

(क) *समूहों का आकार :* औसतन बीस की संख्या समुचित होगी। कुछ प्रकार के काम बड़े समूहों

के साथ भी किए जा सकते हैं, यदि सभी सदस्यों के लिए पर्याप्त स्थान एवं समय उपलब्ध हों। कभी-कभी समूह को हिस्सों में बांटा जा सकता है और कुछ बच्चों को पुस्तकालय अथवा अन्य स्थान पर काम करने के लिए भेजा जा सकता है। जब समूह को सृजनात्मक नाटक का पर्याप्त अनुभव हो जाए, तो उसे छोटे-छोटे दलों में बांट कर प्रत्येक दल का अलग नेता बच्चों में से चुना जा सकता है। प्रत्येक दल को एक-दूसरे से इतना अलग रखा जाए कि वे एक-दूसरे के काम में बाधक न बनें। किंतु समूह का दलों में विभाजन, कहानी रचना जैसे कुछ विशेष कार्यों के लिए ही किया जा सकता है जिनमें नेता प्रत्येक दल में जाकर उनकी सहायता कर सके। तालबद्ध क्रिया, बहुत से बच्चों के साथ भी की जा सकती है। मूक अभिनय भी बहुत से बच्चे एक साथ कर सकते हैं। बाजार जैसे दृश्यों में भी अधिक बच्चों की आवश्यकता होती है क्योंकि उसमें कई दुकानदार तथा सामान खरीदने वाले आते हैं। किंतु आशुरचित क्रियाओं तथा संवादों के साथ, समूचे नाटकों को खेलने के लिए, समूह में बीस या उससे कम सदस्य होने चाहिए।

(ख) *सत्रों की लंबाई :* सृजनात्मक नाटक के लिए कितना समय निर्धारित किया जाए, यह स्कूल सारणी पर निर्भर करता है। संतोषजनक उपलब्धि प्राप्त करने के लिए तीसरी कक्षा के लिए सप्ताह में तीन या चार बार लगभग आधे घंटे का समय, काफी होगा। चौथी, पांचवीं तथा छठी कक्षा के लिए 45 मिनट से एक घंटा ठीक रहेगा। सत्र के एक ही बार में अधिक लंबा होने से, सप्ताह में 45 मिनट के कई सत्र उपलब्ध होंगे। उच्च माध्यमिक छात्रों के लिए, सप्ताह में एक बार डेढ़ घंटे अथवा 45 मिनटों के कई सत्रों की व्यवस्था उपयुक्त होगी। यदि स्कूल के नियमित पाठन काल से समय न निकाला जा सके तो मध्यावकाश या खेल के घंटे में या फिर स्कूल समय के पश्चात, कुछ देर के लिए सृजनात्मक नाटक समूह अपना कार्यक्रम चला सकता है। किंतु गंभीर कथा-अभिनय के लिए ऐसी जगह का होना आवश्यक है जहां समूह, बिना किसी बाधा के, मन लगाकर काम कर सके।

सृजनात्मक नाटक प्रभावशाली ढंग से थोड़े समय में विकसित नहीं किया जा सकता। इसके लिए यदि संभव हो तो विद्यालय में वर्ष भर किंडरगार्टन से लेकर बड़ी कक्षाओं तक लंबी अवधि के सत्र वांछनीय हैं। प्रत्येक सत्र चाहे छोटा हो लेकिन उसका आयोजन नियमित किया जाता रहे, तो अधिक अच्छे परिणाम निकल सकते हैं।

(ग) *बैठने की व्यवस्था तथा उपलब्ध स्थान :* सीधी पंक्तियों में लगी कुर्सियों तथा डेस्कों की व्यवस्था उपयुक्त नहीं होगी। फर्श, कुर्सियों, अर्ध वृत्ताकार में अथवा बैंचों पर बैठे हुए बच्चों का मुंह यदि केंद्र में बैठे नेता की ओर हो, तो उन्हें 'सामूहिक घनिष्ठता' का आभास होता है। इस प्रकार अध्यापक एवं प्रशिक्षणार्थी एक-दूसरे के यथासंभव निकट आ जाते हैं। मार्गदर्शन एवं विचार-विमर्श में सुविधा होती है जिसके तुरंत बाद बच्चे अपनी नाट्य क्रीड़ा कर सकते हैं।

यदि प्रशिक्षण के लिए केवल कक्षा का कमरा ही उपलब्ध हो, जिसमें कुर्सियां अपनी जगह से हटाई न जा सकें, तो कुछ क्रीड़ा कमरे के सामने तथा बरामदों में की जा सकती है। पर्वतों, मकान

के ऊपरी भागों तथा अन्य ऊंचे स्थानों को दर्शाने के लिए डेस्कों का प्रयोग किया जा सकता है। अध्यापक की कुर्सी को राजा की गद्दी बनाया जा सकता है। क्रीड़ा के लिए समूह को दो भागों में बांटना आवश्यक होगा—एक भाग अभिनय करने वालों का, और दूसरा, डेस्कों पर बैठकर नाट्य क्रीड़ा देखने वालों का। किंतु यदि बड़े कमरे का प्रयोग किया जाए और क्रीड़ा वृत्त के भीतर की जाए, तो पहले बच्चों को एकजुट बनाए रखने के लिए, वृत्ताकार में बिठाना चाहिए। बाद में, जब बच्चे एकाग्र होकर बैठना सीख जाएं, तो अधिक स्थान का प्रयोग किया जा सकता है। खुले स्थान में क्रीड़ा करना ठीक नहीं, जब तक कि वह स्थान निर्जन न हो क्योंकि बच्चे तथा बड़े उत्सुकतावश क्रीड़ा देखने की ओर प्रवृत्त होते हैं, जिससे क्रीड़ारत बच्चों का ध्यान भंग हो सकता है। स्थान की समस्या देश के उन स्कूलों में और भी गंभीर है, जो चारों ओर से खुले होते हैं। जहां अलग-अलग कक्षाओं के लिए कमरे न बने होकर एक ही स्थान पर कई कक्षाएं एक साथ चलती हैं। किंतु वहां पर भी कोई न कोई स्थान मिल ही जाता है। यदि और कुछ न हो तो किसी वृक्ष के नीचे, खजूर के पत्तों से बुनी चटाइयां लगाकर स्थान की व्यवस्था की जा सकती है।

(घ) *एकांतता :* सृजनात्मक नाटक की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि बच्चे उसके कथानक का पूर्ण तल्लीनता से अभ्यास करें। नाट्य क्रीड़ा के लिए मूड बनाने में कुछ समय लगता है तथा किसी भी बाधा से उनका ध्यान बंट सकता है। इसीलिए ऐसे स्थान की व्यवस्था आवश्यक है जहां मिलने वालों और प्रेक्षकों को, उस समय तक जाने से रोका जाए, जब तक समूह कुछ काम कर न चुका हो। जब बच्चे पूरी तरह नाटक से परिचित हो जाएं, तथा आवश्यकतानुसार उसकी क्रिया एवं संवादों में तल्लीन होना सीख लें तो कुछ व्यक्तियों को कमरे में मुख्य क्रीड़ा स्थल से कुछ दूर चुपचाप बैठने की अनुमति दी जा सकती है, बशर्ते वे न तो हंसें और न ही ताली बजाएं। कभी कभी कुछ लोग गलत मौके पर हंस पड़ते हैं और बच्चों को लगता है कि वे उसकी हंसी उड़ा रहे हैं। बाद में, जब बच्चे नाटक को अच्छी तरह समझ लें तथा उनमें आत्मविश्वास की भावना पैदा हो जाए, तो वे अन्य बच्चों तथा माता-पिताओं के लिए प्रदर्शन प्रस्तुत कर सकते हैं। किंतु जैसा कि पहले भी कहा गया है, यह प्रदर्शन रंगमंच के अतिरिक्त किसी भी उपयुक्त स्थान पर किया जाना चाहिए।

(ङ) *ध्वनि प्रभाव तथा संगीत :* अच्छा होगा यदि सृजनात्मक नाटक के लिए ग्रामोफोन अथवा टेप रिकार्डर की व्यवस्था की जा सके ताकि नाट्यकृति के मूड से जिस गति का संकेत मिले, उसी के अनुरूप संगीत का प्रयोग किया जाए। यदि समूह में से कोई हारमोनियम या पियानो बजा सकता हो, तो उसकी देन बहुमूल्य हो सकती है, क्योंकि वह सृजनात्मक नाटक के मूड के अनुसार ताल स्वर दे सकता है। यह अत्यधिक आवश्यक है कि अधिक से अधिक ध्वनि आभास देने वाले वाद्य तथा अन्य उपकरण इकट्ठे कर लिए जाएं, जिनमें डुगडुगियां, झुनझुने, तंबूरे, घंटियां, सीटियां आदि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, लकड़ी के ब्लॉकों (जिनमें से कुछ पर रेगमाल चढ़ा हो), घोड़ों के कदमों की आवाज के लिए नारियल के खोल, धातु के टुकड़ों आदि, भिन्न-भिन्न ध्वनियों को पैदा

करने वाले यंत्रों का प्रबंध होना भी आवश्यक है। इनमें से बहुत से उपकरण बच्चे स्वयं बना सकते हैं। परेड करते हुए लोगों की आवाजें, पशु-ध्वनियां, वृक्षों में सरसराती हवा का स्वर, भूत-प्रेतों की चीख पुकार, करतल ध्वनि जैसी अनगिनत आवाजें तो बच्चे मुंह से भी निकाल सकते हैं। यदि बड़े बच्चों में कुछ वाद्य संगीत जानते हों तो बांसुरियों तथा नाना प्रकार के पारंपरिक डमरुओं जैसे लोक वाद्यों का प्रबंध भी कर लेना चाहिए।

(च) *सामग्री, वेशभूषा तथा मंच सज्जा का प्रयोग :* यदि बच्चों को मूक अभिनय का अच्छा प्रशिक्षण दिया गया है तथा उन्होंने बातों को संकेतों से अभिव्यक्त करना सीख लिया है तो उन्हें कहानियों तथा नाटकों के अभिनय के लिए, वास्तविक सामग्री की बहुत कम आवश्यकता होनी चाहिए, विशेषकर यदि उन्होंने, कहानी को आगे चलाने के लिए, आशुरचित संवादों को अच्छी तरह विकसित कर लिया है। कुछ स्थितियों में कोई पदार्थ इतना महत्वपूर्ण होता है कि उसका जुटाना आवश्यक हो जाता है। वेशभूषा के विषय में भी यही सिद्धांत लागू होता है—वस्तुतः इसकी आवश्यकता नहीं होनी चाहिए किंतु कभी-कभी वस्त्र का टुकड़ा अथवा सुनहरी ताज अथवा कोई अन्य सामग्री, जो पात्र की पहचान बनाती है, बच्चे को बेहतर चरित्र-चित्रण प्रस्तुत करने में सहायता दे सकती है। सृजनात्मक नाटक का मुख्य लक्ष्य शरीर, मन और वाणी की सहायता से पात्र विशेष को उजागर करना तथा नाट्य क्रीड़ा को प्रदर्शित करना है। किंतु वेशभूषा की ओर अधिक ध्यान देने से नाटक की ओर समुचित ध्यान नहीं जाता।

मेजों, डेस्कों, लकड़ी के बक्सों, कुर्सियों, तथा अन्य फर्नीचर को तरतीब देकर भिन्न-भिन्न स्थानों तथा स्थितियों को दर्शाया जा सकता है। शत्रुओं से डरा हुआ नायक, एक गुफा में (मेज के नीचे) छिप सकता है जब तक कि खतरा टल न जाए; दैत्य, पर्वत की चोटी पर स्थित अपने दुर्ग में बैठता है जिसका निरूपण, मेज पर कुर्सियों को तरतीब दे कर बनाए गए, ऊंचे स्थान से किया जा सकता है, इसी प्रकार एक धनी व्यापारी, तीन कुर्सियों को एक साथ जोड़ कर बनाई गई शय्या पर सो रहा होता है, जबकि डाकू उसकी थैलियों को चुरा ले जाते हैं।

(छ) *मंच प्रयोग का निषेध :* यदि ऐसी जगह पर काम करना आवश्यक हो जाए जहां एक मंच हो तो उसका मंच के रूप में प्रयोग न किया जाए। उस पर पहुंचने के लिए सीढ़ी लगा कर उसका प्रयोग इस तरह किया जाए जैसे कि वह कोई अन्य ऊंचा स्थान हो। शेर, कमरे के पीछे अपनी गुफा से निकलकर, शिकार की तलाश में चुपचाप आगे सरकता है। वह एक हिरण को चरते हुए देख कर उसका पीछा करता है। हिरण दौड़ कर (सीढ़ी लगे मंच से प्रतिदर्शित) पहाड़ी पर चढ़ जाता है और फिर नीचे उतर आता है। किंतु यदि हो सके तो मंच की उपेक्षा करनी चाहिए, उसका आगे का पर्दा गिरा देना चाहिए और शेष सभी उपलब्ध स्थान का कार्यवाही के लिए प्रयोग करना चाहिए। यहां दर्शकों के लिए प्रदर्शन प्रस्तुत नहीं किया जा रहा, बल्कि सभी बच्चे नाट्य क्रीड़ा तथा अपने पात्रों को सजीव बनाने में व्यस्त होते हैं।

छ. सृजनात्मक नाटक की तकनीकें

यद्यपि निम्नलिखित तकनीकों की अलग-अलग विवेचना की गई है। क्रियान्वित होने पर वे मिलजुल जाती हैं और कई बार मिले जुले रूपों में ही प्रयुक्त होती हैं। उदाहरण के तौर पर, तालबद्ध गति का प्रयोग शुरू में बाल एवं वयस्क दोनों समूहों के लिए, आवश्यक होता है किंतु सृजनात्मक नाटक का आवश्यक अंग होने के नाते, नाटक संबंधी कार्य में इसका निरंतर प्रयोग होता है। जब एक समूह आशुरचना कर रहा होता है, तो संभव है कि वह चरित्र-चित्रण के साथ भी चल सकती है।

प्रश्नों और उत्तरों के महत्व पर पहले ही चर्चा की जा चुकी है, हम पुनः इस बात पर जोर देते हैं कि बच्चों के साथ विचार-विमर्श सृजनात्मक नाटक की एक आवश्यक तकनीक है। नेता तथा बच्चे, मिलकर काम करते हुए तथा एक-दूसरे के अनुभवों को बांटते हुए, इसका विकास करते हैं। जैसे-जैसे बच्चों में उत्तरदायित्व संभालने की क्षमता बढ़ती है, वैसे-वैसे उन्हें अधिक उत्तरदायित्व सौंप दिया जाता है। आरंभ में नेता को, उनका मार्गदर्शन करना पड़ता है और इस बात का भी ध्यान रखना होता है कि उन्हें दिया गया काम बहुत सरल हो। किंतु आरंभ से ही उसे बच्चों के साथ यह निर्णय कर लेना चाहिए कि उन्हें क्या कार्य करना है और फिर उन्हें बिना निर्देश दिए कार्य को पूरा करने का अवसर देना चाहिए।

यदि सदस्य एक-दूसरे से परिचित न हों तो समूह की पहली बैठक में, उन्हें परिचय प्राप्त करने का अवसर देना चाहिए। इस संबंध में प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को अपना नाम बताने, ब्लैक बोर्ड पर लिखने अथवा सफेद कागज पर लिख कर अपनी कमीज या पोशाक पर पिन से लगाने के लिए कहना चाहिए। नेता को भी उनके नाम जान लेने चाहिए और उन्हें नामों से ही बुलाना चाहिए। यदि बच्चे अधिक शर्मीले न हों तो नेता उनकी रुचियों के विषय में पूछ सकता है तथा साथ ही वे कौन से खेल खेलते हैं तथा छुट्टियों में उन्होंने क्या काम किया ? इनमें से कुछ विचारों का प्रयोग, अभिनय के आरंभ में किया जा सकता है। प्रत्येक आयु वर्ग का दृष्टिकोण भी अलग होगा, किंतु कार्य शुरू करने से पहले यह आवश्यक होगा कि उसमें प्रत्येक बच्चे की रुचि हो तथा उसे करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। आमतौर पर काम किसी ऐसी क्रिया के साथ आरंभ करना श्रेष्ठ होगा जिससे समूह पहले से ही परिचित हो। मन तथा शरीर की स्वतंत्रता को विकसित करना ही सृजनात्मक नाटक का उद्देश्य है और समूह की पहली बैठक में ही इसका श्री गणेश हो जाना चाहिए और बाद के सभी सत्रों में इसे निरंतर जारी रखना चाहिए।

(1) तालबद्ध गति

प्रायः सभी समूहों के लिए आरंभ गति के रूप से करना अधिक आसान होगा। गति किस प्रकार की हो, यह समूह पर निर्भर करेगा। समूह के मतानुसार ही गति के रूप को चुनना चाहिए। कुछ

सामान्य सुझाव निम्नलिखित हैं–

(i) शरीर की गति की भिन्न-भिन्न किस्मों में, धीरे अथवा तेज चलना, मार्च करना, फुदकना, दौड़ना, कूदना आदि सम्मिलित हैं। शुरू में सारा समूह एक ही गति को एक साथ करे; शायद कोई बच्चा दूसरों को कोई विशेष गति दिखाना चाहे और तब अन्य सब उसका अनुसरण करें। लय को बनाए रखने के लिए, रिकार्ड किए हुए संगीत का प्रयोग किया जा सकता है, अथवा पियानो या हारमोनियम पर धुनें बजाई जा सकती हैं, किंतु इसके लिए शायद, इसी अध्याय में अन्यत्र सुझाए गए सरल ध्वनि उत्पादक सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध होंगे।

(ii) संगीत के माध्यम से सुझाई गई निर्बाध गति भी बहुत उपयोगी है। इसमें प्रत्येक बच्चा संगीत से प्रेरित निजी भावना के अनुसार गतिशील होता है। इसके लिए ग्रामोफोन, टेप रिकार्डर अथवा कुछ वादकों की आवश्यकता होती है। आंतरिक भावना पर आधारित इस प्रकार की निर्बाध गति सृजनात्मक नृत्य की ओर अग्रसर कर सकती है। यह गति, संभवतया उस औपचारिक किस्म की गति से काफी भिन्न होती है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत पर आधारित है तथा देश में अकसर सिखाई जाती है। यह केवल कल्पना के उद्दीपन के लिए ही उपयोगी नहीं है बल्कि पारंपरिक नृत्य की तैयारी के लिए भी लाभदायक है।

(iii) अध्यापक किसी अच्छी लयात्मक कविता का पाठ भी कर सकता है जो गति की भिन्न किस्मों को सुझाए। पश्चिम में 'मदर गूज' की बाल-कविताएं तथा बच्चों के लिए बहुत-सी अन्य कविताएं उपलब्ध हैं, जिनमें कुछ तो विश्व-प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार अध्यापक अथवा समूह के सभी सदस्य मिलकर ऐसे गीत गा सकते हैं, जो क्रिया की अभिव्यंजना करते हों। आमतौर पर कुछ सदस्य गाते हैं जबकि शेष सभी अभिनय करते हैं।

(iv) पशु गति भी तालबद्ध अभ्यासों के लिए उपयोगी है। बच्चे पक्षियों, भालुओं, बंदरों अथवा बिल्लियों का रूप धारण कर सकते हैं। किसी पशु की गति की सभी किस्मों का अनुकरण रोचक होता है। पहले सभी सदस्य एक ही क्रिया को मिलकर करें और तब प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी उसे अपने ढंग से करे। उदाहरण के तौर पर बिल्लियां सो रही हों, उठ रही हों, अपने पंजों से अपना मुंह धो रही हों, खेल रही हों या लड़ रही हों, तब एक चिढ़चिढ़ी बूढ़ी औरत झाड़ू से उन सबको भगा दे। पशु गति के अनुकरण से ही अभिनय का सूत्रपात होता है, क्योंकि इसमें बच्चे अपने से भिन्न किसी अन्य प्राणी की भूमिका निभाते हैं। भिन्न-भिन्न पशुओं की गतियां अलग-अलग होती हैं और उन पर विचार-विमर्श किया जा सकता है। बंदर, बैठते, चलते और दौड़ते कैसे हैं–इसका प्रदर्शन किया जा सकता है। मिसाल के तौर पर, कुत्तों को ही लें, बड़े कुत्तों और छोटे कुत्तों के चलने का ढंग अलग होता है। उनमें बदमिजाज भी होते हैं और स्नेही भी। उन्हें भोजन मांगते, सुस्ताते अथवा पंजों पर सिर रखकर गहरी नींद सोते देखा जा सकता है। नेता के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि होगी यदि वह प्रत्येक बच्चे से अलग किस्म के कुत्ते की भूमिका करवा सके। कुत्तों की भूमिका करने वाले बच्चों को, उनकी आवाजों की भी नकल करनी होगी जैसा कि ऊंची आवाज में भौंकना, जल्दी-जल्दी

भौंकना, रोना, गुर्राना आदि। इस अभ्यास के लिए, उसी पशु को चुनना चाहिए जिससे वे अच्छी तरह परिचित हों। हो सकता है कि वे स्वयं उन पशुओं का सुझाव देना चाहें, जिनकी भूमिका वे करना चाहते हों।

तालबद्ध गति के इन सभी अभ्यासों का महत्व इस बात में है कि बच्चे सहज गति के आदी हो जाएं और यथा समय वास्तविक संतुलन एवं लालित्य को प्राप्त कर लें, जो सृजनात्मक नाट्य क्रीड़ा की सभी अवस्थाओं में उनकी सहायता कर सके।

(2) मूक अभिनय

मूक अभिनय, कई बातों में तालबद्ध गति से मिलता है, क्योंकि उसका उद्देश्य भी, शब्दों के प्रयोग के बिना, क्रिया के माध्यम से विचारों का संचार तथा भावनाओं को अभिव्यक्त करना है। मूक अभिनय, किसी किस्म के संगीत अथवा ध्वनि-आभासों के प्रयोग के बिना भी किया जा सकता है। इसमें विचार के विकास पर जोर दिया जाता है। कई बार मूक अभिनय में गति का आकार बड़ा होता है। इस संबंध में (काल्पनिक) गेंद उछालने, लकड़ियां इकट्ठी करने, कपड़े धोने, सिर पर सामान उठाकर ले जाने, धान कूटने तथा दैनिक जीवन के बहुत-से अन्य काम करने का जिक्र किया जा सकता है। किंतु थोड़ी-सी आग जलाने, मेज लगाने, सूई में तागा डालने और सिलने, खिलौना किश्ती को बनाने अथवा चाय पीने के मूक अभिनय को करने के लिए छोटी तथा ब्योरेवार गति की आवश्यकता होती है। अत्यंत सूक्ष्म मूक अभिनय भारतीय नृत्य की मुख्य विशेषता बन गया है तथा इस संदर्भ में अभिनय ने एक पेचीदा एवं सांकेतिक भाषा का रूप ले लिया है।

मौन अभिनय, सृजनात्मक नाटक संबंधी कार्यों में शुरू से ही होने लगता है। यह अक्सर सामूहिक क्रिया के साथ ही आरंभ हो जाता है। प्रारंभिक अभ्यास परिचित घरेलू काम-काज अथवा पड़ोस में होने वाली गतिविधियों को प्रस्तुत करने के लिए किए जा सकते हैं। इनमें रोटी बनाने, झाड़ू लगाने, कुएं से पानी खींचने, भरी हुई बस में चढ़ने और उतरने, बैलगाड़ी को हांकने, चार आदमियों के सिर पर भारी पलंग को उठाकर ले जाने तथा पांचवें आदमी के गद्दे को लिए हुए साथ-साथ चलने की मिसालें दी जा सकती हैं।

कुछ गीतों अथवा कविताओं को-सरल मूक अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। 'मदर गूज' की बच्चों के लिए लिखी तुकांत कविताएं इसके लिए उपयोगी हैं। उनमें बहुत सी तो विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। उदाहरण के तौर पर—

> 'राजा अपने खजाने में अपना धन गिन रहा था;
> रानी बैठक में बैठी, शहद-रोटी खा रही थी।
> नौकरानी बगीचे में, कपड़े सुखा रही थी।
> अचानक एक काली चिड़िया आई और उसकी नाक नोंच कर ले गई।

इस कविता का काफी बड़े समूह द्वारा मूक अभिनय किया जा सकता है। इसमें कई राजाओं,

रानियों, नौकरानियों तथा काली चिड़ियों की आवश्यकता हो सकती है। इसके अतिरिक्त, कुछ सदस्य लाईन से लटकते और हवा में झूलते हुए वस्त्रों का मूक अभिनय कर सकते हैं। यदि स्थान सीमित हो, तो एक ही समय में कम सदस्य भाग ले सकते हैं। किसी एक पात्र अथवा पदार्थ की भूमिका करने वाले सदस्यों को बारी-बारी अपने अभिनय का प्रदर्शन करना चाहिए तथा वे अपने पात्र के चरित्र के जितने अधिक निर्वचन प्रस्तुत कर सकें, उतना ही अच्छा होगा। कुछ रानियां ओजस्वी तथा सुरुचि-संपन्न होती हैं किंतु अन्य स्थूल और सुस्त, जो रोटी और शहद को हड़पती प्रतीत होती हैं। बच्चे स्वयं यह निर्णय करेंगे कि उन्हें कौन सी वेशभूषा में अभिनय करना है और तदानुसार वे वस्त्रों की पंक्ति में अपना स्थान ग्रहण करेंगे।

यह और भी अच्छा होगा यदि कुछ बच्चे किसी स्थिति का मूक अभिनय करें तथा अन्य अनुमान लगाएं कि वह किस स्थिति को प्रस्तुत कर रहे हैं। छोटे-छोटे दल अलग जाकर स्वयं ही छोटा-सा मूक अभिनय तैयार करें और बारी-बारी कक्षा के सम्मुख प्रस्तुत करें। मूक अभिनय का महत्व इस बात में है कि इसमें अभीष्ट कार्यवाही के लिए, स्पष्ट कार्य दिशा तथा यथार्थता की आवश्यकता होती है। इससे बच्चों में, शरीर एवं भिन्न-भिन्न अंगों के संचालन की आदत पड़ जाती है, जो चरित्र चित्रण में सहायक होती है।

(3) चरित्र चित्रण

अपनी प्रारंभिक क्रीड़ा में, बच्चा सभी प्रकार के लोगों, पशुओं अथवा पदार्थों जैसा आचरण करता है। यह चरित्र चित्रण का आधार है और यह इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि इससे अन्य लोगों को समझने में सहायता मिलती है। जब बच्चा अपने आप से खेलता है तो वह अपने खेल में प्रायः पूर्णतया तल्लीन होता है। यह अत्यावश्यक है कि सामूहिक क्रीड़ा में भाग लेते समय, उसकी तल्लीनता बनी रहे क्योंकि यथार्थ चरित्र चित्रण पात्र के साथ तादात्म्य स्थापित करने पर निर्भर करता है।

यद्यपि पात्र की अभिव्यक्ति के लिए, बच्चे को केवल मूक अभिनय के प्रयोग के लिए उत्साहित करना अच्छी बात है लेकिन इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि शब्दों तथा क्रियाओं का एक साथ प्रयोग स्वाभाविक हो। बच्चे ज्यों ही वाणी के प्रयोग की आवश्यकता अनुभव करें, दोनों को एक साथ विकसित किया जाना चाहिए। बहुत छोटे बच्चों का शब्द-ज्ञान सीमित होता है। तथा उनके भावों की अधिकतर अभिव्यक्ति क्रियाओं द्वारा होती है। ज्यों-ज्यों वे बहुत बड़े होते हैं उनकी वाक-शक्ति उत्तरोत्तर विकसित होती जाती है।

सृजनात्मक नाटक के प्रत्येक पात्र के संबंध में अच्छी तरह विचार-विमर्श होना चाहिए। वह दिखने में कैसा है, कैसे चलता है, कहां रहता है, क्या करता है और कैसे बोलता है—इन सब पर बच्चों को टिप्पणी करनी चाहिए। नेता, विशिष्ट प्रश्नों द्वारा इस संबंध में उनको गहरे ढंग से सोचने के लिए उत्साहित कर सकता है। इससे बच्चों को पात्रों तथा उनके परिस्थान के प्रत्यक्षीकरण में

सहायता मिलती है। मूक अभिनय द्वारा किसी पात्र की अभिव्यक्ति के बाद, वाणी पर ध्यान देना चाहिए, ताकि इस बात पर सोच-विचार हो सके कि धीरे बोलना चाहिए अथवा तेज; आवाज स्वाभाविक होनी चाहिए अथवा असामान्य, स्वर ऊंचा होना चाहिए अथवा धीमा। यद्यपि बच्चों की स्वर विविधता प्रौढ़ अभिनेताओं की अपेक्षा सीमित होती है, तथापि वे अपनी वाणी में अभिव्यंजक स्वर का काफी समावेश कर सकते हैं जिससे प्रत्येक पात्र की, उसकी वाणी अथवा क्रिया से पहचान की जा सकती है। स्वरों के प्रारंभिक अभ्यास के पश्चात आशुरचित संवादों के साथ छोटे-छोटे दृश्य प्रस्तुत किए जा सकते हैं। ज्यों-ज्यों कहानी का अभिनय आगे बढ़ता है, स्वर तथा वाणी को पात्र के अनुरूप बनाए रखने के लिए, अधिक प्रयत्न किए जाने चाहिए।

पशु की पहचान के लिए आधे मुखौटे, पुलिस के सिपाही की टोपी अथवा गरीब आदमी की पगड़ी जैसी एक या दो वेशभूषाओं का प्रयोग, बच्चे को पात्र के साथ तादात्म्य स्थापित करने में सहायक हो सकता है, किंतु घटिया अभिनय को छिपाने के लिए उसे कोई साधन नहीं दिया जाना चाहिए। लड़ाई को चरितार्थ करने के लिए क्रिया को मूक अभिनय द्वारा प्रस्तुत करना बेहतर होगा, क्योंकि तलवार, लाठी जैसे शस्त्रों का प्रयोग बच्चों को हानि पहुंचा सकता है।

(4) आशु रचना

सृजनात्मक नाटक में लिखित तथा कंठस्थ किए गए संवादों के स्थान पर आशुरचित संवादों का प्रयोग किया जाता है। अच्छी आशुरचना के लिए यह आवश्यक है कि बच्चे उस पात्र को भली-भांति समझ लें जिसकी भूमिका निभाने का उन्हें प्रयास करना है। जैसे किसी पात्र के चलने तथा बोलने के ढंग की जांच करना जरूरी है, वैसे ही यह जानना भी आवश्यक है कि किसी विशेष परिस्थिति में वह क्या कहेगा। सृजनात्मक नाटक की शुरू की कक्षाओं में ही कुछ ऐसे सरल अभ्यास करने चाहिए जिनमें क्रियाओं के साथ संवाद भी बोले जाएं। शर्मीले अथवा बहुत छोटे बच्चों को तो प्रायः वाणी से पहले मूक अभिनय की शिक्षा ही दी जानी चाहिए। आरंभ में सामूहिक क्रिया की व्यवस्था होनी चाहिए जिसमें मूक अभिनय तथा छोटे संवादों का एक साथ प्रयोग किया जाना चाहिए। उदाहरण के तौर पर, रेलवे स्टेशन की चहल-पहल में कुलियों का ऐसे घबराए यात्री का भारी सामान लेकर चलना, जिसे अपनी गाड़ी का ठीक पता न हो, विक्रेताओं द्वारा सामान बेचने, कंडक्टर का यात्रियों को उनके रेल डिब्बों की ओर निर्दिष्ट करने, पुलिस के सिपाही का किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के लिए भीड़ में से रास्ता बनाने आदि के दृश्य प्रस्तुत किए जा सकते हैं। बाजार का दृश्य, ग्राम्य जीवन के कार्य-कलाप, सर्कस देखते हुए लोग (इसमें बच्चों को पशुओं के करतब दिखाने तथा उपयुक्त आवाजें निकालने के अच्छे अवसर मिल जाते हैं, जबकि दर्शक बच्चे उनकी प्रशंसा करते हैं तथा उन पर टिप्पणी देते हैं), नाटकीकरण के लिए अन्य विषय बन सकते हैं। जब उन्हें कुछ अनुभव हो जाए, तो बड़े समूह को छोटे-छोटे दलों में बांटा जा सकता है। इनमें से प्रत्येक दल यह स्वयं निर्णय करेगा कि उन्हें किन पात्रों की भूमिका निभानी है तथा वे इन भूमिकाओं को कैसे

निभाएंगे। इन दलों को, कुछ इस प्रकार के दृश्यों को प्रस्तुत करने के लिए, अलग-अलग स्थान ग्रहण कर लेने चाहिए, जैसे मां बच्चों को सुलाने की चेष्टा कर रही है, कुछ लोग एक बातूनी विक्रेता से मूंगफली खरीद रहे हैं; अपनी दुकान के बाहर खड़ा एक दुकानदार, यात्रियों को अपनी दुकान से सामान खरीदने के लिए आकर्षित कर रहा है, एक कार को बगल से खुरचकर मोटर साइकिल सवार का भागना और दोनों चालकों का एक-दूसरे को दोषी ठहराने के लिए वाद-विवाद करना प्रत्येक दल को बारी-बारी, अपने दृश्य को, समस्त समूह के लिए प्रदर्शित करना चाहिए।

(5) कहानियों की रचना

सतर्क नेता समूह द्वारा नाटकीकरण के लिए सहज ही, छोटी-छोटी कहानियों की रचना कर सकता है। जिनमें कुछ ऐसी परिस्थितियों पर आधारित होती हैं, जिनसे समूह पहले ही से परिचित होता है, तथा कुछ सर्वथा काल्पनिक होती हैं। अनुवर्ती छठे अनुभाग में दी गई नाटक की परिभाषा के अनुसार, सभी कहानियां नाटक नहीं होतीं किंतु बहुत से अभ्यास अधिक रोचक हो सकते हैं यदि उनमें संघर्ष का थोड़ा सा भी तत्व हो। एक बार प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों ने, चमकदार वेशभूषा से सुसज्जित पुतलियों के एक सुंदर नृत्य को आयोजित किया, किंतु वह तब तक नीरस बना रहा, जब तक कि उन्होंने उसमें भेड़िए का समावेश नहीं किया जो अचानक भागता हुआ आया और नर्तकियों में भगदड़ मचा दी। थोड़ी देर में वे संभलीं और उन्होंने मिलकर भेड़िए को भगा दिया।

ध्वनियों से सुझाए गए विचारों के आधार पर कहानियों की रचना की जा सकती है। ध्वनि आभासों के लिए नेता रेगमाल से ढंके लकड़ी के दो टुकड़ों को निकालकर आपस में रगड़ता है जिससे हल्की खुरचन की सी आवाज पैदा होती है तब वह बच्चों से पूछता है "तुम्हें इससे किस ध्वनि का आभास होता है ?" उत्तर मिलता है "कुत्ता दरवाजे को पांव से घिस रहा है।" वह एक सीटी लेकर बजाता है। इससे स्टीम बोट की सीटी का आभास होता है, ढोल को धीरे और हल्के-हल्के थपथपाकर, नेता पूछता है, "यह क्या है ?" उत्तर मिलता है "आहिस्ता चलने पर डाकुओं के पांव की आवाज"। शीघ्रता से सोचते हुए, नेता कहानी की रचना कर लेता है। एक दिन कुछ लोग, स्टीम बोट में, नदी के घाट पर पहुंचे और उसे घाट से बांध दिया। उनके पास नाव में गोल ढकने वाला और तराशा हुआ लकड़ी का एक भारी बक्सा था। उसे लेने के लिए, घाट पर एक आदमी को आना था। उसे अपने आगमन की सूचना देने के लिए उन्होंने तीन बार स्टीम बोट की सीटी बजाई। किंतु वह नहीं आया। चूंकि दोपहर बहुत गर्म थी, वे लोग केबिन के द्वार खुले छोड़ बैंचों पर सो गए। नाव की सुरक्षा के लिए उन्होंने अपने बड़े कुत्ते को छोड़ दिया था। किंतु कुत्ता, एक बिल्ली का पीछा करने के लिए किनारे पर कूद गया। इसी बीच दो डाकू धीरे-धीरे हल्के कदमों से नाव पर आ गए और उन्होंने खुले द्वार में से सुंदर बक्से को देखा। यह सोचकर कि उसमें खजाना भरा होगा, उन्होंने पहले नाव की जांच की। फिर आदमियों को सोते देखकर, भारी बक्से को उठा,

घाट पर लाने में सफल हो गए। लौटते समय उन्होंने केबिन के द्वार को बंद कर दिया। शीघ्र ही कुत्ता सूंघता हुआ वापिस लौटा। उसने केबिन के दरवाजे को पांव से पहले आहिस्ता और फिर जोर से घिसा, जिससे वे लोग जाग गए। जब उन्होंने देखा कि बक्सा वहां से गायब हो गया है, तो वे बहुत क्रुद्ध हुए और कुत्ते को डांटने लगे। किंतु वह भौंकता रहा और उन्हें पहले घाट पर और फिर शहर में ले आया। रास्ते में उन्होंने एक पुलिस के सिपाही को देखा जो घटना के ब्योरे को सुनकर उनके साथ हो लिया। कुत्ता उन्हें सीधे एक पुराने मकान पर ले आया, जहां पर डाकू ताले को तोड़कर, बक्सा खोलने की चेष्टा कर रहे थे। पुलिस के सिपाही ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और तब नाविकों को बक्सा खोलने का आदेश दिया। उनमें से एक ने जेब से एक बड़ी सी चाबी निकाली और ताले को खोल दिया और जानते हो कि उसमें से क्या निकला ? नेता स्वयं इसका उत्तर दे सकता है किंतु अधिक रोचक होगा यदि बच्चे इस संबंध में अपनी राय दें। तब कथा की नाट्य क्रीड़ा की जा सकती है।

कहानी रचना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे पीटर स्लेड ने 'विचारों का खेल खेलने' की परिभाषा दी है। ध्वनियों के प्रयोग से सुझाने की बजाए बच्चे स्वयं भी इस संबंध में विचार प्रकट कर सकते हैं। पर्वत, छोटा पक्षी, बूढ़ा आदमी, बस आदि, तीन या चार शब्दों के सुझाने पर भी कहानी बनाई जा सकती है। कभी-कभी नेता स्वयं कहानी की रचना करता है और कभी वह और बच्चे मिलकर इस कार्य को संपन्न करते हैं।

सरल कहानियों की रचना के लिए चित्रों, मिट्टी के सांचे द्वारा बनाए गए किसी पशु समूह अथवा चिड़ियाघर में वानर कुटुंब के अवलोकन से तथा मनुष्यों एवं पशुओं पर वर्षा के प्रभाव को गौर से देखने आदि से भी प्रेरणा मिल सकती है। इन कथाओं की नाट्य क्रीड़ा प्रस्तुत करने में भी बहुत देर नहीं लगती।

(6) नाटक क्या है

नाटक का एक निश्चित रूप होता है। उसमें सरल कथाओं, मूक अभिनय तथा नाट्य क्रीड़ा (जिन पर पहले ही सोच-विचार किया जा चुका है) में अंतर होता है। नाटक किसी विवरण तथा अनौपचारिक बातचीत एवं क्रियाओं से भी सर्वथा भिन्न होता है—

(क) *संघर्ष :* नाटक में संघर्ष का होना आवश्यक है। बहुत सी कहानियां, जिन्हें बच्चे खेलते हैं, संघर्ष रहित होती हैं, यह सर्वथा उचित भी है। बच्चों की स्वाभाविक क्रीड़ा कहीं से भी शुरू हो सकती है तथा विषयों के निरंतर बदलते रहने के बाद, कहीं भी समाप्त हो सकती है। किंतु ज्यों-ज्यों उनका विकास होता है, विशेषकर सृजनात्मक नाटक के नेता के मार्गदर्शन से जब वे आगे बढ़ने लगते हैं, तो उनकी पात्रों में रुचि बढ़ जाती है। वे यह बात जानने के लिए उत्सुक हो उठते हैं कि पात्रों के साथ क्या बीतती है, वे कैसे कठिनाइयों में पड़ जाते हैं और किस प्रकार उनसे छुटकारा पाते हैं, यही

दर्पण अकादमी में जूनियर छात्र समूह नाटक में उन पशुओं की गति एवं ध्वनि की व्याख्या करते हुए, जिनके समाचार-पत्रों से बने मुखौटे उन्होंने पहन रखे हैं।

सृजनात्मक नाटक का अभ्यास करते हुए सीनियर छात्र, जिनमें आंखों पर पट्टी बांधे एक मूर्तिकार, पोज बनाये हुए एक मॉडल तथा मिट्टी का प्रतिरूपण करते हुए एक तीसरा व्यक्ति है। कलाकार, मॉडल और मिट्टी को हाथों से महसूस कर, मूर्ति का निर्माण करेगा।
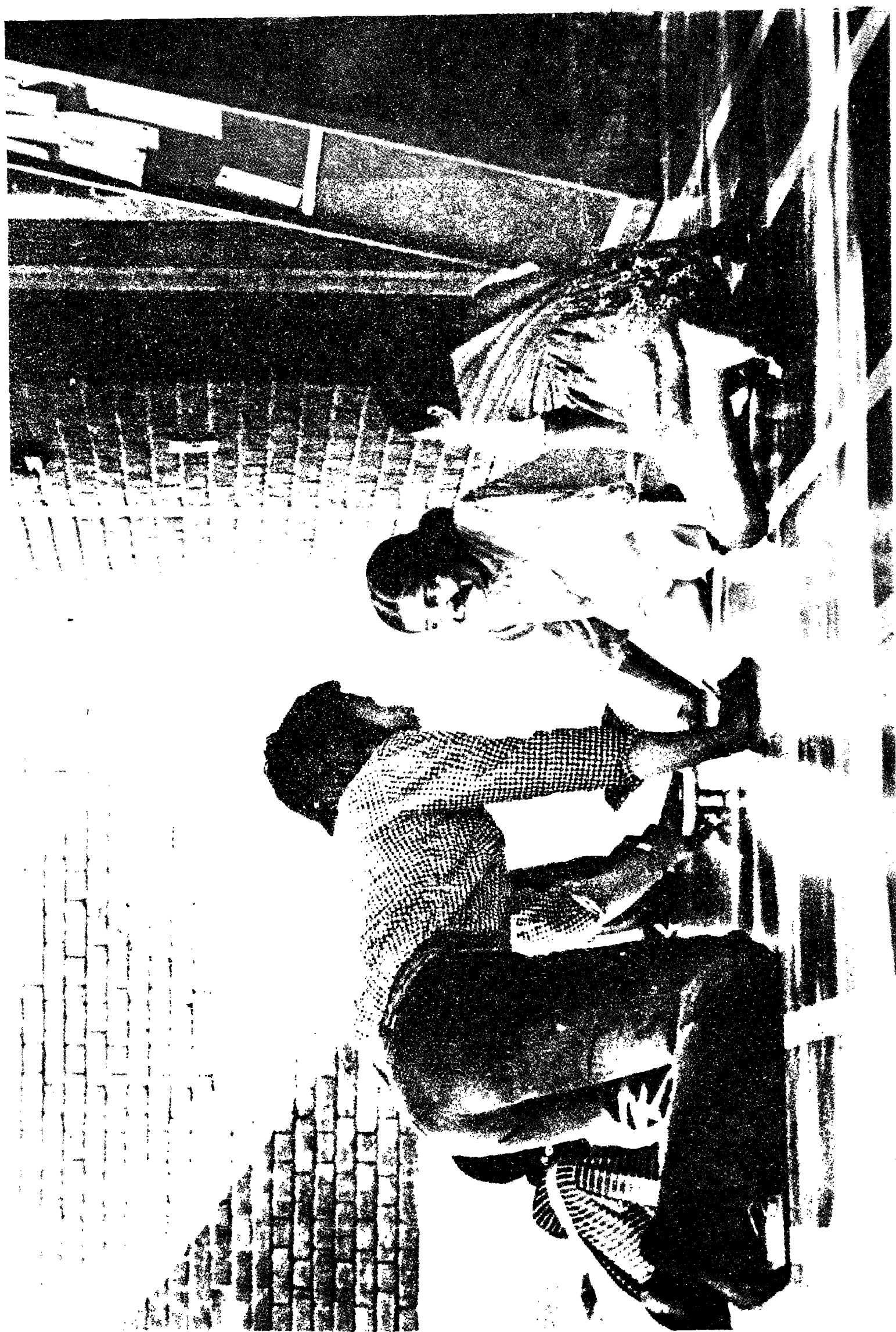
स्वीडन से अतिथि कलाकार 'गुंटेर वेत्ज़ल' के साथ एक सृजनात्मक नाटक का दृश्य।

दंड पुतलियों के लिए मुखौटों पर काम करते हुए, दर्पण अकादमी के जूनियर छात्र।

नाटक है।

(ख) *समस्या :* संघर्ष के लिए समस्या का होना आवश्यक है। यह किसी कठिन स्थिति के रूप में हो सकती है, जिससे बच निकलना आवश्यक हो। किसी ऐसी वस्तु की भी आवश्यकता हो सकती है, जिसे पाना आसान न हो। इसे भयानक यात्रा अथवा अपने कार्यों को सही साबित करने के लिए, अपने ही लोगों के विरोध का सामना करने के रूप में भी दर्शाया जा सकता है। संघर्ष मानसिक भी हो सकता है तथा शारीरिक भी। यह वाक चतुराई के मुकाबले का रूप ले सकता है। संघर्ष इस प्रतिरोध से भी पैदा हो सकता है जिसमें लोक कथाओं अथवा परियों की कहानियों के वे पात्र उलझे हों, जो बच्चों को अधिक प्रिय होते हैं।

(ग) *प्रतिरोध :* प्रतिरोध के बिना संघर्ष नहीं होता। प्रमुख पात्र अपनी समस्या का तुरंत समाधान नहीं कर पाता, क्योंकि कई अन्य पात्र उसे ऐसा करने नहीं देते। उन्हीं विरोधी शक्तियों के बीच जो संघर्ष होता है, वही नाटक को रोचक बनाता है। परिणाम के अनिश्चित होने के कारण, असमंजस की भावना पैदा होती है। नायक कई बाधाओं का सामना करता है। कई बार वह उन पर काबू पा लेता है और कई बार शत्रु उस पर हावी हो जाता है अथवा उसे घायल कर देता है। किंतु ये कठिनाइयां केवल अस्थायी होती हैं। क्योंकि उसकी सहायता के लिए कई मित्र होते हैं। उसके विरोधी को भी कई तरह के असुरों, प्रेतात्माओं अथवा दुश्चरित्र लोगों से सहायता मिलती है। और इस प्रकार नाटक विकसित होता हुआ चरम बिंदु की ओर बढ़ता है जिसमें नायक की विजय के साथ समस्या का समाधान हो जाता है। बच्चों के लिए रचित नाटकों में तो ऐसा ही अंत होता है, क्योंकि उन्हें नाटक की विजय से ही संतोष मिलता है। प्रौढ़ों के लिए निर्मित नाटकों में विरोधी दल, कई बार इतना सशक्त होता है कि नायक बुरी तरह हार जाता है। इससे नाटक दुखांत बन जाता है।

(घ) *कथावस्तु :* ऊपर वर्णन की गई नाटक की घटनाओं की प्रगति को कथावस्तु कहते हैं, जिसके तीन भाग होते हैं– (1) प्रारंभ; जिसमें दर्शकों को समस्या तथा उससे पात्र का स्पष्ट विवरण मिल जाना चाहिए। (2) मध्य; जिसमें समस्या को सुलझाने के लिए कोई योजना बनाई जाती है। नाटक के इस भाग में इस योजना को विकसित किया जाता है तथा उन उलझनों की चर्चा होती है, जो नायक द्वारा बाधाओं का सामना करने से पैदा होती हैं। (3) अंत, जिसमें समस्या का समाधान हो जाता है। नाटक चरम बिंदु के बाद तुरंत ही समाप्त हो जाता है। यदि चरम बिंदु अच्छा हो, तो नाट्य क्रीड़ा को जारी रखना, चरम सीमा का उल्लंघन होगा। हां, चरम बिंदु के बाद, संगीत एवं नृत्य के साथ कुछ आनंदोत्सव का प्रदर्शन किया जा सकता है, जो इस बात का परिचायक होता है कि उसके बाद सब हंसी-खुशी से रहने लगे। बाद में, अन्य नाटक प्रस्तुत किया जा सकता है, जिसमें वही पात्र किसी दूसरी कठिन परिस्थिति से जूझने में लगे हों।

(7) नाटकीकरण

(क) *सामग्री का चुनाव :* नाटकीकरण के लिए कहानियों को चुनते समय, दो सामान्य बातों का ध्यान रखना चाहिए, पहली यह कि क्या कहानी की कथावस्तु उपयुक्त है ? अर्थात क्या वह सत्य, साहस, सहानुभूति, ईमानदारी तथा उदारता को प्रशंसनीय गुणों के रूप में प्रस्तुत करती है एवं इनके प्रतिकूल अवगुणों को अवांछनीय बताती है ? यह आवश्यक नहीं कि ये सभी गुण एक ही कहानी में समाविष्ट हों किंतु मूल रूप से अच्छाई की बुराई पर तथा सज्जन की दुष्ट पर विजय होनी चाहिए। यह काव्य न्याय है और इसे स्पष्ट तथा वर्णित न होकर, मूल विचार के रूप में, बच्चों के लिए रचित.कहानियों में मौजूद रहना चाहिए। कहानियों को सृजनात्मक नाटकों के लिए विकसित करने में जो समय लगता है, उसे तभी सार्थक माना जा सकता है यदि उसे सार एवं गुणों से युक्त कहानियों पर खर्च किया जाए। इसके साथ ही कहानी के साहित्यिक गुणों का भी ध्यान रखना चाहिए, चूंकि विश्वभर में ख्याति प्राप्त कथाओं की शैली विशिष्ट एवं कथावस्तु उपयुक्त होती है।

दूसरी बात यह कि क्या कहानी में क्रिया एवं संघर्ष के तत्व हैं जिन्हें पात्रों का रोचक समूह विकसित कर सकेगा ? क्या कहानी की परिस्थितियां, दर्शकों की उत्सुकता को बनाए रखेंगी ? बहुत सी कहानियां, उत्कृष्ट होते हुए भी नाटकीय नहीं होतीं, अतः उनका सफल नाटकीकरण संभव नहीं होता। कहानियां चाहे काव्यात्मक हों, वर्णन में आकर्षक हों तथा पढ़ने में सुखद हों; किंतु यदि उनमें क्रिया एवं संघर्ष की संभावना न हो, तो वे नाटकीकरण के लिए उपयुक्त नहीं होतीं।

(ख) *मौलिक बनाम लिखित कहानियां :* सृजनात्मक नाटक के प्रमुख व्याख्याताओं में, मौलिक तथा विश्व के श्रेष्ठ साहित्य से ली गई कहानियों की सापेक्ष उपयोगिता के संबंध में मतभेद है। मौलिक कहानियां सृजनात्मक सोच-विचार को प्रेरित करती हैं और बच्चों को ऐसी समस्याओं को प्रस्तुत करने का अवसर देती हैं, जिनका उनके जीवन से निकट का संबंध होता है। इन कहानियों के आशुरचित अभिनय के दौरान, यदि वे सहज ही इनकी ओर संकेत करते हैं, तो इससे कई बार उनकी व्यक्तिगत कठिनाइयों का स्पष्ट आभास मिल जाता है। मौलिक कहानियों से बच्चों को किसी सृजनात्मक प्रायोजना को, कथा रचना से लेकर अभिनय प्रदर्शन तक, कार्यान्वित करने का अवसर भी मिलता है। किंतु एक कुशल लेखक को चाहिए कि वह बच्चों की ज्ञान परिधि के विस्तार द्वारा उनके निजी अनुभवों से कहीं अधिक उनके कल्पनाशील अनुभवों में वृद्धि करे।

मौलिक तथा लिखित कहानियों का संयोजन शायद अधिक उपयोगी हो सकता है। पुतलियों, चित्रों अथवा दैनिक अनुभवों से प्रेरित छोटे नाटकों का प्रयोग मौलिक नाट्य रचना के लिए किया जा सकता है। दूसरी ओर, लोक कथाओं, परियों की कहानियों, वीर गाथाओं अथवा बाल साहित्य के समूचे क्षेत्र को दीर्घ नाटकों का आधार बनाया जा सकता है, जिनका प्रदर्शन अधिक समय तक किया जाना हो। इस संबंध में पूर्व एवं पश्चिम दोनों की बहुमूल्य देन से लाभ उठाया जा सकता

है।

मौलिक नाटक की रचना के लिए, समूह के प्रत्येक सदस्य को सम्मिलित करना कठिन होता है। बहुधा, थोड़े से प्रशिक्षणार्थी विचारों को प्रस्तुत करने में सक्षम होते हैं। यदि समूह को, नेतृत्व के गुणों से युक्त बालकों की निगरानी में, छोटे दलों में बांट दिया जाए, तो कई नाटकों की एक साथ रचना की जा सकती है, जो सारे समूह के सम्मुख बारी-बारी प्रस्तुत किए जा सकते हैं। किंतु बाल नेताओं की नियुक्ति, उन्हीं समूहों में की जा सकती है जिन्होंने काफी समय तक मिल कर काम किया हो और जिनके सभी सदस्यों ने, नेता द्वारा बताए गए अभ्यासों तथा नाट्य क्रीड़ा में भाग लिया हो।

(ग) *कथा वाचन :* जब एक अच्छी कहानी मिल जाए तो नेता तथा बच्चों, दोनों को उससे भली-भांति अवगत करा देना चाहिए। कहानी कहने की कला आसान नहीं होती और यदि इसका ठीक ढंग से वर्णन न किया जा सके, तो कहानी को पढ़कर सुनाना बेहतर होगा। बच्चों के लिए, पात्रों के चरित्र तथा उनकी वेशभूषा, नगरों एवं गांवों तथा भवनों के कुछ ब्योरों को जान लेना महत्वपूर्ण होगा, क्योंकि सृजनात्मक नाटक में अभिनय करते समय, पात्रों के साथ तादात्म्य स्थापित करने के लिए, उनकी स्पष्ट कल्पना करना ही काफी नहीं होता, बल्कि उन स्थानों के मूड अथवा पर्यावरण की कुछ जानकारी प्राप्त करना भी आवश्यक है, जहां वे रहते हैं। अलबत्ता, बहुत सी कहानियों में ब्योरे की अधिकता होती है तथा नेता को कहानी कहते अथवा पढ़कर सुनाते समय, उसमें उन्हीं बातों का समावेश करना चाहिए जो, उसे समझने तथा अभिनय करने के लिए आवश्यक हों। प्रतिष्ठित एवं सुपरिचित कृतियों से ली गई कहानियों को इतना परिवर्तित नहीं करना चाहिए कि उसके पात्रों के मूल स्वभाव, कथा के भावार्थ तथा अंत को क्षति पहुंचे। कहानी को सरल बनाया जा सकता है, उसके दृश्यों को संयोजित किया जा सकता है, उसके कुछ पात्र छोड़े भी जा सकते हैं और कुछ अन्य शामिल भी किए जा सकते हैं, यदि वे रचना की मूल भावना से मेल खाते हों। विख्यात लेखकों की कहानियों के संबंध में विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है। बहुत सी कथाओं के साहित्यिक गुण महत्वपूर्ण होते हैं, तथा बच्चों को उनके मूल संवादों से परिचित होना चाहिए। इससे उनका शब्दशः प्रयोग न होने पर भी, बच्चों को आशुरचित संवादों में साहित्यिक सुरुचि का आभास मिल जाएगा।

(घ) *कार्य योजना :* बच्चों के साथ, कथा और उसके पात्रों पर विचार-विमर्श करना चाहिए। इस बात का निर्णय कर लेना चाहिए कि कौन से पात्रों को सम्मिलित करना है, दृश्यों का क्रम क्या होगा तथा प्रत्येक दृश्य में कौन सी घटनाएं घटेंगी। तब नाटक की कार्ययोजना लिख लेनी चाहिए। प्रत्येक दृश्य को पहले, दूसरे, तीसरे आदि की संख्या देनी चाहिए। कहानी को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक बुनियादी क्रिया नोट करनी चाहिए। यह भी लिख लेना चाहिए कि किन महत्वपूर्ण बातों

का जिक्र करना है, किंतु संवादों को लिखित रूप नहीं देना चाहिए। उदाहरण के तौर पर नाटक के प्रथम दृश्य का संक्षिप्त सार यूं दिया जा सकता है—

राजा तथा उसके दरबारी मनोरंजन का रसास्वादन कर रहे हैं। एक दूत शीघ्रता से प्रवेश करता है और राजा को सूचित करता है, कि उसके प्रमुख शत्रु (कोई भी नाम) के राजा ने देश पर आक्रमण कर दिया है। इस पर प्रत्येक व्यक्ति, आश्चर्य, भय अथवा क्रोध की प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करता है। राजा के आदेश पर, सभा विसर्जित हो जाती है।

राजा अपने सलाहकारों को बुला भेजता है, वे स्थिति पर विचार-विमर्श करते हैं तथा रक्षा के लिए योजना बनाते हैं। प्रत्येक सलाहकार आवश्यक तैयारी के लिए प्रस्थान करता है। अनुवर्ती दृश्यों के लिए एवं कहानी के विकास के लिए इसी प्रकार की रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए। एक कार्य योजना संदर्शिका मात्र होती है जिसके ब्यौरे में, व्याख्या एवं क्रिया की स्वतंत्रता होने के कारण, आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सकता है। शर्त केवल यह है कि नाटक की मूल भावना नष्ट न हो।

नाटक की योजना बनाते समय, ऐसे संगीत तथा ध्वनि आभासों को अवश्य ही सम्मिलित कर लेना चाहिए, जिनसे क्रिया अथवा पात्रों की पहचान में सहायता मिलती हो। इस संबंध में कई ध्वनियों की परीक्षा कर लेनी चाहिए। भिन्न-भिन्न ध्वनियों का उच्चारण करने में कुशल बच्चे, विशेष मौलिक ध्वनियों को पैदा कर सकते हैं जबकि भीड़ के शोर अथवा पक्षियों के चहचहाने जैसी आवाजों को समूह, नाना प्रकार के यंत्रों तथा ध्वनि उत्पादकों की सहायता से पैदा कर सकता है।

(8) सृजनात्मक नाटक का अभिनय

(क) कहानी की नाट्य क्रीड़ा आरंभ करने से पहले, इसे एक बार और पढ़ लें तथा कार्ययोजना का पुनरीक्षण करें।

(ख) अधिक कठिन भागों में से कुछ की नाट्य क्रीड़ा, बच्चे अपने आप करें। भिन्न-भिन्न पात्रों की भूमिका के लिए, बच्चे स्वेच्छा से अपने नाम का सुझाव प्रस्तुत करें तथा प्रत्येक दृश्य की नाट्य क्रीड़ा के बाद, भूमिकाओं को बदल दिया जाए। इस बात का ध्यान रखा जाए कि हर बार अधिक उत्साही बच्चों को न चुना जाए। शर्मीले बच्चों की ओर ध्यान दिया जाए और यदि उनमें क्रीड़ा में भाग लेने की प्रवृत्ति का थोड़ा सा भी संकेत मिले, तो उन्हें उत्साहित किया जाए, किंतु किसी को भाग लेने के लिए विवश न किया जाए, क्योंकि अंततः संकोची बच्चे स्वयं ही क्रीड़ा में भाग लेना चाहेंगे। नाटक में उल्लिखित स्थानों की स्थिति कमरे के भिन्न भागों में निर्धारित कर दी जाए और बच्चे नियत स्थानों पर चले जाएं।

(ग) नाटक शुरू करने से पहले, यह देख लिया जाए कि सभी बच्चे शांत एवं एकाग्रचित हैं। बच्चों

को संपूर्ण कहानी की नाट्य क्रीड़ा, बिना किसी बाधा के, पूरा करने का अवसर दिया जाए। यदि बच्चे बुरी तरह लड़खड़ाएं, तो उन्हें फिर अपने स्थानों पर भेज दिया जाए और कहानी पर पुनः विचार किया जाए। शायद वे अभी पुरानी कहानी की नाट्य क्रीड़ा करने के लिए भली-भांति तैयार नहीं हैं। अतः उसे कई खंडों में बांट दिया जाए। एक दृश्य की नाट्य क्रीड़ा के समाप्त होने पर, अगले दृश्य को खेलने से पूर्व उसकी समीक्षा कर ली जाए। कहानी के अंत तक इसी प्रक्रिया का अनुसरण किया जाए।

(घ) क्रीड़ा के पश्चात, विचार-विनिमय के लिए बच्चे अपने-अपने स्थानों को ग्रहण कर लें। पहले उनसे यह पूछा जाए कि क्रीड़ा की कौन सी बातें उन्हें अच्छी लगी हैं। नेता थोड़े शब्दों में अपनी सम्मति को भी प्रकट कर सकता है। क्रीड़ा को सुधारने के लिए बच्चों के सुझाव भी पूछे जाएं किंतु ऐसा करते समय, भूमिका करने वाले बच्चे का नाम न लेकर, पात्र का जिक्र ही किया जाए।

(ङ) यदि संभव हो तो दिए गए सुझावों को ध्यान में रखकर, नाटक को शुरू से अंत तक, फिर खेला जाए। नेता को, अनुपालन के लिए, तीन या चार मुख्य सुझावों को ही चुनना चाहिए, क्योंकि अत्यधिक आकस्मिक परिवर्तनों से बच्चे हड़बड़ा जाएंगे !

(च) किसी कहानी को कितनी बार खेला जाए, यह उस बात पर निर्भर करता है कि बच्चों में इसके लिए कितना उत्साह है, तथा नेता नए सुझाव देने में कितना कुशल है। कुछ समूह, एक नाटक पर काफी लंबे समय तक काम करना पसंद करते हैं जिसके दौरान वे अभिनय में नए तत्वों का समावेश करते हैं, चरित्र चित्रण को अधिक विकसित करते हैं और इस प्रकार नाट्य क्रीड़ा को दोषरहित बनाने की चेष्टा करते हैं। इससे न केवल यथासंभव पूर्णता, अपितु अनुभव की विविधता भी प्राप्त होती है जो कि उतनी ही महत्वपूर्ण है। एक नए नाटक को तभी हाथ में लेना चाहिए जब नेता को महसूस हो कि बच्चों ने पिछले नाटक से पर्याप्त अनुभव प्राप्त कर लिए हैं।

(9) तकनीक संबंधी महत्वपूर्ण बातें

पश्चिमी देशों में सृजनात्मक नाटकों के विशेषज्ञों के अनुभवों पर आधारित निम्नलिखित सुझाव हैं। दुर्भाग्य है कि भारतीय बच्चों के साथ कार्य के संबंध में कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं है। वैसे तो दुनिया भर के सभी बच्चे एक जैसे होते हैं किंतु शिक्षा प्रणालियों के भिन्न होने के कारण, उन पर सृजनात्मक नाटक तथा अन्य कलाओं की प्रतिक्रिया भी भिन्न हो सकती है। भारत में, नेता के लिए आवश्यक होगा कि वह सृजनात्मक नाटक की बुनियादी तकनीकों को अपने समूह की आवश्यकताओं के अनुकूल ढाल ले। कभी-कभी तो, अनुभव तथा पृष्ठभूमि के भिन्न होने के कारण, एक ही आयुवर्ग के बच्चों में भी काफी अंतर होता है। प्रत्येक नेता को अपने समूह तथा उनकी

आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर, अपने कार्य की योजना बनानी चाहिए। उसे पाठ्यक्रम के संबंध में लचीला होना चाहिए तथा एक ऐसे विकासोन्मुख कार्यक्रम की योजना बनानी चाहिए जो सरल अभ्यासों से शुरू होकर, ऐसी प्रयोजनाओं तक पहुंचे जो बच्चों के चिंतन तथा कल्पना को चुनौती दे सकें।

हो सकता है कि बच्चे शर्मीले हों और आरंभ में, वे खुल कर न खेल सकें, किंतु धीरे-धीरे, उनका संकोच दूर हो जाएगा, विशेषकर यदि उन्हें भाग लेने के लिए विवश न करके तालबद्ध गति और मूक अभिनय में बहुत से अभ्यास करवाए जाएं। शुरू शुरू में उनके संवाद भी धीमे और अस्पष्ट हो सकते हैं, किंतु अभ्यास से वे भी ठीक हो जाएंगे। यदि आवश्यक हो तो उनके खुल कर बोलने की आदत को कुछ अभ्यासों द्वारा उत्साहित किया जा सकता है। इस संबंध में बहरी बूढ़ी औरत से बोलने, नदी के दूसरे छोर से किसी को बुलाने तथा तूफान में भी सुनी जाने वाली आवाज में बोलने के उदाहरण दिए जा सकते हैं। (भिन्न-भिन्न ध्वनियों, नगाड़ों तथा अन्य शब्द यंत्रों के प्रयोग से तूफान का आभास दिया जा सकता है)।

किसी भी आयु स्तर पर तथा सृजनात्मक नाटक के किसी भी कार्यक्रम में, शुरू से अंत तक, प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। यह केवल मूक अभिनय, तालबद्ध गति तथा नाट्य क्रीड़ा में रुचि जागृत करने के लिए ही नहीं, अपितु सृजनात्मक नाटक खेलने के लिए उपयुक्त मूड बनाने हेतु भी आवश्यक होता है। प्रोत्साहन के लिए कई वस्तुओं अथवा स्थितियों का प्रयोग किया जा सकता है, जैसे कि छुट्टी के दिन घटित कोई घटना; रोचक पदार्थ जिन्हें नेता किसी विशेष कहानी में रुचि पैदा करने के लिए प्रयोग करना चाहे; नाना चेष्टाओं में व्यस्त मनुष्यों एवं पशुओं के चित्र; ध्वनियों अथवा वाद्य यंत्र; समूह के किसी सदस्य की कोई विशेष उपलब्धि जिसे वह अन्य सदस्यों को बताना चाहे; नया खिलौना इत्यादि। तालबद्ध गति में उत्साहित करने वाले अभ्यास, मूक अभिनय अथवा आशुरचना सहित छोटे-छोटे दृश्य, कभी-कभी प्रोत्साहन में काफी सहायता दे सकते हैं।

यह याद रखना आवश्यक है कि सृजनात्मक नाटक का विकास जल्दी में नहीं किया जा सकता। एक समूह से कार्य आरंभ करवाने तथा उसमें मिलकर सोचने की आदत डालने के लिए, काफी लंबे समय तक, नियमित सत्रों की आवश्यकता होती है, बिल्कुल वैसे ही जैसे गणित में निपुण होने में समय लगता है। सृजनात्मक नाटक को किंडर गार्टन में शुरू करके, स्कूली कक्षाओं में निरंतर जारी रखा जाए, तो यह एक आदर्श स्थिति होगी। वैसे यह कार्य किसी भी आयु में आरंभ किया जा सकता है, अतः कभी शुरू न करने की अपेक्षा, देर से शुरू करना भी बेहतर होगा।

अनुभवहीन समूहों के लिए, चाहे वे किसी भी आयु वर्ग के हों, प्रारंभिक प्रशिक्षण आवश्यक है। उन्हें, तालबद्ध गति, मूक अभिनय तथा सरल कथाओं की रचना से शुरू करके, धीरे-धीरे चरित्र चित्रण तथा नाट्य क्रीड़ा की ओर बढ़ना होगा। नेता को, बड़ी आयु के बच्चों तथा प्रौढ़ों के इन समूहों के प्रोत्साहन के प्रति विशेष ध्यान देना होगा और इस बात को देखना होगा कि इसके लिए,

प्रयोग की गई सामग्री उनके लिए रोचक हो।

यहां इस बात पर जोर देना आवश्यक प्रतीत होता है कि नेता का कार्य, बच्चों का मार्गदर्शन करना, उन्हें अपने विचार प्रकट करने के लिए उत्साहित करना, उनके साथ मिलकर योजना बनाना तथा अभ्यास अथवा नाटक के दृश्य को निर्बाध रूप से पूरा करने का अवसर देना है। वह सुझाव तो दे किंतु क्रिया को स्वयं करके न दिखाए। वह इस बात का निरंतर प्रयास करे कि बच्चा नकल न करे, बल्कि अपने मनोभावों को स्वयं अभिव्यक्त करे। यदि आवश्यक हो तो बच्चे को अपने ढंग से अभिनय करने के लिए, निरंतर प्रोत्साहित करे। सृजनात्मक नाटक के प्रारंभिक सत्रों में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है और उसे तब तक जारी रखना चाहिए जब तक बच्चे इस प्रक्रिया के अभ्यस्त न हो जाएं।

एक ऐसे स्थान को ढूंढ़ने का प्रयत्न करना चाहिए जहां बच्चों को चलने-फिरने तथा अवसर के अनुसार यंत्रों से शोर मचाने, चिल्लाने, हंसने अथवा किसी भी प्रकार की आवाज निकालने की स्वतंत्रता हो। स्कूल के समय में ऐसा करना शायद आसान न हो। यदि इस काम के लिए सभा भवन उपलब्ध न हो, तो सृजनात्मक नाटक के सत्रों की व्यवस्था स्कूल के समय के बाद करनी होगी। हम एकांत की आवश्यकता को एक बार फिर दोहराते हैं ताकि बिना ताक-झांक तथा बाधा के चलाया जा सके। चूंकि सृजनात्मक नाटक को खेलने के लिए शरीर तथा मन दोनों की उच्च कोटि की सक्रियता आवश्यक होती है, अतः यह अच्छा होगा कि प्रत्येक सत्र की समाप्ति पर किसी शांतिदायक साधन को अपनाया जाए। उदाहरण के तौर पर, बच्चे निद्रालु पशुओं का रूप धारण कर सकते हैं अथवा ताल स्वर को धीमा किया जा सकता है ताकि बच्चे, "परियों को अशांत किए बिना", दबे पांव कमरे से बाहर निकल जाएं, अथवा थोड़ी देर बैठकर, आराम देने वाली क्रिया करें अथवा धीमे से कोई गीत गाएं। तत्पश्चात पढ़ाई को फिर से शुरू करने के लिए वे अपनी कक्षाओं में लौट सकते हैं।

सृजनात्मक नाटक की बुनियादी तकनीकें, सृजनात्मक नाटक के खेल पर टिप्पणियों तथा कक्षाओं का संगठन, (जिन पर पहले चर्चा की जा चुकी है) सृजनात्मक नाटक संबंधी कार्य के सभी स्तरों पर एक समान लागू होते हैं और इन्हें नोट कर लेना चाहिए। आठवें अध्याय में उल्लिखित सभी पुस्तकें, उस सामग्री के संबंध में सूचना देती हैं जिसका भिन्न-भिन्न आयुवर्ग के बच्चों के लिए प्रयोग किया जा सकता है। इस संबंध में, विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए, उन सभी पुस्तकों का अवलोकन करना चाहिए, क्योंकि यहां पर हम सीमित सुझाव ही प्रस्तुत कर सकते हैं।

I. पांच या छह वर्ष के बच्चों के साथ सृजनात्मक नाटक

(क) *रुचियां :* छोटे बच्चों की रुचि मुख्य रूप से, अपने आस-पास के परिवेश में ही होती है। दिन-प्रतिदिन की घटनाएं, छुट्टियां, पशु, माता-पिता तथा रिश्तेदार काल्पनिक, साहसिक कार्यों के लिए विख्यात परिचित पात्र, रेलगाड़ियां, वायुयान तथा मोटर गाड़ियों जैसे विषय उनके लिए रोचक

हो सकते हैं। छह वर्ष के बच्चों की, अपनी कहानियों की पुस्तकों के पात्रों में भी रुचि होती है।

(ख) *विशेषताएं :* वे सक्रिय होते हैं। उनकी एकाग्रता सीमित होती है किंतु उनमें उत्सुकता अधिक होती है। उन्हें ध्वनि तथा पुनरावृत्ति अच्छी लगती है। किंडरगार्टन अथवा स्कूल की पहली कक्षा, समूह के साथ उनका पहला अनुभव होता है और उस समय उन्हें समायोजन में सहायता की आवश्यकता होती है। उनके लिए सच्ची प्रशंसा तथा प्रोत्साहन भी आवश्यक है।

(ग) *क्रियाएं :* खिलौनों, चित्रों तथा ध्वनि उत्पादक यंत्रों जैसे पदार्थ, उनके प्रोत्साहन का साधन बन सकते हैं। इन वस्तुओं को सदा पास रखना चाहिए ताकि आवश्यकतानुसार उनका प्रयोग किया जा सके। क्रियाओं का आरंभ, भिन्न गति से बजाए गए ढोल तथा अन्य वाद्य यंत्रों की संगत पर, तालबद्ध गति से होना चाहिए, जिसमें शरीर की बड़ी क्रियाओं को प्रयोग किया जाए। इसमें चलने, दौड़ने, कूदने, ताली बजाने तथा सरपट दौड़ने का उल्लेख किया जा सकता है। बच्चे घरेलू कामकाज अथवा (काल्पनिक) गेंद उछालने जैसी क्रियाओं का सरल, मूक अभिनय कर सकते हैं। वे पशुओं का रूप धारण कर सकते हैं। "यदि दौड़ता हुआ बैल तुम्हारा पीछा करे, तो तुम क्या करोगे ?"—कुछ इस प्रकार के प्रश्नों से क्रिया करने के लिए प्रेरणा मिल सकती है। मदर गूज की छोटी तुकांत कविताओं अथवा ऐसे गीतों का प्रयोग किया जा सकता है जिनके साथ क्रिया करना संभव हो। नेता, या तो स्वयं गीत गा सकता है, या समूह में से कुछ बच्चे गीत गाते हैं तथा अन्य उसके अनुरूप क्रिया का प्रदर्शन करते हैं। घेरे में शांति से बैठ कर बच्चों द्वारा सुझाए गए विचारों से छोटी-छोटी कहानियां बनाई जा सकती हैं। ये विचार, नाना प्रकार की ध्वनियों से भी मिल सकते हैं तथा इस उद्देश्य से नेता कुछ इस प्रकार के प्रश्न पूछ सकता है, "यह ध्वनि तुम्हें क्या याद दिलाती है" नेता पहले स्वयं छोटी सी कहानी का ढांचा बनाता है और बाद में नेता और बच्चे मिलकर विचार-विनिमय द्वारा कहानी को विकसित करते हैं। इसे 'विचारों का खेल' खेलना कहते हैं। पीटर स्लेड ने इसका विवरण 'बाल नाटक का परिचय' नामक अपनी अंग्रेजी में लिखी पुस्तक में दिया है। बाल साहित्य से सरल एवं परिचित कहानियों का प्रयोग भी किया जा सकता है। इस संबंध में अंग्रेजी बोलने वाले नेता के लिए, विनिफ्रेंड वार्ड की इसी भाषा में लिखी *स्टोरीज टु ड्रामाटाईज* नामक पुस्तक सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से है। इस रचना में भिन्न आयु वर्गों के बच्चों के लिए उपयुक्त सामग्री का उल्लेख है तथा इसे बच्चों के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए साधन भी सुझाए गए हैं। इनमें से बहुत सी कहानियों का, बच्चों की भाषा में अनुवाद किया जा सकता है। इस प्रकार कुछ भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कहानियों का प्रयोग भी किया जा सकता है जिनमें पंचतंत्र, अकबर-बीरबल की कहानियां तथा बहुत सी अन्य लोक कथाएं उल्लेखनीय हैं।

(ग) *तकनीक :* सक्रिय पीरियड और इसके बाद अपेक्षाकृत शांति अथवा विश्राम, तत्पश्चात फिर सक्रियता—इस प्रकार सत्रों की व्यवस्था बच्चों के लिए सुविधाजनक रहती है। एक समय में एक

ही विचार को क्रिया रूप देना चाहिए जिसमें सभी बच्चे मिलकर एक ही क्रिया का अभ्यास करें। इन क्रियाओं में घोड़ों का सरपट दौड़ना, बुहारना, रस्सी कूदना, आदि का उल्लेख किया जा सकता है। यदि कमरा बहुत बड़ा हो, तो नाट्य क्रीड़ा को, एक बड़ा घेरा बना कर, उसमें सीमित रखा जा सकता है, अन्यथा समस्त उपलब्ध स्थान का स्वतंत्रता से प्रयोग किया जा सकता है। शर्मीले बच्चे क्रीड़ा के शुरू में शायद भाग न लें। उन्हें इसके लिए विवश नहीं करना चाहिए, बल्कि क्रीड़ा में उनकी दिलचस्पी पैदा करने का प्रयास करना चाहिए। सत्रों की योजना सावधानी से बनानी चाहिए, किंतु वह इतनी लचीली हो कि आवश्यकता पड़ने पर उसमें तबदीली की जा सके। बच्चों को सक्रिय, स्वतंत्र तथा प्रसन्न रखना चाहिए। इसके साथ ही ऐसे बच्चों पर नजर रखनी चाहिए जिनमें विशेष योग्यता के लक्षण दिखते हों अथवा जो असामान्य रूप से शर्मीले हों।

II. सात और आठ वर्ष के बच्चों के साथ सृजनात्मक नाटक

(क) *रुचियां :* वे अब भी अपने आस-पास के परिवेश में रुचि रखते हैं किंतु दूर की वस्तुओं तथा लोगों में भी उनकी रुचि पैदा हो जाती है। उनकी कल्पना विकसित हो जाती है तथा वे परियों की कहानियों तथा काल्पनिक सत्य से प्यार करते हैं। उन्हें वे कहानियां भी बहुत अच्छी लगती हैं जिनमें पशु, मनुष्यों की तरह आचरण तथा बातचीत करते हैं।

(ख) *विशेषताएं :* उनकी एकाग्रता तथा पेशीय तालमेल, पहले से बढ़ जाते हैं और वे छोटे-मोटे काम स्वयं कर सकते हैं। उनमें आलोचनात्मक योग्यता का आभास मिलने लगता है। वे नए अनुभवों, स्वतंत्र चिंतन की क्षमता तथा समूह की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए उत्सुक हो उठते हैं। उन्हें इस बात की शिक्षा मिलनी चाहिए कि सृजनात्मक नाटक के समूह में वे कैसा आचरण करें, अपनी बारी पर कार्यवाही में कैसे भाग लें, दूसरों की बात सुनें तथा अन्य सदस्यों के साथ तथा छोटे दलों में मिलकर काम करें।

(ग) *क्रियाएं :* इस आयु वर्ग में भी तालबद्ध गति के साथ काफी काम किया जा सकता है। पशु ध्वनियों तथा आशुरचित वाणी को प्रोत्साहित करना चाहिए, किंतु फिर भी क्रिया पर अधिक बल देना चाहिए। मूक अभिनय को और अधिक विकसित करना चाहिए तथा सूक्ष्म क्रियाओं का प्रयोग करना चाहिए। 'विचारों के खेल' पर आधारित पहले से लंबी कहानियों की रचना की जानी चाहिए। 'पात्र समूहों' का प्रयोग किया जाए, अर्थात बच्चे मिलकर मोटर कार अथवा दीवार का रूप धारण करें या फिर वे सैनिकों के समूह की भूमिका करें। इस आयु के बच्चे 'सिंड्रैला' जैसी परियों की सरल तथा विख्यात कहानियों अथवा 'अलीबाबा और चालीस चोर' जैसी कथाओं को खेलना पसंद करते हैं।

(घ) *तकनीक :* विचार-विमर्श के छोटे सत्रों की व्यवस्था होनी चाहिए। इनमें बच्चे बहुत से विचार प्रस्तुत करेंगे और यदि उन सबका प्रयोग न भी किया जा सके, तो भी उन पर पूरा ध्यान देना चाहिए। अत्यधिक आलोचनात्मक चर्चा की अपेक्षा यथोचित प्रशंसा एवं प्रोत्साहन अधिक उपयोगी हो सकते हैं। बच्चे ज्यों-ज्यों आत्मचेतना पर काबू पा लेंगे, उनमें भावों को अभिव्यक्त करने तथा एकाग्रता का स्पष्ट आभास मिलेगा। सत्रों को घनिष्ठ एवं एकांतिक बनाने के लिए माता-पिता तथा प्रेक्षकों को उसमें भाग नहीं लेना चाहिए। स्थान का रंगमंच के बिना स्वतंत्रता से प्रयोग करना चाहिए। परिवेश जैसे कि पेड़, पहाड़ तथा छत आदि को दर्शाने के लिए फर्नीचर का उपयोग किया जा सकता है।

III. नौ, दस और ग्यारह वर्ष के बच्चों के साथ सृजनात्मक नाटक

(क) *रुचियां :* इस वर्ग के बच्चे विशुद्ध नाटक तथा उच्च कोटि के चरित्र चित्रण में दिलचस्पी रखते हैं। यद्यपि कल्पित एवं पौराणिक कथाएं, परियों की कहानियां तथा वीर गाथाएं उन्हें भी अच्छी लगती हैं, पर खोजपूर्ण, खेलकूद तथा वैज्ञानिक विषयों की यथार्थ कहानियों की ओर भी उनका झुकाव रहता है।

(ख) *विशेषताएं :* उनमें पर्याप्त शारीरिक शक्ति होती है। वे कोलाहल प्रिय तथा अशांत होते हैं, किंतु यदि विषय उनकी रुचि के अनुरूप हो तो वे एकाग्र भी हो सकते हैं। उन्हें समूहों में काम करना अच्छा लगता है और वे क्लब बनाते हैं (जो इस संदर्भ में उद्दंड गिरोह का सभ्य पर्यायवाची शब्द है) लड़कियां अन्य लड़कियों के साथ को, तथा लड़के, अन्य लड़कों के साथ को पसंद करते हैं। लड़कों और लड़कियों को मिलजुल कर काम करवाना प्रायः कठिन होता है। वे बहुत से विचारों को प्रस्तुत करते हैं, और सार्थक विचार-विमर्श का आनंद भी उठाते हैं।

(ग) *क्रियाएं :* जैसा कि गत वर्षों में होता था, आज उसकी अपेक्षा अधिक लंबी तथा वास्तव में अच्छी नाट्य क्रीड़ा प्रस्तुत की जा सकती है; किंतु इस बात का ध्यान रखा जाए कि कथावस्तु बच्चों की रुचि के अनुरूप हो जैसे कि साहसिक कार्यों एवं वीरोचित घटनाओं से संबंधित कथाएं। बच्चों को मौलिक अथवा लिखित कथाओं पर आधारित नाटकों की संरचना का परिचय दिया जा सकता है। कृति में तालबद्ध गति का निरंतर प्रयोग, शरीर के अंगों में ताल मेल विकसित करने में सहायता देता है। इसमें अधिक विविधता का समावेश किया जा सकता है यदि बंजारों, समुद्री डाकुओं तथा अफ्रीकी आदिवासियों जैसे उद्दंड पात्रों के अनुरूप गति का प्रयोग किया जाए।

(घ) *तकनीक :* उपलब्ध स्थान का प्रयोग अब भी स्वतंत्रता से करना चाहिए, किंतु मेजों, बैंचों तथा मंचों से निर्मित, ऊंचे स्थानों का प्रयोग किया जा सकता है। यदि कमरे में रंगमंच हो तो उसका

अन्य स्थिति के रूप में इस्तेमाल हो सकता है। अभिनय के क्षेत्र में इस बात पर बल देना चाहिए कि अभिनेता, पात्र के साथ संपूर्ण तादात्म्य स्थापित करे और इसके लिए आवश्यक है कि पात्रों के अभिप्रायों, क्रियाओं तथा शब्दों को अच्छी तरह समझने के लिए, उन पर पर्याप्त चर्चा की जाए। थोड़ी-बहुत वेशभूषा कभी-कभी इसमें सहायक हो सकती है जैसे कि चोगा अथवा हैट जिन्हें कुछ पात्रों के विशिष्ट लक्षणों के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। कुछ रोचक पदार्थों पर रंगीन कागज चिपकाकर, आकर्षक बनाया जा सकता है। ऐसी वस्तुओं को कई तरह से इस्तेमाल करने के लिए सदा अपने पास रखना चाहिए। उनका रंग, बनावट और लंबाई अलग-अलग होनी चाहिए। यदि नाटक में लड़ाई के दृश्य हों, तो शस्त्रों के रूप में प्रयुक्त होने वाले पदार्थों के विषय में विशेष सतर्कता बरतनी चाहिए। दूसरी ओर, पताकाओं के प्रयोग से, कभी-कभी दृश्य अधिक प्रभावशाली बन जाता है, अथवा विशेष रूप से भिन्न कोई वस्तु उसे रोचक बना देती है। आशुरचनाओं पर पुनर्विचार करके उन्हें सुधारना चाहिए।

IV. बारह, तेरह तथा चौदह वर्ष के बच्चों के साथ सृजनात्मक नाटक

(क) *रुचियां :* इस समूह में बड़ी आयु के बच्चों को, सामाजिक समायोजन तथा परिवारिक संबंधों, निजी संस्थाओं से विशेष रूप से दिलचस्पी होती है। वे रहस्य तथा उत्तेजना में भी रुचि रखते हैं। शेक्सपियर जैसे रचयिता की कृतियों से ली गई शानदार पृष्ठभूमि वाली प्राचीन कथाओं से संबद्ध रोमानी आकर्षण (न कि रोमांचक प्रेम) का वे आनंद उठाते हैं। 'टेमिंग आफ दी श्रियु' से हास्यप्रद दृश्य, 'ए मिड समर नाईट्स ड्रीम' की रचना प्रक्रिया अथवा 'मैकबेथ' की जादूगरनियां, इस संबंध में अच्छे चुनाव कहे जा सकते हैं।

(ख) *विशेषताएं :* इस उम्र में आत्मचेतना विकसित होती है तथा बच्चों में अक्सर अंतर्बाधा की भावना पैदा हो जाती है। उन्हें ऐसी कहानियां चाहिए जो उन्हें उन आंतरिक भावों को व्यक्त करने का अवसर दें जिन्हें अंदर ही छिपा न रहकर व्यक्त होना चाहिए। उनकी किशोरावस्था की समस्याओं पर आधारित कुछ नाटकों को विकसित किया जा सकता है किंतु उनके लिए ऐसी भूमिकाओं को निभाना बेहतर होगा जो उनके व्यक्तित्व से सर्वथा भिन्न हों।

(ग) *क्रियाएं :* कविताओं अथवा कथाओं पर आधारित हास्यात्मक आशुरचनाएं तथा भिन्न देशों की लोक कथाओं के नाट्य रूपांतर से निर्मित कृतियां, (जिनमें क्रियाशीलता एवं शक्तिशाली पात्र हों) इस वर्ग के लिए अच्छी होती हैं, विशेषकर जब उनके पात्रों के चरित्र को बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया गया हो। ये पात्र प्रशंसा एवं सहानुभूति या फिर घृणा जाग्रत करते हैं क्योंकि वे सामान्य लोगों से अधिक बहादुर अथवा असामान्य रूप से स्वार्थी होते हैं। नार्वे जैसे अन्य देशों के पुराण शास्त्रों के वीरों की अथवा डिकेंस के 'क्रिसमस केरल' के स्क्रूज जैसे अभागे कंजूसों की कहानियां, इस

आयु वर्ग के बच्चों के लिए रोचक कथावस्तु जुटा सकती हैं। तालबद्ध गति भी महत्वपूर्ण है और यदि उसमें क्रिया शक्तिशाली या हास्यपूर्ण हो, तो वह आत्मचेतना के प्रतिकार में सहायता दे सकती है। धार्मिक कथाओं में प्रदर्शित आदर्शवाद भी इस आयु वर्ग को आकर्षित करता है।

(घ) *तकनीक :* इस आयु वर्ग के बच्चों को अब भी रंगमंच के प्रयोग से दूर रखना चाहिए। हां, मंच का प्रयोग अन्य स्थिति के रूप में किया जा सकता है। बच्चों से उच्च कोटि के चरित्र चित्रण तथा विस्तार सहित गति की आशा की जा सकती है। ज्यों-ज्यों उनकी रुचि बढ़ती है, कुछ अधिक वेशभूषा, अन्य पदार्थों तथा प्राकृतिक दृश्यों का आभास देने वाली सामग्री का प्रयोग किया जा सकता है।

V. औपचारिक नाटक का संक्रमण

यदि प्रारंभिक स्कूली वर्षों से ही बच्चों ने केवल सृजनात्मक नाटक का अनुभव प्राप्त किया हो, तो चौदह या पंद्रह वर्ष की आयु तक पहुंचने पर, वे लिखित नाटकों को रंगमंच पर खेलना चाहेंगे। जब तक सृजनात्मक नाटक का प्रयोग अधिक व्यापक नहीं हो जाता, अधिकतर भारतीय बच्चे, स्टेज पर प्रदर्शित, स्कूल की विभिन्न कार्यविधियों में भाग लेते रहेंगे। इस पुस्तक में, शुरू से आखिर तक, इस बात पर बल दिया गया है कि बाल नाटक का प्रयोग, दर्शकों के मनोविनोद के लिए नहीं, बल्कि बच्चों के विकास के लिए होना चाहिए। आशा की जाती है कि अध्यापक, विशेष रूप से बारह अथवा उससे कम आयु वर्ग के बच्चों के लिए, इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु कार्य करेंगे तथा सृजनात्मक नाटक का यथासंभव प्रयोग करेंगे, यद्यपि ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो बच्चों को रंगमंच पर प्रस्तुत करने की जोरदार मांग करते हैं। तेरह वर्ष से अधिक बच्चे, जिन्होंने सृजनात्मक नाटक का प्रशिक्षण प्राप्त किया हो, इस योग्य हो जाते हैं कि वे प्रारंभिक वर्षों में, अनौपचारिक नाटकों से प्राप्त किए गुणों को खोए बिना, लिखित नाटकों को स्टेज पर खेल सकें।

(क) *आशुरचित नाटक से लिखित नाटक की ओर :* बहुत सी मौलिक कहानियां तथा बड़े बच्चों द्वारा निर्मित नाट्य क्रीड़ाओं को लिखित नाटकों में विकसित किया जा सकता है। पहले, समूह द्वारा स्वीकृत, उत्कृष्ट पंक्तियों को लिख लेना चाहिए और इनका आशुरचित नाटक के कुछ भागों के साथ प्रयोग करना चाहिए। तब उन्हें लिखित नाटक पर सीधे ही, वैसी योजना के अनुसार काम करना चाहिए जैसे उन्होंने आशु रचित नाटक के लिए बनाई थी। ज्यों-ज्यों दृश्य आगे बढ़ते हैं, उन्हें आशुरचित संवादों के साथ खेलकर देखना चाहिए, किंतु जब वे उन्हें बार-बार खेलेंगे, उनके संवाद लिखित पंक्तियों के अधिक निकट आते जाएंगे।

यदि बच्चे लिखित नाटक पर काम कर रहे हैं तो भी आशुरचना उपयोगी हो सकती है, क्योंकि यह पात्रों को अच्छी तरह समझने में सहायता देती है। यदि कोई दृश्य ठीक तरह से न खेला

जा सके, तो बेहतर होगा कि उसे रोक दिया जाए, लिपि को एक ओर रखकर पात्रों से लिखित संवादों को शब्दशः याद करने की बजाए अपने शब्दों का प्रयोग करने को कहा जाए। इस प्रकार जब वे लिखित पंक्तियों को पुनः अपनाएंगे, तो उनका अभिनय अधिक स्वतंत्र एवं स्वाभाविक होगा।

(ख) *औपचारिक रंगमंच परिवर्तन :* पंद्रह से सत्रह वर्ष के बच्चों की, रंगमंच के सभी अंगों—उसके इतिहास, मंच प्रक्रिया, वेशभूषा, प्रकाश आदि में रुचि हो सकती है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ये सब कुछ यथासंभव सरल हो। पोशाकों का प्रयोग उतना ही करें, जिसमें बच्चों के लिए खुलकर अभिनय करना आसान हो। वेशभूषाओं के चुनाव का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वे पात्र विशेष को पहचानने में सहायता दे सकें। राजा की भूमिका निभाने वाले के लिए साधारण भारतीय पोशाक अथवा पायजामे के साथ मुकुट, राजदंड तथा चमकदार सामग्री से बने चोगे का प्रयोग किया जा सकता है। वातावरण को रंगीन तथा नाटक के लिए सही मूड बनाने के उद्देश्य से पोशाक का प्रयोग करना चाहिए, न कि अभिनय की कमी को पूरा करने के लिए। इसी प्रकार प्राकृतिक दृश्यों की अधिकता, भ्रांति को नष्ट कर देती है (जो नाटक के रसास्वादन के लिए आवश्यक हैं)। किसी दृश्य विशेष की ओर संकेत करने के लिए, क्रीड़ा स्थल के स्तर को बदला जा सकता है, जिसके साथ कुछ आवश्यक उपकरणों की व्यवस्था की जा सकती है। जंगल के लिए एक या दो वृक्ष तथा दुर्ग के प्रवेश मार्ग को निरूपित करने के लिए, एक या दो लाक्षणिक उपसाधनों के साथ मुख्य द्वार की व्यवस्था पर्याप्त होगी।

(ग) *सभी कलाओं के संश्लेषित रूप में रंगमंच :* संगीत एवं ताल का प्रयोग, सृजनात्मक नाटक में शुरू से ही किया जाता रहा है। सृजनात्मक नृत्य प्रारंभ से ही इसका अभिन्न अंग रहा है। सरल नृत्य नाटिका में भी इसका निरंतर प्रयोग होता है। अब अन्य कलाओं का भी बारंबार प्रयोग होने लगा है जैसे पोशाक में रंग भरना, मंच सज्जा तथा प्रकाश की व्यवस्था करना, विभिन्न पदार्थों को इस दृष्टि से चुनना कि उनका सर्वाधिक प्रभावशाली ढंग से प्रयोग किया जा सके; दृश्यों का चित्रांकन, विशेष प्रकार के साज सामान का निर्माण इत्यादि। यदि धन एकत्रित करने के उद्देश्य से सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए नाटक प्रस्तुत किया जाना है तो निर्माता को जनसंपर्क के सभी साधनों का प्रयोग करना होगा, जिनमें सार्वजनिक सूचना, टिकटों का विक्रय, रुपए-पैसे का हिसाब-किताब, दर्शकों एवं अतिथियों का स्वागत, अभिनंदन आदि शामिल हैं। नाटक तैयार करने के लिए जिस योजना तथा संगठन की आवश्यकता होती है, उसे जुटा पाना आसान नहीं है; अतः इस कार्य को तभी हाथ में लेना चाहिए जब बच्चे उत्तरदायित्व को निभाने और आवश्यक परिश्रम से पूरा लाभ उठाने के लिए तैयार हों। यदि इन किशोरों ने अपने प्रारंभिक वर्षों में सृजनात्मक नाटक का ठोस प्रशिक्षण प्राप्त किया है, तो वे नाटक के पूरे कार्यों को भली-भांति निभा सकेंगे। उनके अभिनय में चुस्ती तथा स्वाभाविकता दिखेगी क्योंकि यह उनका अंतःप्रेरित प्रदर्शन होगा, न कि प्रौढ़ों द्वारा थोपा

गया कोई उत्तरदायित्व।

निष्कर्ष

ऊपर की चर्चा से यह स्पष्ट हो गया होगा कि सृजनात्मक नाटक, केवल नेता के लिए ही नहीं, अपितु प्रशिक्षणार्थियों, चाहे वे बच्चे हों अथवा प्रौढ़, के लिए भी एक सृजनात्मक अनुभव है। इसके साथ ही नेता को प्रशिक्षण में विविधता एवं स्वतंत्रता लाने के बहुत से अवसर मिल जाते हैं। यदि कोई नेता सृजनात्मक नाटक के प्रशिक्षण को सार्थक बनाना चाहता है तो उसे इस विषय पर कुछ प्रामाणिक पुस्तकों को इकट्ठा करना होगा, चाहे इसके लिए उसे विशेष परिश्रम ही क्यों न करना पड़े। दुर्भाग्य से ये पुस्तकें विदेशों, विशेषकर अमेरिका तथा इंगलैंड में ही मिलती हैं। प्राधिकारियों को चाहिए कि वे इन पुस्तकों को, स्कूल के पुस्तकालयों और सरकारी संस्थाओं में उपलब्ध कराएं। कुछ ऐसी पुस्तकें संयुक्त राज्य अमेरिका की सूचना सेवा पुस्तकालयों में भी उपलब्ध हैं, जो आवश्यकता होने पर, प्रसंग के लिए प्रयोग की जा सकती हैं। ब्रिटिश पुस्तकें ब्रिटिश काउंसिल पुस्तकालयों से ली जा सकती हैं।

सृजनात्मक नाटक के अधिक विस्तृत अध्ययन के लिए, आठवें अध्याय में दी गई सूची में सम्मिलित पुस्तकों की सहायता ली जा सकती है।

4

कठपुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक की परियोजना तैयार करना

(क) परिचय

गत अध्यायों में हमने कठपुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक के लिए कोर्स को संगठित करने के मूल सिद्धांतों तथा पुतली नर्तन की पृष्ठभूमि पर चर्चा तथा सृजनात्मक नाटक का विश्लेषण किया है। हमने इस बात का भी उल्लेख किया है कि प्रत्येक कोर्स की रूपरेखा तैयार करते समय, उसके लिए निर्धारित समय, प्रशिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं तथा अन्य तत्वों को ध्यान में रखना चाहिए। इस अध्याय में, हम विशेष रूप से पुतलियों के निर्माण तथा सृजनात्मक नाटक के संयोजन की विधि को ध्यान में रखते हुए, कोर्स की योजना बनाने के लिए कुछ सुझाव देंगे। डंडे पर लगाए जाने वाले कागज के मुखौटों के निर्माण और उनकी प्रयोग विधि यथासंभव स्पष्टता से प्रस्तुत की गई है जिससे उन्हें बच्चों के साथ बनाया जा सके तथा नेता की सुविधा के लिए यदा-कदा टिप्पणियां भी दी गई हैं। पाठ्यक्रम का प्रारंभ, कठपुतली प्रायोजना के लिए कालावधि, पुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक पर अग्रवर्ती कार्य, पुतली रंगमंच की पृष्ठभूमि, सामग्री तथा प्रशिक्षण कोर्स की योजना से संबद्ध अनुभागों का उद्देश्य नेता को उस कोर्स के विभिन्न अंगों के प्रायोगिक रूप को अच्छी तरह समझने में सहायता देता है, जिसका उसने अपने समूह के लिए आयोजन करना है।

(ख) पाठ्यक्रम का प्रारंभ

बहुत से भारतीय समूहों में, चाहे वे बच्चों के हों अथवा प्रौढ़ों के, शर्मीलापन एक स्वाभाविक समस्या है। अतः उचित यही होगा कि कोर्स की शुरुआत कुछ इस तरह से की जाए कि वह समूह के लिए रोचक भी हो और उसमें सदस्यों को अधिक बोलने अथवा कुछ 'प्रदर्शित' करने की संभावना ही न हो।

1. यदि कुछ कठपुतलियां उपलब्ध हों, तो नेता उनकी संचालन विधि का प्रदर्शन कर सकता है। उसके पश्चात प्रत्येक सदस्य को उन्हें देखने तथा संचालित करने का अवसर मिलना चाहिए।

अधिक उपयुक्त होगा यदि प्रशिक्षणार्थी, ढोलक की थाप अथवा अन्य ध्वनि यंत्रों की ताल पर, पुतलियों की गति को नियमित करें। समूह के प्रत्येक सदस्य को उठने-बैठने तथा कमरे में चलने-फिरने के लिए उत्साहित करना चाहिए ताकि वे स्वच्छंदता का अनुभव कर सकें। हो सकता है कि आरंभ में, सदस्य हिचकिचाएं अथवा 'ठी ठी' करके हंसें। पुतली पात्रों द्वारा सुझाई गई, कुत्तों के भौंकने अथवा बिल्लियों की मयाऊं म्याऊं की ध्वनियों का यदि समूह के सभी सदस्य मिलकर अनुकरण करें, तो इससे भी वातावरण को सहज एवं स्वच्छंद बनाने में सहायता मिलती है।

2. कभी-कभी, (पुतलियों के) निर्माण की छोटी-सी समस्या, यदि वह बहुत सरल हो, प्रशिक्षण की अच्छी शुरुआत बन सकती है। इस संदर्भ में, छठे अध्याय में वर्णित लयबद्ध गति से संचालित पुतलियों का निर्माण उपयुक्त होगा। निर्माण कार्य पूरा होने पर ध्वनि आभासों के साथ इन पुतलियों की गति की जांच की जा सकती है। नृत्य एवं संगीत के साथ उत्सव मनाने के बहुत ही संक्षिप्त दृश्य प्रस्तुत किए जा सकते हैं। कभी-कभी नेता, आशुरचित छोटी सी कहानी का बयान करता है और उसी के अनुसार पुतलियां प्रदर्शन करती हैं।

3. प्रथम सत्र, सृजनात्मक नाटक के कुछ सरल अभ्यासों से शुरू किया जा सकता है, किंतु बहुत से बच्चों और प्रौढ़ों के लिए यह इतना नया होगा कि उन्हें, पुतलियों के निर्माण एवं संचालन संबंधी ऊपर दिए गए सुझावों से भी अधिक कठिन प्रतीत होगा। पहले सत्र में बच्चे तालबद्ध गति अथवा सरल मूक अभिनय को प्रौढ़ों की अपेक्षा अधिक पसंद करेंगे, विशेषकर यदि अभ्यासों का आरंभ उन गतियों एवं विचारों से हो, जिनसे वे पहले ही परिचित हों।

शरीर की साधारण गतियों से आरंभ किया जा सकता है जैसे कि बैठना और झूलना; तब खड़े होना; कमरे में भिन्न-भिन्न लय के साथ मार्च करना, घूमना तथा रस्सी कूदना। ध्वनि भी उपयोगी होती है। शुरुआत परिचित पशु ध्वनियों तथा फेरी वालों की आवाजों आदि से करनी चाहिए। दोपहर बाद मिलकर चाय पीने अथवा किसी पार्टी पर छोटे-छोटे समूहों में बातचीत करने जैसी सामूहिक क्रियाओं का सुझाव देकर, ऐसे अवसर जुटाए जा सकते हैं, जिनमें वे गीत, ध्वनि एवं थोड़ा-बहुत वार्तालाप एक साथ कर सकें। एक ऊंची चीख जो गीत की लय को भंग करने अथवा एक क्रुद्ध पशु का आकस्मिक आगमन, जो कई व्यक्तियों का पीछा करे, नाट्य क्रीड़ा को सजीव बना देता है। बच्चे सदा पशुओं का रूप धारण करके प्रसन्न होते हैं तथा प्रौढ़ अक्सर सुंदर भाव प्रदर्शन करके चकित कर देते हैं। नेता स्वयं छोटे-छोटे दृश्यों की आशुरचना कर सकता है अथवा छात्र इस संबंध में सुझाव दे सकते हैं, जिनसे गीत और ध्वनि के अभ्यास में सहायता मिल सकती है। उदाहरणस्वरूप एक किसान बीज बोता है जो विकसित होकर फलदार वृक्ष बन जाते हैं। पक्षी आते हैं और उसमें घोंसले बनाकर रहते हैं। फिर एक तूफान आता है और घोंसलों को जमीन पर दे पटकता है (सामूहिक शब्द आभासों को पैदा करने का यह बहुत ही अच्छा अवसर होगा) पक्षी

लौटते हैं, नष्ट हुए घोंसलों को देखते हैं और निराश होकर लौट जाते हैं।

4. कभी-कभी, विशेषकर जब समूह के सदस्य एक-दूसरे से परिचित न हों तो उन्हें आत्म परिचय देने का कोई सरल साधन सुझाया जा सकता है। प्रत्येक सदस्य बोर्ड पर अपना नाम लिख सकता है अथवा अपने नाम का बिल्ला बनाकर अपने कपड़ों पर टांक सकता है, तब सदस्यों को घूम-फिर कर सभी के नाम पढ़ने और उन्हें जानने के लिए थोड़े समय का अवसर देना चाहिए, यदि सदस्य अधिक शर्मीले नहीं हैं और बोलचाल में भाग ले सकते हैं तो नेता उनसे, उनकी रुचियों के संबंध में कुछ सामान्य प्रश्न पूछ सकता है अथवा किसी रोचक या असाधारण घटना को जानने की चेष्टा कर सकता है जो उस दिन उनके साथ घटी हो।

प्रारंभ कैसा भी हो, नेता को उस प्रत्येक अवसर का लाभ उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए जिससे समूह के सभी सदस्यों को किसी क्रिया में भाग लेने का मौका मिले। 'सृजनात्मक नाटक' संबंधी शेष सुझाव तीसरे अध्याय में दिए जा चुके हैं।

(ग) भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए अन्य अभ्यास

अगले सत्रों में मूक अभिनय समेत सृजनात्मक नाटक संबंधी अन्य अभ्यास किए जा सकते हैं। छोटी कथाओं की रचना की जा सकती है जिसकी नाट्य क्रीड़ा में समूह के सभी सदस्यों को भाग लेना चाहिए ताकि कोई एक व्यक्ति अपने आप को महत्वपूर्ण न समझने लगे। 'विचारों का खेल' भी खेला जा सकता है जिसमें नेता कहानी का आंशिक विवरण दे तथा सदस्य उसको विकसित करें। संगीत की कोई स्वतंत्र रचना, गति की स्वतंत्रता में सहायक हो सकती है, अथवा नमूने के तौर पर कुछ 'निर्माण' कार्य किया जा सकता है ताकि सदस्य सामग्री के चुनाव तथा प्रयोग में कुछ अनुभव प्राप्त कर सकें। शुरू-शुरू में यह प्रायोजनाएं बहुत सरल होनी चाहिए।

(घ) पुतली निर्माण तथा कथा रचना में समस्या

जब नेता महसूस करें कि पुतली निर्माण, नाट्य रचना तथा नाटक के प्रदर्शन की पूर्ण योजना को क्रियान्वित करने के लिए उपयुक्त समय आ पहुंचा है तो पुतलियों के बहुत से प्रकारों में से कोई एक चुन लिया जाए, जैसा कि पहले सुझाया गया है, किसी भी प्रकार की पुतली के सरल निर्माण का थोड़ा सा अनुभव अवश्य होना चाहिए। इसमें लयबद्ध गति से संचालित पुतलियों अथवा काल्पनिक आकृतियों का उल्लेख किया जा सकता है। हमने यहां, किंचित विस्तृत व्याख्या के लिए, लकड़ियों पर बंधे कागज के मुखौटों के निर्माण तथा प्रयोग की प्रक्रिया को चुना है। यह अपेक्षाकृत सरल प्रायोजना है, जिसे थोड़े समय में संपन्न किया जा सकता है तथा जिसमें ऐसे रोचक पात्रों के समूह को बनाया जा सकता है, जो नाट्य क्रीड़ा के लिए उपयुक्त माने गए हैं।

1. प्रोत्साहन तथा प्रारंभिक अभ्यास

निर्माण संबंधी बहुत से कार्यों के लिए, प्रोत्साहन की विशेष आवश्यकता नहीं होती क्योंकि मेज पर रखी हुई रोचक सामग्री का संग्रह ही आमतौर पर, रुचि को जागृत करने के लिए काफी होता है। अपितु, मुखौटों को बनाने के लिए चेहरे के सुदृढ़ डिजाइन की आवश्यकता होती है और इस कार्य को आरंभ करने से पहले कुछ प्रारंभिक अभ्यास करना ठीक रहेगा। बच्चों को फर्श पर बड़े गोले में अथवा कई छोटे दायरों में बिठा दीजिए। (यदि स्थान काफी हो तो उन्हें मेजों पर काम करने की सुविधा भी दी जा सकती है।) प्रत्येक बच्चे को कई बड़े कागज दीजिए, समाचार पत्र भी ठीक रहेंगे और यदि बिना छापे के अखबारी कागज हों तो और भी अच्छा होगा। उन्हें कोयले का टुकड़ा अथवा रंगीन या सफेद चाक भी दीजिए। इस बात का ध्यान रखिए कि बच्चे के पास, स्वतंत्रता से कार्य करने के लिए काफी स्थान हो ताकि वह हाथ को आजादी से घुमा-फिरा सके। यदि कुछ संगीत अथवा ध्वनि यंत्रों के प्रयोग से लय या ताल की व्यवस्था हो सके, तो बच्चों को काम करने में सहायता मिलेगी।

बच्चों को बताइए कि उनके सिरों का आकार कैसा है ? यह जानने के लिए वे एक-दूसरे को ध्यान से देखें और तब सिरों के आकार का, बिना लक्षणों के, मोटे तौर पर, चित्रांकन करें। प्रयास कीजिए कि वे बड़ी आकृतियां बनाएं। फिर ऐसा यत्न किया जाए कि उनके चेहरे पर, बारी-बारी हंसी, उदासी तथा भय के चिह्न दिख पड़ें और इस बात पर गौर किया जाए कि उन दशाओं में, उनके लक्षणों, विशेषकर उनके मुंह और आंखों में क्या परिवर्तन होता है। तब उन्हें कहिए कि वे लक्षणों को बिगाड़कर, बालों को कसके पकड़कर, कानों को खींचकर और इसी प्रकार की अन्य चेष्टाओं द्वारा, एक-दूसरे को मुंह चिढ़ाएं। प्रत्येक सदस्य इन हरकतों को कुछ समय के लिए स्वच्छंदता से करे। तत्पश्चात वह कुछ सदस्यों की इन भावाभिव्यक्तियों को, अपनी बनाई हुई आकृतियों में चित्रांकित करे। तब वे (सिर तथा चेहरे की) पहले से भी बड़ी अथवा विरूपित बुनियादी आकृतियां बनाएं और उनके आकार के अनुरूप लक्षणों को, बढ़ा-चढ़ा कर, चित्रित करें।

यदि समूह ने पांचवें अध्याय के पृष्ठ पर सुझाए गए व्यंग्य चित्रों को बनाने का पहले अभ्यास नहीं किया है, तो उसे ही प्रारंभिक अभ्यास के रूप में किया जा सकता है। समाचार पत्रों को काट कर त्रिविमीय (थ्री डाइमेंशनल) आकृतियां बनाना तथा उन्हें मोटे गत्ते पर चिपकाना अथवा टांकना, एक अन्य उपयोगी परियोजना हो सकती है। ये आकृतियां काल्पनिक हो सकती हैं किंतु इस बात का ध्यान रखना होगा कि उनका डिजाइन सब ओर से एक समान अच्छा हो क्योंकि मुखौटों के निर्माण की यह एक महत्वपूर्ण विशेषता है। लोग अक्सर चेहरे को सजाने-संवारने में ध्यान देते हैं और यह भूल जाते हैं कि सिर के दोनों ओर तथा पिछला भाग भी महत्वपूर्ण है और यह बात पुतली पात्रों पर विशेष रूप से लागू होती है।

यदि समूह को मुखौटों अथवा पूरी वेशभूषा से सुसज्जित मुखौटा पहने नर्तकों के चित्र

दिखाना संभव हो, तो उन्हें यह समझने में सहायता मिलेगी कि अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाने के लिए मनुष्यों एवं पशुओं के लक्षणों को किस प्रकार परिवर्तित तथा बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करना चाहिए।

सभी निदर्शी सामग्री तथा रेखाकृतियों को ध्यान से देखना चाहिए किंतु निर्माण कार्य आरंभ करने से पहले उन्हें हटा देना चाहिए ताकि उनकी हूबहू नकल न की जाए।

2. मुखौटे बनाना

(क) *आवश्यक सामग्री :* मुखौटे बनाने के लिए मोटा, भूरा (पार्सल आदि लपेटने का) कागज; हल्का कार्ड पेपर अथवा समाचार पत्र; भारी कागज के लिफाफों का प्रयोग किया जा सकता है किंतु उनकी आकृति में विविधता नहीं होगी, पैटर्न वाला (लपेटने वाला प्रिंटेड) कागज; (रंगीन मार्बल पेपर तथा चमकदार रंगों में टिशू पेपर; बहुत से पिन; कैंची; ड्राइंग पिन, 3/4 इंच से 1 इंच तक चौड़ा चिपकाने वाली कागज की टेप; बड़ी सूइयां तथा मजबूत काला धागा; फेवीकोल; मोवीकोल, सरेस तथा उसे रखने के लिए कांच की या चमकीली तश्तरियां तथा लगाने के लिए सलाइयां; डंडे, इनकी भिन्न किस्मों के लिए पांचवां अध्याय देखें)।

काम करने के लिए, मेज पर कागज अथवा अन्य सामग्री फैला दें और उपर्युक्त सामान को एक अन्य मेज पर रखे दें जहां से उन्हें आसानी से उठाया जा सके।

सरल रंगमंच के निर्माण के लिए भी सामान की व्यवस्था कर लेनी चाहिए। इसके लिए बांस के पोल के आसपास पिनों से टांका हुआ दस फुट लंबा वस्त्र चाहिए जिसे दोनों ओर दो व्यक्ति पकड़कर रख सकें। रंगमंच के लिए अन्य सुझाव सातवें अध्याय में दिए गए हैं।

(ख) जहां कार्य करना हो वहां कक्षा के विद्यार्थियों को मेज, कुर्सियों अथवा फर्श पर बिठा दीजिए। प्रशिक्षणार्थियों को समझा दीजिए कि उन्हें मनुष्य अथवा पशु का मुखौटा तैयार करना है जिसे एक डंडे के साथ बांधा जाएगा। यदि समूह ने पहले मुखौटों के चित्र न देखे हों, तो नेता, नमूने के तौर पर एक या दो मुखौटे बनाकर दिखाए और यह भी बताए कि उन्हें कैसे तैयार किया गया है। (जब छात्र उन्हें अच्छी तरह देख लें तो वह उन्हें वहां से हटा दें, नहीं तो समूह द्वारा उन्हीं की नकल करने की संभावना है) तदुपरांत वह कागज को मोड़ने तथा जोड़ने की विधि का प्रदर्शन करें, और बताएं कि कैंची की नोक से उसे कैसे गोलाकार बनाया जा सकता है, समकोण पर तह करके किस प्रकार एकार्डियन की तरह स्प्रिंगदार बनाया जाता है और फिर मध्य में चपटी शक्ल देकर और इस लाईन के साथ-साथ तह देकर, उसका किस तरह त्रिविमीय रूप बन जाता है। फिर उन्हें यह दिखाएं कि किस प्रकार इस आकृति को कागज की एक पट्टी के कोने पर बांध कर, ऊपर-नीचे किया जा सकता है। इसका सरल तरीका यह है कि कागज के एक टुकड़े में सुराख करके उसे इस तरह बांध या टांक दिया जाए ताकि वह धागे में मोती की तरह फिसल सके। समूह को यह भी बताएं कि मुखौटे के

कुछ अंग गतिशील होने चाहिए।

(ग) प्रत्येक छात्र को 12" X 18" आकार का कागज का टुकड़ा (भूरा कागज अथवा दोहरा किया हुआ समाचार पत्र का कागज अथवा हल्का कार्ड) दीजिए, (अथवा वह स्वयं एक चुन ले)। प्रत्येक छात्र से कहिए कि वह अपने कागज को मोड़कर एक आकृति बनाए चाहे वह अनियमित हो, बेलनाकार, शंक्वाकार अथवा अन्य आकार की हो, किंतु उसकी बनावट सरल हो ताकि कागज में अधिक सिलवटें न पड़ें अथवा वह कुचला ना दिखे। जब छात्र एक संतोषजनक आकृति को बना लें तो उन्हें अच्छी तरह जोड़ने और फिर त्रिविमीय रूप देने के लिए कहें।

(घ) लक्षणों को विकसित करने के लिए कहिए। हो सकता है कि जो हास्यास्पद आकृतियां उन्होंने पहले बनाई हैं, उनमें से इस संबंध में कुछ सुझाव मिल जाए। कोशिश इस बात की कीजिए कि लक्षणों का आकार बड़ा हो तथा त्रिविमीयता का गुण जितना अधिक उभर सके, उतना ही अच्छा है; नाक, आंखें तथा मुंह भी सतह से बाहर निकलते हुए अच्छे लगेंगे। ये लक्षण सिर की आकृति के साथ टांक या चिपका दिए जाने चाहिए। जब छात्र काम कर रहे हों, तो उन्हें बताइए कि वे केवल चेहरे पर ही नहीं अपितु उसके दाएं-बाएं और पीछे भी ध्यान दें। कानों, बालों, हैट (टोपी), गुलबंद, पगड़ी आदि पर समुचित ध्यान देने से डिजाईन की रोचकता सब तरह से बढ़ जाती है। जिस मेज पर सामान रखा है, छात्र वहां से अपनी आवश्यकतानुसार कागज तथा अन्य सामग्री ले कर इस्तेमाल कर सकते हैं।

नोट : जब समस्या के पहले दो चरणों की स्पष्ट रूप से व्याख्या कर दी जाए, तो उपलब्ध सामग्री की सहायता से, बच्चों को, अपने विचारों को स्वयं क्रियान्वित करना चाहिए। पुतली निर्माण के दो महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं—

(i) मुखौटे की बुनियादी रेखाकृति तथा लक्षणों के लिए रूप एवं रंग के उपयुक्त चुनाव से डिजाईन तैयार करना, तथा—

(ii) सामग्री के समुचित प्रयोग में अनुभव प्राप्त करना। अतः अत्यधिक सुझाव देकर समूह को इन अनुभवों से वंचित नहीं करना चाहिए। हां, नेता को यह देखते रहना चाहिए कि छात्रों के प्रयासों का अंतिम रूप कैसा होगा और यदि कोई छात्र पूरी तरह समझ पाने की स्थिति में न हो अथवा काम को संतोषजनक ढंग से पूरा न कर पा रहा हो, तो नेता को उसकी सहायता करनी चाहिए। इस संबंध में नेता को पहले से इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि छात्रों के लिए, कार्य संपन्न करने के हेतु जुटाई गई सामग्री एवं साधन उनकी प्रयोग क्षमता से बाहर न हों। इस परियोजना की पूर्ति आठ वर्ष या उससे अधिक आयु वाले बच्चे कर सकते हैं।

(ङ) जब मुखौटे तैयार हो जाएं तो उन्हें छड़ियों के साथ जोड़ा जा सकता है। यदि छड़ियां लकड़ी की हों, तो उस पर कुछ सरेस लगाइए और उसे सिर के अंदर घुसाकर, पीछे से बांध दीजिए। बाहर की तरफ से, इसे दो या तीन ड्राइंग पिनों से जोड़ लीजिए। यदि छड़ियां बांस की हों, तो ड्राइंग पिनों का प्रयोग बहुत कठिन होता है, ऐसी हालत में मुखौटे के अंदर की तरफ सरेस लगा कर तथा मुखौटे की भीतरी छड़ी के भाग के दोनों ओर गम पेपर की पट्टी लगा कर, दोनों को अच्छी तरह चिपका दीजिए। समाचार पत्रों अथवा नालीदार कार्ड बोर्ड की छड़ों को सरेस तथा गम पेपर से बांधा जा सकता है।

(च) ज्यों ही निर्माण कार्य समाप्त हो जाए, प्रशिक्षणार्थियों से कहिए कि वे मेज और फर्श साफ कर दें। कैंची तथा सरेस जैसी आवश्यक सामग्री को मेज पर डिब्बों में रखवा दीजिए तथा इस बात की अच्छी तरह जांच कर लीजिए कि पिन, ड्राइंग पिन तथा सूइयों जैसी चीजें फर्श पर बिखरी न रह जाएं। बचे हुए कागज के बड़े टुकड़ों को, जिनका भविष्य मे पुतली निर्माण के कार्य में प्रयोग हो सकता हो, अपने-अपने स्थानों पर संभाल कर रखवा देना चाहिए और छोटे टुकड़े रद्दी की टोकरी में फिंकवा देने चाहिए।

3. तैयार किए गए मुखौटों की पुतलियों का नर्तन

बच्चों को अपनी पुतलियों के साथ खेलने का अवसर दें। संगीत अथवा ध्वनि आभासों द्वारा दी गई लय के साथ उन्हें उपलब्ध स्थान में स्वतंत्रता से घूमने की छूट होनी चाहिए। ताल के लिए भिन्न गतियों जैसे तेज, धीरे, कोणीय एवं 'वक्र' गतियों का प्रयोग करना चाहिए। इसमें मार्चिंग अथवा जुलूस की गति भी हो सकती है। छात्रों को एक-दूसरे से बातचीत करने के लिए उत्साहित करना चाहिए। हो सकता है कि पात्र पुतलियां चल-फिर कर, अन्य पात्रों का अभिवादन करना चाहें अथवा छोटे दलों में बंटकर परस्पर वार्तालाप करना चाहें।

रंगमंच पर एक समय में थोड़ी सी पुतलियों का प्रदर्शन करना चाहिए। उन्हें कई छोटी-मोटी क्रियाएं करने का सुझाव दीजिए। उदाहरणतया, वे एक-दूसरे से मिलें तथा अभिवादन करें, अनुचर अपने स्वामी को झुककर नमस्कार करें, पुतली पात्र अपने स्वभाव अथवा चरित्र के अनुसार, तेज, धीरे, लंगड़ाकर, बड़े-बड़े अथवा छोटे कदमों से चलें। कुछ सामूहिक क्रियाओं का प्रदर्शन भी करना चाहिए, जैसे कि तीन पुतली पात्र साथ-साथ चलते हुए, सामने से आते हुए अन्य दल से मिलें। दर्शकों में यह उत्सुकता बनी रहनी चाहिए कि वे एक-दूसरे से क्या कहेंगे, क्या वे आपस में मित्र हैं अथवा उनमें कोई एक पात्र ऐसा है जिसे दूसरे पसंद नहीं करते ? क्या वह दल के साथ मिल जाएगा अथवा अपना रास्ता नापेगा ? जब रंगमंच पर कुछ सदस्य अपने कार्य में व्यस्त हों, तो समूह के अन्य सदस्यों को दर्शक बनकर, उन्हें देखना चाहिए और यदि आवश्यकता हो, तो ध्वनि आभास देकर उनकी सहायता करनी चाहिए। उनसे पूछिए कि क्या वे पुतलियां देख सकते हैं। यह बात भी

विचारणीय है कि पुतली पात्रों को स्टेज के अगले भाग से पीछे हटने की क्रिया को कैसे प्रस्तुत करना चाहिए। पुतलियों को समुचित ऊंचाई पर बनाए रखना पुतली नर्तकों के लिए एक कठिन समस्या होती है, अतः शुरू से ही उन्हें पुतलियों को पर्याप्त ऊंचाई पर प्रदर्शित करने की आवश्यकता से अवगत करा देना चाहिए। दर्शक भी प्रदर्शन के संबंध में कुछ विचार प्रस्तुत कर सकते हैं। उदाहरणस्वरूप जब दो पात्र वाद-विवाद में उलझे हों, तो वे एक धमाका पैदा करने की बात सोच सकते हैं। भयंकर आवाज सुनकर झगड़ते हुए दोनों पात्र सहसा चुप हो जाते हैं और दोनों मिलकर बच निकलने की बात सोचते हैं। इतने में एक दुष्ट पात्र, दबे पांव आकर उन्हें पकड़ लेता है। रंगमंच पर प्रत्येक छात्र को अपनी पुतली को संचालित करने का अवसर भी मिलना चाहिए और उसे प्रदर्शन को देखने तथा सुझाव देने की सुविधा भी प्राप्त होनी चाहिए।

4. नाट्य रचना

(क) बच्चों को पुतलियां हाथ में लेकर, अर्ध वृत्ताकार में बैठने के लिए कहें। नेता समूह की ओर मुंह करके बैठे। चूंकि इस सत्र में पुतली पात्रों पर चर्चा की जानी है अतः यह आवश्यक है कि प्रत्येक बच्चे को सभी पुतलियां दिखाई दें। प्रत्येक बच्चे से पूछिए कि उसकी पुतली किस पात्र का निरूपण करती है और तब कक्षा से पूछिए कि उन्हें कौन सा पात्र दिखाई देता है। उदाहरणतया एक बच्चे को कोई विकृत चेहरा, भूत की तरह दिखाई देता है तो, दूसरे को दैत्य की तरह; किसी अन्य को उसी में दुष्ट राजा का रूप दिख पड़ता है। कथा रचना की दिशा में, उनकी आम पहचान, पहला कदम माना जाता है। बच्चों को यह बता देना चाहिए कि वे नेता से मिलकर कहानी की रचना करेंगे। यदि कहानी की रचना के इस प्रथम अभ्यास के लिए, कक्षा बहुत बड़ी हो तो अच्छा होगा कि बच्चों को लगभग दस पात्र चुनने के लिए कहा जाए और फिर उन्हें इकट्ठा करके बच्चों को दिखा दिया जाए।

(ख) नेता को इस बात का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए कि नाटक के तत्व क्या हैं (देखिए तीसरा अध्याय)। वह समूह के समक्ष सरल शब्दों में उनकी व्याख्या करे। नाटक में, नायक या नायिका के रूप में, एक मुख्य पात्र होता है जो या तो किसी कठिनाई में है या जिसे किसी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। उसे उस कठिनाई से निकलना है अथवा अपनी समस्या का समाधान करना है। किंतु एक और ऐसा पात्र है जो यह नहीं चाहता कि नायक सफल हो। यही विरोध 'नाटकीय संघर्ष' को जन्म देता है। नाटक के आरंभ में ही हमें कठिनाई अथवा समस्या का पता लग जाता है। नाटक का कथानक, कई घटनाओं की सहायता से आगे बढ़ता है और नायक को बहुत सी बाधाओं का सफल मुकाबला करना पड़ता है। सभी तरह की संघर्षपूर्ण घटनाएं घटती हैं और चूंकि हम नाटक का उपसंहार नहीं जानते इसलिए हमारी उत्सुकता निरंतर बनी रहती है। संभवतया नायक बुरी तरह जख्मी हो जाए अथवा मरुभूमि में प्यास के कारण मौत के मुंह तक जा पहुंचे या बाढ़ में डूबते-डूबते

बचे। उसके कुछ मित्र उसकी सहायता करते हैं तथा विरोधी पात्र के साथी हानि पहुंचाने के यत्न में लगे रहते हैं। अंत में नायक की विजय होती है और इस प्रकार उसकी समस्या का समाधान हो जाता है।

(ग) मुखौटे पुतलियों के समूह से, बच्चे एक का चयन करते हैं जिसे मुख्य पात्र की भूमिका निभानी होती है। वे इस बात का निर्णय भी करते हैं कि उसकी समस्या क्या होगी। इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि नाटक सही रास्ते पर चले, नेता, छात्रों से कुछ प्रश्न भी पूछ सकता है। हो सकता है कि प्रश्नों के उत्तर में बच्चे बहुत से सुझाव दें। प्रत्येक सुझाव को ध्यान से सुनना चाहिए। यह आवश्यक नहीं कि वे सभी कहानी के लिए उपयुक्त हों, अतः नेता को अच्छे विचारों को चुनने में छात्रों का मार्गदर्शन करना चाहिए। उसे कुछ इस प्रकार के प्रश्न पूछने चाहिए जैसे कि "नायक का विरोध कौन करता है ?","नायक अपने मनोरथ में सफल न हो पाए, उसके लिए वह क्या प्रयत्न करता है ?","नायक की सहायता कौन करता है तथा कौन से पात्र विरोधी की सहायता करते हैं ?","नाटक में कितनी घटनाएं हैं और उनका स्वरूप क्या है ?" इनमें से प्रत्येक घटना, किसी एक बाधा पर आधारित होनी चाहिए। नायक को सफलता अधिक आसानी से नहीं मिलनी चाहिए; क्योंकि ऐसा होने पर, नाटक शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। दूसरी ओर, इस बात का भी डर है कि बच्चे नायक के लिए इतनी अधिक कठिनाइयों की कल्पना न करने लगें कि कथानक जटिल हो उठे। यदि नेता इन सभी बातों को समूह के सामने रखे, तो इस विषय में सहज ही सहमति हो सकती है कि नायक को सफलता कब और कैसे मिले तथा उसकी समस्या का समाधान किस प्रकार हो। यही नाटक का चरम बिंदु होता है, जिसके बाद नाटक को शीघ्र ही समाप्त हो जाना चाहिए।

जब विचार-विमर्श हो रहा हो तो नेता को चाहिए कि क्रियान्वयन के लिए जो मुद्दे निश्चित किए जाएं, उन्हें या तो वह स्वयं नोट कर ले या किसी बच्चे को लिखने के लिए कहे। तब तक, जिन पुतली पात्रों को नाटक के लिए चुना गया है, उनकी भूमिका निर्धारित हो जानी चाहिए। कइयों को अनुचरों, पहरेदारों, श्रमिकों अथवा नाटक में नायक तथा खलनायक के साथियों के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। कई बार नाटक में सभी प्रकार के मजाकियों को सम्मिलित करने की प्रवृत्ति होती है, किंतु यदि ऐसे पात्र कथानक को विकसित करने में सहायक न हो सकते हों, तो उन्हें शामिल नहीं करना चाहिए। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि नाटक की कहानी, बिना किसी विकर्षण के, नियमित रूप से आगे बढ़ती रहे।

(घ) नाटक की योजना बनाते समय, इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि कौन से ध्वनि आभास अधिक प्रभावी हो सकते हैं। सरल यंत्रों तथा ध्वनि उत्पादक उपकरणों के बक्से को सदा पास रखना चाहिए। यदि नाटक के प्रदर्शन के लिए समूह के थोड़े सदस्यों की ही आवश्यकता हो, तो ध्वनियों के उत्पादन का काम, दर्शक बच्चे कर सकते हैं। पशुओं की आवाजें, जादुई जंगल का

कोलाहल अथवा तूफान का शोर आदि तो वे मौखिक स्वरों से भी पैदा कर सकते हैं। कुछ पात्रों की गति को, ध्वनि आभासों की सहायता से अधिक नाटकीय बनाया जा सकता है। उदाहरणतया, दैत्य की मंद भयावह पदचाप को ढोल की हल्की थपथपाहट से दो लकड़ी के टुकड़ों को ठक-ठक करने अथवा पैरों के पटकने से, पैदा की जा सकती है। शुरू में इस आवाज को हल्का रखने और पात्र के स्टेज की ओर बढ़ने पर उसको धीरे-धीरे बढ़ा देने से, दर्शकों में उत्सुकता भी उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। नाटक को स्तरीय बनाने के लिए, जिन साधनों का भी सफलता से प्रयोग किया जा सके, वह महत्वपूर्ण होते हैं। अतः यदि कोई बच्चा ठीक समय पर उपयुक्त ध्वनि आभास देने से अधिक कुछ भी न करे, तो भी उसकी देन बहुमूल्य मानी जाएगी।

(ङ) जब नाटक की रूपरेखा तैयार कर ली जाए, तो भाग लेने वाले पात्रों पर एक बार फिर नजर डाल लीजिए। कुछ इस प्रकार के प्रश्नों द्वारा चरित्र चित्रण को तनिक और सुधारने का प्रयास कीजिए। "तुम्हारे विचार में इस व्यक्ति का स्वर कैसा होगा", "उसके बोलने का ढंग कैसा होगा", "यह पुतली राक्षस का निरूपण करेगी, उसके गरजने की आवाज कैसी होगी ?" समूह के सभी सदस्य, राक्षस की तरह गरजने का प्रयास करें। पात्रों में एक राजकुमारी, एक छोटी लड़की अथवा एक वृद्धा भी हो सकती है। सदस्यों को उन सबकी ध्वनियों का अनुकरण करने की चेष्टा करनी चाहिए। तत्पश्चात, बच्चे ठीक पात्रों में से एक या दो की क्रियाओं की भी नकल करें। यदि ठीक समझा जाए, तो इसे आशुरचित मंच पर भी किया जा सकता है।

(च) समूह की अगली बैठक से पूर्व, नेता को नाटक की क्रिया को लिख लेना चाहिए। इस अभिप्राय से नाटक को दृश्यों में विभाजित करके प्रत्येक दृश्य में होनेवाली घटनाओं तथा वार्तालाप के सारांश को नोट कर लेना चाहिए। वास्तविक संवादों को लिखना ठीक नहीं होगा। अब आपकी कार्ययोजना तैयार है, जब नाट्य क्रीड़ा को प्रस्तुत किया जाए, तो आवश्यकता होने पर, उसे संदर्भ के लिए, देखा जा सकता है।

5. कहानी की सृजनात्मक नाट्य क्रीड़ा

(क) बच्चों को अर्ध वृत्ताकार घेरे में बैठा दीजिए। यह एक नया सत्र है तथा इसमें, प्रासंगिक संदर्भ के सिवाय, पुतलियों का प्रयोग नहीं किया जाएगा। बच्चों ने जो नाट्य रचना की है, उसकी कार्ययोजना का पुनरावलोकन कर लीजिए और इस बात को भी निश्चित कर लीजिए कि बच्चों ने कार्यवाही को ध्यान से सुना है और कहानी को समझ लिया है। उन्हें बता दीजिए कि वे पुतलियों की बजाए, कहानी की नाट्य क्रीड़ा स्वयं करेंगे। ज्यों-ज्यों नाट्य क्रीड़ा आगे बढ़ेगी, वे पात्रों की क्रियाओं एवं संवादों की आशुरचना करेंगे; अच्छा होगा, यदि नाट्य क्रीड़ा आरंभ करने से पहले, कहानी से कुछ टुकड़े चुनकर, बच्चों को क्रिया तथा संवादों का कुछ अभ्यास करवा दिया जाए। यदि

दो पात्रों के बीच वार्तालाप किया जाना है, तो बच्चों के कई जोड़े, कमरे के अलग-अलग भागों में इसका अभ्यास कर सकते हैं अथवा समूह के सभी सदस्य वार्तालाप से संबद्ध क्रियाओं और संवादों का, एक साथ अनुकरण कर सकते हैं।

(ख) जब नेता यह अनुभव करे कि प्रारंभिक तैयारी पूरी हो गई है तो कहानी के प्रत्येक दृश्य की बारी-बारी अथवा संपूर्ण कहानी की लगातार नाट्य क्रीड़ा करनी चाहिए। प्रत्येक दृश्य में कुछ ऐसी बातें होंगी जिनका 'कहा जाना' कहानी के स्पष्टीकरण के लिए आवश्यक होता है, किंतु प्रत्येक बच्चे को इन बातों को अपने ही शब्दों में कहने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। जब बच्चे किसी एक दृश्य अथवा सारी कहानी की नाट्य क्रीड़ा कर रहे हों, तो यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि उन्हें यह सब अपने आप करने का अवसर दिया जाए। हो सकता है कि शुरू-शुरू में, वे थोड़ा लड़खड़ाएं किंतु वे एक-दूसरे के अनुबोधन से काम चला लेंगे। बच्चों को दृश्य, अपनी ही सूझबूझ के सहारे पूरा करने देना चाहिए। यदि वे बुरी तरह लड़खड़ा जाएं अथवा किंकर्त्तव्यविमूढ़ की स्थिति में पहुंच जाएं, तो नेता, मंच पर 'पात्र' के रूप में प्रविष्ट होकर, उनकी सहायता कर सकता है। यदि आवश्यक हो तो बच्चे क्रीड़ा को बीच में ही छोड़कर, अपने-अपने स्थान ग्रहण कर लें और संभवतया संवादों के साथ पूरी कार्य योजना का पुनरीक्षण करें।

(ग) क्रीड़ा के दौरान बाधा डालने की बजाए, यह अच्छा होगा कि बच्चों के अपने स्थान ग्रहण करने पर, नाट्य क्रीड़ा पर टीका-टिप्पणी की जाए। नेता के लिए इस प्रकार के प्रश्न पूछना प्रासंगिक होगा—"इस क्रीड़ा के संबंध में तुम्हें कौन सी बात अच्छी लगी ? क्या कुछ ऐसे पात्र थे जिन्होंने अपनी भूमिका को विशेष रूप से अच्छी तरह निभाया ? नाट्य अभिनय को सुधारने के लिए तुम्हारे विचार में क्या करना चाहिए ?" यह विचार-विमर्श बहुत लंबा नहीं होना चाहिए, किंतु नाट्य क्रीड़ा तथा उसके बाद विचार-विनिमय—यही प्रक्रिया साधारणतया समुचित होगी।

(घ) अब नाटक को एक अन्य पात्र वर्ग की सहायता से खेलना चाहिए, किंतु ये पात्र समूह के उन सदस्यों में से हों जो स्वेच्छा से अपने आप को पेश करें। पुतलियों के खेल को सृजनात्मक नाटक के रूप में खेलने का मुख्य लाभ यह है कि इससे बच्चों को आशुरचित संवादों एवं क्रियाओं पर मन लगाकर, पात्रों के साथ तादात्म्य स्थापित करने का अवसर मिलता है। कहानी को इतनी बार खेला जाए कि प्रत्येक बच्चा उसे अच्छी तरह समझ जाए तथा उसे, कम से कम, एक भूमिका निभाने का अवसर मिले; किंतु इस पर बहुत अधिक समय नहीं लगाना चाहिए क्योंकि बच्चों को इसे पुतलियों के खेल के रूप में भी खेलना है।

6. पुतलियों के साथ स्टेज पर कहानी की नाट्य क्रीड़ा

(क) बच्चों को अपनी पुतलियों के साथ, स्टेज पर नाट्य क्रीड़ा प्रस्तुत करने देना चाहिए। पहले, कदाचित उन बच्चों को पुतली नर्तन तथा उनकी भूमिका निभाने का अवसर मिलना चाहिए जिन्होंने पुतली पात्रों का निर्माण किया है, भले ही समूह के कुछ अन्य सदस्य इस कार्य को ज्यादा अच्छी तरह कर सकते हों। क्रीड़ा को शुरू करने से पहले यदि आवश्यक हो, तो बच्चों को अर्ध वृत्ताकार में बिठलाकर, कहानी का पुनरावलोकन कर लेना चाहिए।

(ख) पुतलियों के हस्त संचालन के संबंध में निम्नलिखित बातों का उल्लेख विशेष रूप से करना चाहिए। (इनमें से, कम से कम कुछ बातों का उल्लेख पहले किया जा चुका है, जब पुतलियों के निर्माण के बाद उन्हें स्टेज पर गतिशील करने की शिक्षा दी गई थी)।

केवल उस पुतली का संचालन करो जो बोल रही हो। अन्य पुतलियां निश्चल रहें।

पुतलियों को इतना ऊंचा रखो कि वे देखी जा सकें। खेल देखने वाले सदस्य इसे नियंत्रित कर सकते हैं।

प्रत्येक पुतली की गति का स्वरूप अलग होना चाहिए। पुतलियों को केवल, ऊपर-नीचे झटकते नहीं रहना चाहिए। उनकी गतियां सीमित होती हैं, अतः प्रत्येक गति सुस्पष्ट एवं सुनिश्चित होनी चाहिए।

क्रिया के लिए पूरे रंगमंच का प्रयोग करना चाहिए किंतु अधिकतर क्रिया स्टेज के अगले भाग में होनी चाहिए। यदि पुतलियों को अधिक पीछे जाना पड़े, तो उन्हें अधिक ऊंचा उठाकर रखना चाहिए।

यह निश्चित करने के लिए कि पात्र कौन सी दिशा से प्रवेश करें, जल्दी से एक पूर्वाभ्यास कर लेना चाहिए। दर्शकों की ओर मुख किए हुए पुतली नर्तक की दाईं तरफ दाईं दिशा मानी जाती है और बाईं तरफ बाईं। पुतलियां, नीचे से, स्टेज के केंद्र पर ऐसे आएं मानो शनैः-शनैः पहाड़ी पर चढ़ रही हों।

इन सब बातों की व्याख्या पर अधिक समय नहीं लगाना चाहिए। किंतु कहानी की जितनी अधिक व्याख्या की जाए, उतना ही अच्छा होगा। फिर जब आप उस पर चर्चा करेंगे, तो बच्चे संभवतया इन बातों को सहज ही समझ जाएंगे।

(ग) पुतली नर्तन के प्रत्येक प्रदर्शन के लिए, पात्र को बदल दीजिए तथा प्रत्येक सदस्य को किसी न किसी पात्र की भूमिका निभाने तथा पुतली संचालन का अवसर दीजिए। भाषा की ओर विशेष ध्यान देना होगा। भाषा की उपयुक्तता तथा विभिन्न पात्रों के लिए प्रयोग किए गए स्वर पर विचार-विमर्श कीजिए। यदि कोई बच्चा पात्र के अनुरूप भाषा का प्रयोग न करके, गंवारू भाषा का प्रयोग करता है, तो उसका संशोधन कीजिए। सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि भाषा में प्रवाह

बना रहे जो पुतली की क्रिया से मेल खाए। आशुरचित भाषा को भी नियमित करने का प्रयास कीजिए ताकि बच्चे केवल शब्दों का जाल ही न बुनते चले जाएं। पहले पहल बच्चे को बोलना शुरू करवाने में कठिनाई होती है और एक बार वे शुरू हो जाएं तो उन्हें रोकना कठिन हो जाता है।

7. परियोजना का विस्तार

यह कहना कठिन है कि इस परियोजना पर कितना समय लगेगा। यह इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चों की आयु कितनी है, सत्र कितने लंबे हैं तथा पुतलियों के खेल को सृजनात्मक नाटक के अनुरूप बनाने में कितना समय लगेगा। यदि बच्चों को, इस परियोजना से पूर्व नाट्य रचना का कुछ अनुभव है, तो परियोजना की कथा को बनाने में उन्हें कम समय लगेगा। अच्छा होगा यदि संपूर्ण नाटक के लिए, पुतलियों का निर्माण करने से पहले, बच्चे सृजनात्मक नाटक में पर्याप्त अनुभव प्राप्त कर लें। सामान्यतया, इस परियोजना को 45 मिनट के आठ सत्रों में संपन्न करना संभव होगा, यदि नेता इसे अच्छी तरह संगठित करे तथा इसके लिए निर्धारित समय का पूरा फायदा उठाया जाए। निर्माण कार्य के लिए अधिक लंबे सत्र लाभदायक हो सकते हैं किंतु परियोजना के अन्य भागों पर अधिक समय तक ध्यान केंद्रित करना बच्चों के लिए कष्टमय होगा।

(ङ) पुतली नर्तन तथा सृजनात्मक नाटक में आगामी विकास

कार्यक्रम में विविधता लाने के लिए, सृजनात्मक नाटक तथा पुतलियों के निर्माण संबंधी कार्य को बारी-बारी किया जा सकता है। मिसाल के तौर पर, पुतली निर्माण की ऊपर दी गई परियोजना को पूरा करने के बाद, कुछ समय के लिए ध्यान, सृजनात्मक नाटक पर केंद्रित करना चाहिए। यदि समूह के सदस्य स्वर, चरित्र चित्रण अथवा अभिनय जैसे तत्वों में अधिक कमजोर हैं, तो इन बिंदुओं पर विशेष बल देकर, लंबी कहानियों की नाट्य क्रीड़ा की जा सकती है। इस प्रकार के काम के लिए, बच्चों की किसी मनपसंद कहानी अथवा पंचतंत्र की लोक कथाओं में से किसी कथा की नाट्य क्रीड़ा की जा सकती है। यदि यह कहानी पुतलियों के खेल के लिए भी उपयुक्त हो, तो पुतलियों का निर्माण करके, उसे स्टेज पर खेला जा सकता है। ऐसा करते समय, प्राकृतिक दृश्यों की ओर अधिक ध्यान दिया जा सकता है। इसमें पुतलियों के कुशल संचालन तथा अधिक संवेदनशील चरित्र चित्रण का प्रयास भी करना चाहिए।

यदि समूह में 25 के लगभग सदस्य हों, तो उन्हें, दो या तीन दलों में विभाजित करके, प्रत्येक दल को अलग कहानी तथा पुतलियों के निर्माण का कार्य सौंप देना चाहिए। कार्य को सफलता से पूरा करने के लिए प्रत्येक दल के मार्गदर्शन हेतु कोई न कोई नेता होना चाहिए क्योंकि कार्यशाला के निर्देशक के लिए एक समूह को पूरा समय दे पाना, संभव नहीं होगा।

(च) पुतली नर्तन की पृष्ठभूमि-सामग्री

यदि स्लाईड अथवा अच्छी सचित्र पुस्तकें उपलब्ध हों और नेता उन्हें उपयुक्त समय पर छात्रों को दिखाए तो वे अत्यंत लाभदायक हो सकती हैं। इस विषय पर, भाषणों एवं चर्चा का स्तर इस बात पर निर्भर करेगा कि पूरे कार्यक्रम के लिए कितना समय निर्धारित किया गया है तथा कौन कौन सी सचित्र सामग्री उपलब्ध है। यदि समय सीमित हो तो बेहतर होगा कि चित्रों को देखने की बजाए, पुतलियों को बनाया जाए तथा सृजनात्मक नाटक खेला जाए। अलबत्ता विश्व के भिन्न भागों में, कलाकारों को पुतलियों की संरचना व निर्माण में जो परेशानियां आईं, छात्रों को उनसे अवगत कराना, उनके लिए बहुत उपयोगी होगा।

(छ) प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन एक सृजनात्मक अनुभव है क्योंकि इसमें इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि कुल उपलब्ध समय में से, सृजनात्मक नाटक पुतली निर्माण तथा उनके प्रदर्शन के लिए कितना-कितना समय दिया जाए, कार्य को समूह के आयुवर्ग के अनुकूल कैसे बनाया जाए, उपलब्ध स्थान की सीमा के अंदर कार्य विधि को कैसे चलाया जाए तथा उपलब्ध सामग्री का सबसे अच्छा प्रयोग कैसे किया जाए।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि चर्चा एवं क्रिया के संयोजन तथा बच्चों की कल्पना एवं चिंतन शक्ति को उद्दीप्त करने की नाना विधियों के प्रति सतर्कता द्वारा, प्रशिक्षण के प्रत्येक सत्र को विविध एवं सजीव बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए।

5

कठपुतलियों का निर्माण

(अ) परिचय

किसी किस्म के निर्माण के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि कक्षा की तैयारी सावधानीपूर्वक हो। स्वतंत्रता तथा अनुशासन के बीच एक प्रकार का संतुलन शीघ्र ही स्थापित कर लेना चाहिए। अनुशासन का मतलब यह नहीं है कि बच्चा कमरे में चल-फिर कर दूसरों के सृजनात्मक कार्य को न देखे अथवा मेज पर रखी सामग्री को प्रयोग के लिए अपने कार्य स्थल तक न ला सके। किंतु उसे न तो बातें करनी चाहिए और न ही बिना मतलब चीजों को छूना चाहिए। उसे कोई ऐसी बात भी नहीं करनी चाहिए जिससे उसके साथियों के कार्य में बाधा पड़े। चिंतन की स्वतंत्रता होनी चाहिए किंतु किसी को यह हक नहीं होना चाहिए कि वह अपने किसी नए विचार का ढिंढोरा पीटता फिरे। यदि सभी सदस्यों का ध्यान अपने निर्माण कार्य पर केंद्रित हो, तो अकसर कोई कठिनाई नहीं होती। यदि कुछ बच्चे अपने कार्य को ठीक ढंग से न कर पा रहे हों, तो उन्हें विशेष सहायता की आवश्यकता हो सकती है। प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान एवं प्रोत्साहन मिलना चाहिए और उसे भी अपने नेता तथा साथियों का आदर करना चाहिए।

निर्माण का नियत कार्य आरंभ करने से पूर्व, तैयारी के लिए किन्हीं विशेष अभ्यासों की प्रायः आवश्यकता नहीं होती। मेज पर रखी रोचक चीजें ही उत्सुकता को जागृत करने के लिए पर्याप्त होती हैं। यदि पहली समस्या सरल हो, तो किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं होती तथा बच्चे सहज ही काम में लग जाते हैं अलबत्ता, ऐसा काम आरंभ करने से पहले, जिसमें सिर और चेहरे बनाने की आवश्यकता हो, कुछ प्रारंभिक निर्देश सहायक हो सकते हैं। प्रत्येक छात्र को, पत्र एवं पत्रिकाओं से विभिन्न किस्म के लोगों के सिरों के चित्रों तथा व्यंग्य चित्रों को लाने के लिए कहा जा सकता है। उनकी आकृतियों तथा लक्षणों पर चर्चा की जा सकती है। इस बात की भी समीक्षा की जा सकती है कि व्यंग्य चित्रकार किस प्रकार कुछ लक्षणों को बढ़ा-चढ़ा कर और कुछ की बिल्कुल अनदेखी करके प्रस्तुत करता है। यदि कुछ पुतलियां उपलब्ध हों, तो उनके संबंध में भी चर्चा की जा सकती है। जैसे क्या उनके सिर अथवा लक्षण इतने बड़े हैं कि दूर से देखे जा सकें अथवा क्या पात्र की समुचित अभिव्यक्ति हुई है।

कागज की बड़ी शीट पर चाक या कोयले से सिरों के, स्वच्छंदता से रेखांकित चित्र बनाए जा सकते हैं। पशुओं तथा मनुष्यों, दोनों के सिरों को बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

विशेष रूप से प्रारंभिक समस्या को हल करने के लिए, हरसंभव बनी बनाई शक्लों का प्रयोग करना चाहिए। इस संबंध में गत्ते के छोटे-बड़े बक्सों, रबड़ के बालों, नारियलों, सूखे हुए, अलग-अलग आकार के कद्दुओं, टीन के डिब्बों, बाज़ार में मिलने वाली छोटी सस्ती टोकरियों, लकड़ी के चमचों, नारियल के खोलों की कड़छियों, आदि वस्तुओं (जिन्हें बिना अधिक कठिनाई के आवश्यकतानुसार प्रयोग के योग्य बनाया जा सके) का उल्लेख किया जा सकता है।

नौसिखियों के लिए यह विशेष रूप से आवश्यक है कि वह बिना प्रारंभिक डिजाइन बनाए, उपलब्ध सामग्री से सीधे ही पुतलियां बनाएं (ऊपर सुझाई गई स्वच्छंद रूप से रेखांकित आकृतियों पर चर्चा होती है और कई बार अनुपयुक्त होने के कारण वे एक ओर रख दी जाती हैं)। ज्यों-ज्यों पात्र का विकास होता है, डिजाइन करने वाला, कई तरह की वस्तुओं का निरंतर प्रयोग करता रहता है, जब तक कि वह मनचाही पुतली पात्र का निर्माण ना कर ले। इसके साथ ही भिन्न-भिन्न वस्तुएं अकसर नए विचारों को भी सुझाती हैं।

शिक्षक को सदा यह प्रयत्न करना चाहिए कि पात्र की पहचान के लिए उसके किसी विशिष्ट लक्षण की अभिव्यक्ति सरलता एवं साहस से करनी चाहिए। इससे बच्चों को बड़े पैमाने पर काम करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। यदि कुछ पुतलियां बहुत बड़ी बन जाएं तो भी चिंता न कीजिए, क्योंकि पुतलियों के संसार में भीमकाय दैत्य और राक्षस भी होते हैं। आमतौर पर बच्चों के कार्यों की आलोचना जितनी कम की जाए, उतना ही अच्छा है। इससे उन्हें अपने ही ढंग से पात्रों के निर्माण का अवसर मिलेगा। यदि प्रशिक्षण लेने वाले प्रौढ़ हों, तो प्रशिक्षक को सिर और लक्षणों के आकार का परस्पर संबंध, रंगों तथा पदार्थों का सम्मिश्रण, धड़, सिर, बाजुओं तथा टांगों में सही अनुपात जैसे डिजाइन के मूल तत्वों पर बल देने की आवश्यकता होगी। पुतली का सफल निर्माण, उसके भिन्न अंगों को जोड़ने की तकनीक तथा डिजाइन के सम्मिश्रण पर निर्भर करता है।

पुतली पात्रों को रचने के लिए मूल रूप से दो तरीके हैं : (1) एक सुझाव सामान्य वर्ग का दीजिए—जिसमें पशु, मुखौटे, उड़ने वाली वस्तुएं, समुद्र में विचरने वाले जीव-जंतु अथवा दिलचस्प लोग शामिल किए जा सकते हैं। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को कल्पना के बल पर स्वच्छंदता से मनचाही आकृति बनाने दीजिए। इस बात पर जोर मत दीजिए कि रचित पदार्थ वास्तविक दिखे। दरअसल, इस संदर्भ में यथार्थता को निरुत्साहित करना चाहिए। (2) दूसरे उपागम का संबंध, एक विशिष्ट नाटक के लिए समुचित किस्म की पुतलियों के निर्माण से है। इसका मतलब है कि निर्माण कार्य शुरू करने से पहले ही कुछ विशेष पात्रों को ध्यान में रखना होगा। नौसिखियों के लिए चाहे वे किसी भी आयु वर्ग के हों, पहला तरीका बेहतर रहेगा, क्योंकि यह कल्पना शक्ति को उभारने में योग देता है। थोड़े से अनुभव के बाद, निर्दिष्ट नाटक के पात्र बनाए जा सकते हैं जो पहले तरीके के अनुभवों के आधार पर ज्यादा अच्छे बनेंगे।

(ब) सामग्री

किफायत तथा सृजनात्मकता के प्रोत्साहन की दृष्टि से इस पुस्तिका में सुझाई गई सरल पुतलियों के लिए, सुलभ साधारण सामग्री और सभी किस्म के रद्दी सामान का इस्तेमाल किया जा सकता है। पुतलियां बनाने के लिए रोजमर्रा के सामान के प्रयोग की संभावना खोजने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें अपने संग्रह को समृद्ध बनाने के लिए सामान को इकट्ठा करते रहना चाहिए। इस संबंध में निम्नलिखित सूची संपूर्ण नहीं है। यह केवल बहुत सी किस्म के पदार्थों की सांकेतिक सूची है, जिनको प्रयोग में लाया जा सकता है।

1. कागज

समाचार पत्र, मार्बल पेपर, कार्ड पेपर, पार्सल आदि लपेटने में प्रयुक्त भूरा कागज, लपेटने का प्रिंटेड कागज (कई डिजाइनों वाला), 36'' चौड़ा लहरियादार कार्ड बोर्ड जिसे गोलाकार थान में से मीटर के हिसाब से खरीदा जा सकता है, रंगीन टिशू पेपर (जो अक्सर पतंगों के लिए इस्तेमाल होता है), क्रेप पेपर तथा मोटा भूरा गत्ता।

2. प्राकृतिक पदार्थ

बीज तथा फलियां, नारियल के खोल, कई प्रकार के गिरीदार सूखे फलों के खोल, जूट का कपड़ा, ताड़ के पत्ते, छोटी और बड़ी टहनियां, खोल, बांस, टोकरियां बनाने के लिए प्रयुक्त-सरकंडे, कई क़िस्म की सूखी घास, पत्ते।

3. बनी बनाई आकृतियां तथा फैंके गए पदार्थ

टीन, कागज के लिफाफे, टूथपेस्ट तथा सिगरेटों आदि के सभी आकार के डिब्बे और बक्से; उत्सवों पर सजावट के लिए इस्तेमाल किया गया कागज; गेंद, बोतलें, जुराबें, ऊन तथा सूती वस्त्रों के टुकड़े। शंक्वाकार गत्ते की तकलियां जिन पर बुनाई का धागा लपेटा जाता है। ये सभी उत्कृष्ट मूल पदार्थ माने जाते हैं।

4. छड़ियां

चूंकि सुझाई गई पुतलियों में से बहुत सी, छड़ियों अथवा दंडों से संलग्न होती हैं, अतः लकड़ियों की पर्याप्त मात्रा में व्यवस्था होनी चाहिए। कई स्थानों पर नर्म लकड़ी में से काटी हुई 36" x 3/4" x 1/2" आकार की छड़ियों का प्रयोग किया जा सकता है। बांस बहुत से साइजों में मिलता है, कई बार 3/4" व्यास के 36" लंबे बांस के टुकड़े भी मिल जाते हैं। यदि ये आकार में बड़े हों तो उन्हें आवश्यकतानुसार छोटे आकार में काटा जा सकता है। वृक्षों की शाखाएं यदि वे कुछ सीधी हों, तो इस्तेमाल की जा सकती हैं। यदि सूखी लकड़ी की व्यवस्था न हो, तो बच्चों को इनके प्रयोग के लिए

उत्साहित नहीं करना चाहिए, क्योंकि ये हानिकारक हो सकता है। समाचार पत्र की दो पूरे साइज की शीटों को यथासंभव कड़ाई से तिरछा रोल करके और किनारों को गोंद से जोड़ कर, काफी अच्छी छड़ियां बनाई जा सकती हैं। 36" चौड़े गोलाकार कागज में से 6" चौड़ी पट्टियां काटकर, उन्हें कड़ाई से रोल करके, तथा थोड़ी दूरी पर गम पेपर के प्रयोग द्वारा भी 'राड' बनाई जा सकती है। 1/2" या उससे भी कम व्यास के छोटे-छोटे बांस, छोटी दंड पुतलियों के लिए उपयुक्त होते हैं। छोटे सरकंडे का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। छाते की कमानियां छाया पुतलियों के लिए बहुत अच्छी होती हैं। ये कमानियां हस्त एवं दंड पुतलियों अथवा दंड पुतलियों के हाथों से संचालन के लिए भी सर्वथा उपयुक्त होती हैं। कुछ पुतलियों के लिए कड़े तार का प्रयोग भी किया जा सकता है।

5. अन्य सहायक सजावटी सामान

बटन, मनके, सितारे, शीशे, लेस (कागज तथा वस्त्र से बनी) साड़ी बार्डर, कृत्रिम पुष्प अथवा हार, रिबन, सजावटी सामान तथा आकर्षक रंगों अथवा बनावट की कोई भी सामग्री, कई तरह से इस्तेमाल की जा सकती है।

6. चिपकाने वाले पदार्थ तथा बंधक

ड्राइंग पिन, पेपर पिन, सूइयां तथा मोटा काला धागा, पोशाकों को सिलने के लिए रंगीन धागा, स्टेपलर, सुतली, सरेस (फेवीकोल या मोवीकाल बहुत अच्छे हैं किंतु महंगे हैं, चिपकाने के बहुत से काम आटे की लेई से किए जा सकते हैं) गम टेप (कागज) पुतलियों के निर्माण के लिए प्रामाणिक उपकरण हैं। फेवीकोल तथा मोवीकाल दोनों को कसकर बंद रखना चाहिए। चिपकाने के लिए लेई आटे से भी बनाई जा सकती है।

7. औजार तथा अन्य सामग्री

अधिकांश परियोजनाओं में औजारों की आवश्यकता नहीं होती है, फिर भी उन्हें साथ रखने की सलाह दी जाती है। विशेष रूप से रंगमंच के निर्माण के दौरान उनकी आवश्यकता होती है। एक छोटा हथौड़ा; चपटे सिरों वाली 1/2" लंबी कीलों समेत कुछ मिली-जुली कीलें, एक छोटी-सी दस्ती आरी, हाथ का बरमा (कुछ छोटे-बड़े बरमों के साथ); सरेस के लिए छोटी शीशे की या चमकीली तश्तरियां और उसे लगाने के लिए ब्रश या छड़ियां अथवा लकड़ी के साथ बंधा हुआ चिथड़ा, रेखांकन के लिए कोयला अथवा चाक–ये कुछ ऐसे औजार हैं जो आवश्यकता पड़ने पर, आसानी से उपलब्ध होने चाहिए। कई कैंचियों का होना तो और भी जरूरी है।

8. वस्त्र

भिन्न किस्मों और रंगों के वस्त्रों के कुछ सादे टुकड़ों को पास रखना अच्छा होगा। कुछ एक वर्ग

गज के, कुछ अधिक लंबे और कम से कम एक तीन-चार गज के लंबे टुकड़े का होना आवश्यक है, जिसे कामचलाऊ रंगमंच के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। अन्य वस्त्रों को, आवश्यकतानुसार पोशाकें बनाने के लिए खरीदना पड़ेगा।

9. रंग-रोगन

साधारण पुतलियों के निर्माण के लिए, रंग-रोगन की प्रायः आवश्यकता नहीं होती। ये सब कुछ गड्ड-मड्ड कर देते हैं और अक्सर अच्छी त्रिविमितीय कृतियां बिगड़ जाती हैं। सुस्पष्ट लक्षणों को, कागज, वस्त्र अथवा त्रिविमितीय वस्तुओं से विकसित किया जा सकता है और पेंट उन्हें कई बार धूमिल सा बना देते हैं। प्राकृतिक दृश्यों को तैयार करने जैसे विशेष कार्यों के लिए यदि अधिक स्थान पर पेंट लगाने की आवश्यकता हो तो पिसे हुए रंग को सरेस के साथ मिलाकर काम चलाया जा सकता है। टैंप्रा पेंट छोटे अंशों के लिए अच्छा होता है किंतु वह अधिक महंगा है। तेल पेंट का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(स) सामग्री की विन्यास व्यवस्था

1. कार्यस्थल

कक्षा के लिए काफी स्थान होना चाहिए और यदि हो सके तो अतिरिक्त वस्तुओं एवं पदार्थों को हटा देना चाहिए। छात्र अपनी पुस्तकें तथा बैग, कमरे में चारों ओर बिखेरने की बजाए एक निर्धारित स्थान पर रख सकते हैं। पुतलियों के निर्माण कार्य के लिए मेजों अथवा फर्श पर पर्याप्त स्थान होना चाहिए।

2. सामग्री की स्थापना

सारी सामग्री एक केंद्रीय मेज पर रखनी चाहिए और अलग-अलग वस्तुओं को बक्सों या ट्रे में तरतीब से रखना चाहिए। प्रत्येक सामान अलग बक्से या ट्रे में होना चाहिए। जैसे—गम टेप, पिन्न, स्टेप्लर, बड़ी सूइयां और काला पक्का धागा, सरेस के लिए तश्तरियां तथा सलाइयां एवं ब्रश जोड़ने एवं टांकने की सामग्री, औजारों तथा कैंची समेत सिलाई के सामान के लिए भी अलग-अलग ट्रे होनी चाहिए। बटन, सितारे आदि सजावट की तमाम छोटी-मोटी वस्तुओं को खंडों वाली ट्रे में रखना चाहिए अथवा उनके लिए छोटे-छोटे अलग डिब्बे होने चाहिए।

3. मेजों की सुरक्षा

जिन मेजों पर कार्य किया जाए, उन्हें समाचार पत्रों आदि से ढककर रखना चाहिए।

(द) सामग्री की देखभाल

1. भंडारण के लिए पेटी

यदि सत्रों के बीच में कमरे को ताला न लगाया जा सके तो सभी सामग्री को पेटी में ताला बंद करके रखना चाहिए।

2. मितव्यय

एक समय में केवल उन्हीं पदार्थों को बाहर रखना चाहिए जो नियत परियोजना के लिए आवश्यक हों। प्रत्येक सामग्री को यथासंभव आकर्षक ढंग से रखना चाहिए। सामग्री के किफायती प्रयोग पर बल देना चाहिए। कागज की बड़ी शीटों को, आधे या उससे भी छोटे टुकड़ों में काट लेना चाहिए, किंतु बड़े टुकड़े भी उपलब्ध होने चाहिए। बच्चों को, एक बड़ी शीट को बीच में से छोटे टुकड़ों में काटने से रोकना चाहिए। सामग्री के लिए नियत मेज पर काम करने की अनुमति किसी को भी नहीं देनी चाहिए, छात्रों को मेज से आवश्यक वस्तुएं लेकर काम के लिए अपने कार्य स्थल पर चला जाना चाहिए।

3. साफ-सफाई

कक्षा समाप्त होने से पहले छात्रों को मेजों तथा कमरे की सफाई के लिए कुछ समय देना चाहिए। अप्रयुक्त सामान को (यदि वह बाद में इस्तेमाल हो सकता हो) उनके पात्रों या ट्रे में रख दें और यदि काम का न हो तो रद्दी की टोकरी में फेंक दें। मेजों को एकदम साफ कर देना चाहिए और यदि उन पर सरेस अथवा पेंट लगी हो तो उसे गीले कपड़े से हटा देना चाहिए। फर्श को भी झाड़ पोंछ देना चाहिए और इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वहां ड्राइंग पिन, पेपर पिन अथवा कोई ऐसी अन्य चीज न पड़ी रह जाए जो नंगे पांवों के लिए हानिकारक हो सकती है। ब्रश तथा सरेस की तश्तरियों को धो डालें। यदि फेवीकोल अथवा मोवीकाल प्रयोग किए गए हों तो उनके ढक्कन कसकर बंद कर देने चाहिए।

(य) निर्माण के आधार पर विभाजित पुतलियों की किस्में

1. दंड पुतलियां

अन्य पुतलियों की तुलना में इनका निर्माण और संचालन अधिक सरल होता है। रंगीन कपड़े के ज्यामितीय आकार के कुछ टुकड़े तथा लकड़ियों के साथ लगाई गई कागज की झंडियां शीघ्र ही बनाई जा सकती हैं तथा उन्हें तालबद्ध गति के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। जब भिन्न ऊंचाई के व्यक्ति पर्दे के पीछे से पुतलियों का संचालन कर रहे हों तो दंड पुतलियां विशेष रूप से

उपयुक्त होती हैं। यदि पर्दा इतना ऊंचा है कि सबसे लंबा व्यक्ति भी इसके पीछे छिप जाता हो, तो सबसे छोटा बच्चा हस्त पुतली के संचालन के लिए बाजू इतना ऊंचा नहीं उठा सकता कि पुतली पर्दे के ऊपर से दर्शकों को दिख जाए। किंतु विभिन्न लंबाई के दंडों की सहायता से प्रत्येक व्यक्ति पुतली का सहज ही प्रदर्शन कर सकता है। यही कारण है कि पुतली की यह किस्म शैक्षणिक कार्य के लिए अधिक उपयोगी मानी जाती है। इसके अतिरिक्त इस किस्म की पुतलियों में सिर, बाजू और टांगों की गति को अधिक लचीला बनाया जा सकता है। इस किस्म की पुतलियों को सहारा देने तथा संचालन करने के लिए पूर्व में ब (4) में दिए गए विवरण अनुसार अलग-अलग प्रकार के दंडों का प्रयोग किया जाता है।

2. दस्ताना अथवा हस्त पुतली

ये हाथ के ऊपर चढ़ा ली जाती हैं। तर्जनी इसके सिर का तथा बीच वाली अथवा छोटी अंगुली हाथों का संचालन करती हैं। इनकी ऊंचाई तर्जनी के सिर से लेकर कुहनी तक की लंबाई के बराबर या उससे कम होती है। अन्य किस्म की पुतलियों के विपरीत, ये वस्तुओं को सहज ही उठा तथा घुमा-फिरा सकती हैं। ये नर्तक के बाजुओं की गति के साथ गतिशील होती हैं; जिसकी कलाई पुतली की कमर है; जो उसकी गति तेज भी कर सकता है और धीमी भी। इनके सिर अक्सर छोटे बनाए जाते हैं। दस फुट से अधिक दूरी से इन्हें देख पाना कठिन होता है।

3. हस्त तथा दंड पुतलियां

इसमें सिर एक डंडे के सिरे पर लगाया जाता है जो पुतली के कंधों के बीच से हो कर ऊपर की ओर निकलता है। ढीले-ढाले बाजू कंधों से लगाए जाते हैं और इन बाजुओं में कुहनियों तथा कलाइयों पर जोड़ होते हैं। इन्हें, हाथों तथा कुहनियों से संलग्न तारों से संचालित किया जाता है। इनके निर्माण के लिए रेखाचित्रों तथा निर्देशों के लिए बचेलडर तथा कोमर की पुस्तक 'द पपेट एंड प्लेज' देखें।

4. छाया पुतलियां

चपटी कटी हुई आकृतियां पर्दे के पीछे संचालित होती हैं और पीछे से रोशनी डाले जाने के कारण, पर्दे पर उनके छाया चित्र दिखाई देते हैं। इस किस्म की पुतलियों के कई भेद हैं जिनका विस्तृत विवरण 'आलिव ब्लेखम' की पुस्तक 'शेडो पपेट्स' में दिया गया है।

5. कठपुतली या धागा पुतलियां

आकृतियां धागों से संचालित होती हैं जो बहुधा एक नियामक के साथ संलग्न होते हैं। इनमें सरल पुतलियां भी होती हैं जो एक या दो धागों से संचालित होती हैं तथा जटिल भी; जो पशु अथवा

मनुष्यों की गतियों की बहुत अच्छी तरह नकल कर लेती हैं। किंतु धागों की व्यवस्था कितनी सरल ही क्यों न हो, वे सदा उलझ जाते हैं, अतः बच्चों के साथ काम करने के लिए, उनका प्रयोग अन्य पुतलियों की अपेक्षा कम होता है। अलबत्ता, ललित नृत्य गतियों अथवा दांव पेंचों के प्रदर्शन के लिए तथा तैरने या उड़नेवाले जंतुओं का अनुकरण करने के लिए उपयोगी होती हैं।

6. मेज पर स्थापित पुतलियां

एक ही मेज पर घुमाई-फिराई जाने वाली ये पुतलियां छोटे बच्चों के लिए विशेषकर सरल होती हैं। सृजनात्मक नाटक से पुतलियों के रंगमंच के संकेंद्रित क्षेत्र की ओर प्रगति उनके लिए अच्छा परिवर्तन माना जाता है। यदि मेज पर पर्याप्त स्थान उपलब्ध है, तो संचालकों के पास, दृश्य परिवर्तन के साथ पात्रों को स्थानांतरित करने में काफी सुविधा रहती है। सभी पुतली पात्रों के स्टेज पर बने रहने के कारण क्रिया में भी तारतम्य बना रहता है। इस तरह प्रयुक्त होने वाली पुतलियों की कुछ किस्मों का सुझाव छठे अध्याय में दिया गया है।

6

कुछ सरल पुतलियों का विवरण तथा रेखाचित्र

(अ) लय पुतलियां

ये प्रारंभिक परियोजनाओं के लिए अच्छी हैं, क्योंकि ये जल्दी बनाइ जा सकती हैं तथा इनकी गति को संगीत एवं लय के साथ नियमित किया जा सकता है।

1. डंडों की सजावट

यदि बांस तथा लकड़ी की छड़ियां अथवा 36" लंबे समाचार पत्रों को रोल कर डंडे बना लिए जाएं और कागज की झंडियों तथा रंगीन कागजों की कई तरह से तह करके उनके ऊपर चिपका दिया जाए तो हवा में भिन्न-भिन्न तरीकों से हिलाए-डुलाए जाने पर, उनसे रोचक नमूने बनते हैं। उन्हें किसी भी तरह के नृत्य का रूप दिया जा सकता है। किंतु यह नृत्य अमूर्त होना चाहिए, किसी परिचित नृत्य शैली का प्रतिरूपण नहीं। प्रिंटेड लपेटने वाले कागज अथवा रंगीन मार्बल पेपर को यदि टिशू अथवा क्रेप पेपर के साथ मिलाया जाए तो अच्छा होगा।*

2. कागज की लयात्मक पुतलियां

बीस मिनट में पुतली कैसे बनाई जाए ? यह एक ट्रिक के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है। इसका प्रयोग पुतलियों के संबंध में किसी वार्ता को रोचक बनाने के लिए भी किया जा सकता है। मोटे भूरे कागज अथवा हल्के कार्ड पेपर को लीजिए। यदि कागज कुछ हल्का हो तो 9" x 12" के टुकड़े बनाइए और यदि भारी हो तो 12" x 18" के। शिक्षक को सारे समूह के सम्मुख इस प्रक्रिया को प्रदर्शित करना चाहिए। यदि एक छोटा दल परियोजना को कार्यान्वित करता है तो उसके सदस्य कागज के टुकड़े करने में शिक्षक की सहायता कर सकते हैं। अन्य छात्र इस प्रक्रिया को ध्यान से देखेंगे।

---

* अन्य सुझावों के लिए 'बचेलडर तथा कोमर' की पुस्तक 'पपेट्स एंड प्लेज' में प्लेट संख्या 36 देखिए।
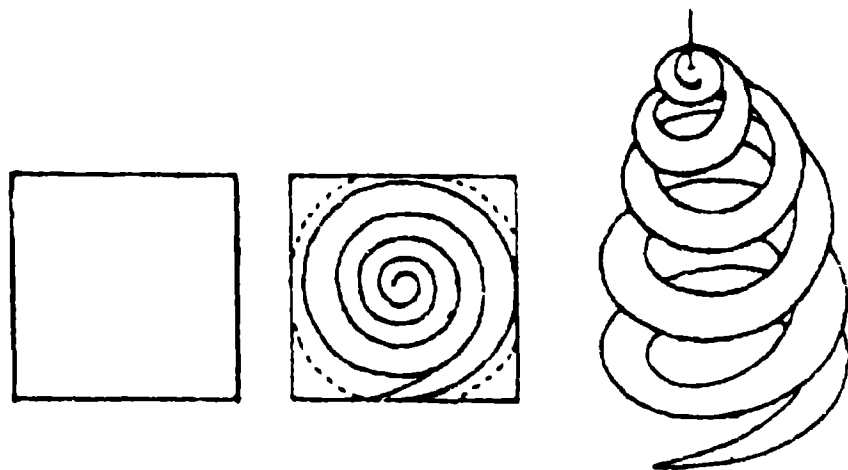
1. गतिशील अथवा प्रथम लय पुतली

2. लय पुतलियों के लिए दंडों की सजावट
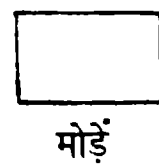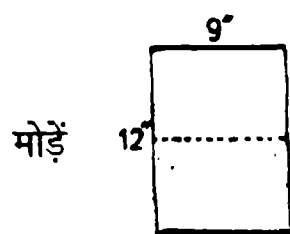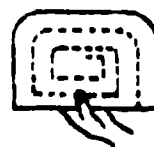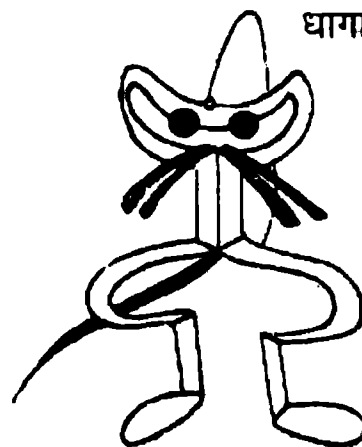
3. लय पुतली
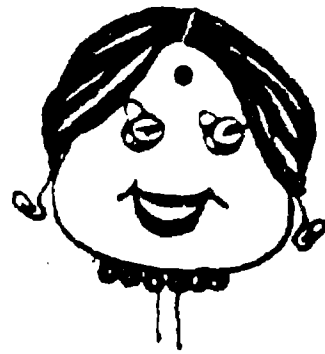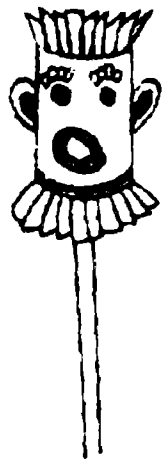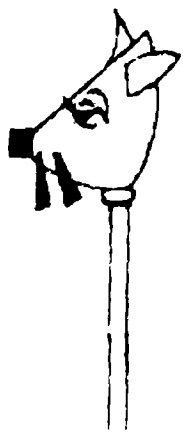
4. दंडों पर मुखौटे

5. गत्ते के बने चपटे मुखौटे
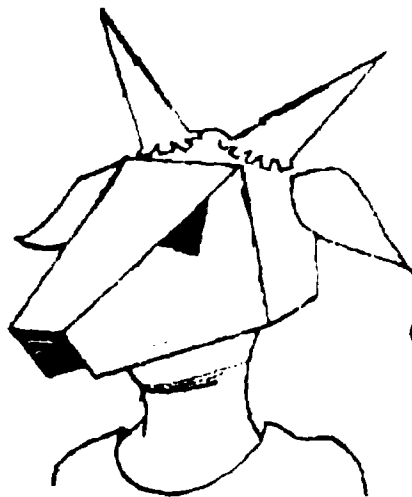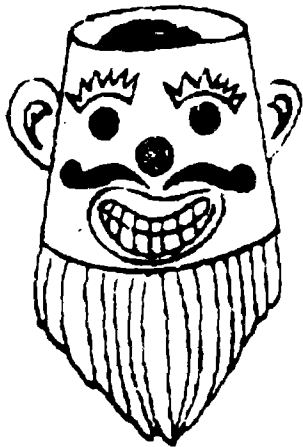
6. कंधों पर रखे मुखौटे

7. समाचार पत्र से बनी दंड पुतली

बिंदुओं के साथ साथ काटें
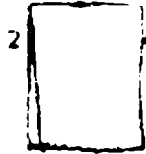
सिर के लिए

छोटी थैली को मरोड़कर आवश्यक
हो तो कागज भरकर
सिर का रूप तैयार करें
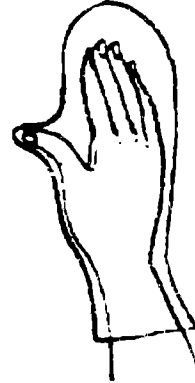
8. कागज की थैली से बनी दस्तानानुमा पुतली

9. हथेली पुतलियां

जुराब से बनी पुतलियां

सामग्री
कार्ड बोर्ड
के दोनों टुकड़ों को
पिन से जोड़ दें
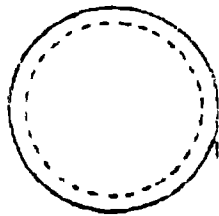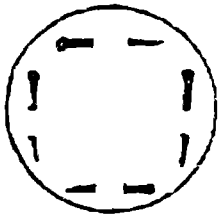
सामग्री के दोनों
टुकड़ों को कार्ड
बोर्ड पर सी दें
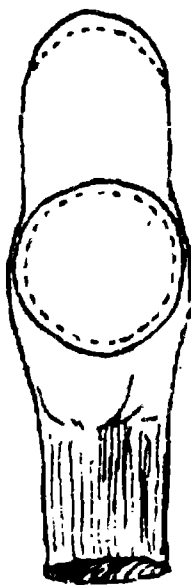
10. जुराब से बनी
पुतलियां

11. कोण पुतलियां

12. मेज पर स्थापित की
जाने वाली पुतलियां
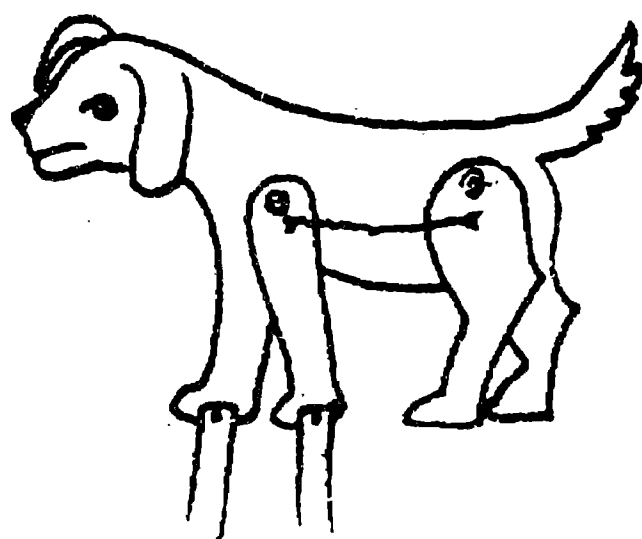
13. छाया पुतली
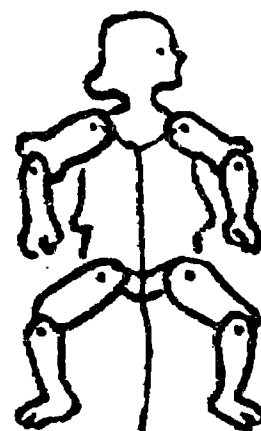
11 अ. धागों और दंडों के साथ छाया पुतली

बक्सों, ढक्कनों और कार्ड बोर्ड के प्रयोग से बनी पुतलियां
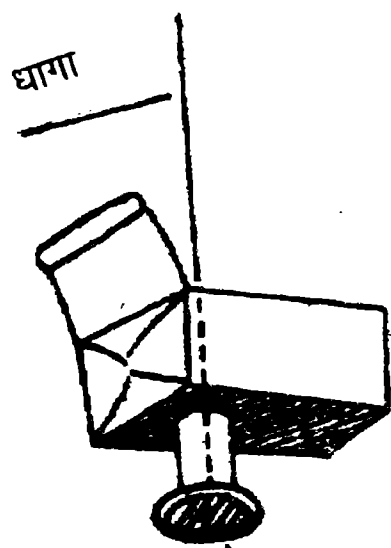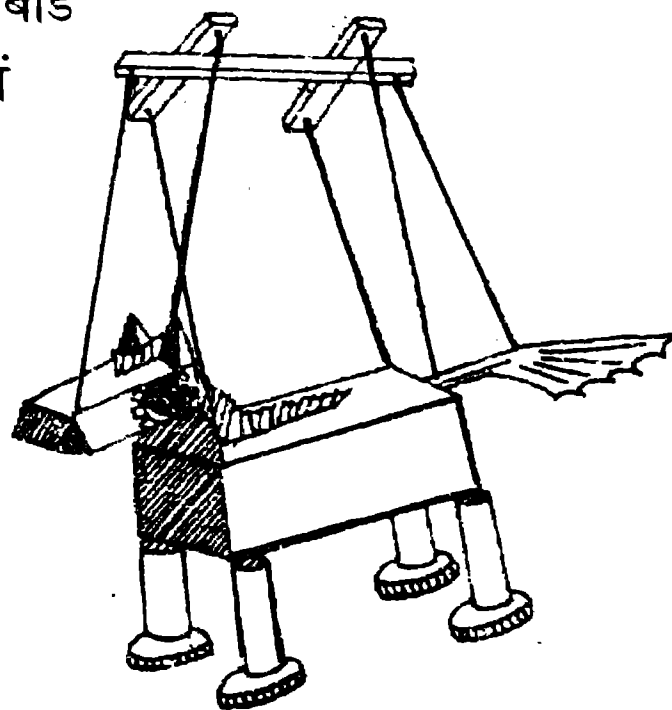
11 (ब) धागों से संचालित पुतली

(क) कागज को ठीक बीच में से मोड़ें।

(ख) आयताकार आकृति के किनारों में कुछ ऐसा हेर-फेर करें, ताकि कागज का प्रत्येक टुकड़ा, दूसरों से अलग दिखे।

(ग) इस तरह पकड़िए कि तह नीचे हो। दाएं हाथ वाले तह के कोने से कोई 1-1/4" अंदर की तरफ से कैंची से काटना शुरू कीजिए। यह कटाव 1-1/4" से कम भी हो सकता है यदि कागज छोटा हो। किनारे के साथ-साथ काटते जाइए और तह तक पहुंचने से 1-1/4" पहले रुक जाइए।

(घ) कागज को उलटा कीजिए और अब तह के समानांतर काटिए, पर किनारे तक मत जाइए।

(ङ) आकृति के केंद्र की ओर सर्पिलाकार काटते चले जाइए। कटते हुए कागज की चौड़ाई प्रायः एक जैसी रहनी चाहिए।

(च) अब तह को खोलें, बीच वाली तह को, उल्टी दिशा की ओर से निकालें ताकि लटकते हुए भागों को अलग-अलग रखा जा सके। इससे एक बड़ी खुली जगह निकल आएगी और एक केंद्रीय आकृति भी जो दोनों ओर लटकती हुई आकृतियों को जोड़े रखेगी। बुनियादी लय पैदा करने के लिए बनाई गई आकृति को ऊपर-नीचे करें।

(छ) कागज के भागों में भिन्न-भिन्न मोड़ों, तहों तथा परिवर्तनों की सहायता से कई तरह की आकृतियां बनाने का अभ्यास करो। ऐसा करते समय तुम्हें उड़ते हुए पक्षियों, मायावी लोगों तथा कई अन्य आकृतियों के बनने का आभास होगा। इस अभ्यास से बहुत सी बातें सीखी जा सकती हैं।

(ज) आंखों, पूंछों, सींगों अथवा आकृति की आवश्यकतानुसार अन्य अंगों का आभास देने के लिए, चमकीले कागज या वस्त्रों के छोटे-छोटे टुकड़ों का प्रयोग करो, किंतु खाली स्थानों को भरने की चेष्टा न करें और न ही पुतली को जटिल बनाकर उसके लयात्मक गुण को नष्ट करें।

(झ) संचालन के लिए सिर पर धागा लगाओ। कई बार आकृतियां पशुओं का आभास देती हैं। ऐसी दिशा में सिर से लेकर पूंछ तथा पुतली के किसी अन्य भाग तक एक ही धागा लगाने से इसे ज्यादा अच्छी तरह नियंत्रित किया जा सकता है। धागा इतना लंबा होना चाहिए कि नर्तक बिना झुके उसका हस्त संचालन कर सके। ज्यों ही पुतलियां तैयार हो जाएं, संगीत की ताल पर सारे कमरे में घूमकर उनके प्रयोग की सभी संभावनाओं का पता लगाना चाहिए। उनके लिए कथाओं का विकास किया जा सकता है। संवादों के आधिक्य वाली कहानियों की तुलना में ऐसी कहानियां अधिक अच्छी होंगी; जिनका ध्वनि एवं गति से काम चल जाए क्योंकि मूलरूप से ये लय पुतलियां हैं।

चेतावनी—इस निर्माण क्रिया के लिए आधे घंटे से अधिक समय मत दें, क्योंकि इससे पुतलियों के जटिल बनने की संभावना अधिक होती है।

(ब) मुखौटों वाली पुतलियां

1. डंडों पर मुखौटे

इनका निर्माण एवं संचालन सरल होता है और इनके बनाने में अधिक समय नहीं लगता।
आवश्यक सामग्री–भूरे रंग के मोटे कागज के बड़े-बड़े टुकड़े, हल्का कार्ड पेपर अथवा मोटा रंगीन कागज (प्रिंटेड लपेटने वाले कागज अथवा रंगीन मार्बल पेपर से अधिक मोटा होना चाहिए)। बुनियादी ढांचे के लिए अखबारी कागज की दुगुनी मोटाई का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। मुखौटे काफी बड़े होने चाहिए और उनका आकार 18" x 12" से कम नहीं होना चाहिए। ऐसी पुतलियों को बनाने के लिए कैंची, पिन, लेई अथवा गोंद, बड़ी सूइयां तथा मोटे काले धागे, कई बड़े मोतियों अथवा बटनों, रंगीन कागज के टुकड़ों इत्यादि की आवश्यकता होगी। सहारा देने वाले डंडों के लिए पृष्ठ 65 पर 'सामग्री' के नीचे संख्या 4 देखिए।
निर्माण

(क) मोटे कागज का एक टुकड़ा लो। इसे इस प्रकार गोलाकार बनाओ अथवा तह कर दो कि वह रोचक त्रिआयामी आकार का बन जाए। पिन लगाकर इसे टिकाऊ बनाओ।

(ख) आकार को भिन्न दिशाओं में घुमाकर देखो कि उससे मनुष्य, पशु अथवा कीड़े में से किसके सिर का आभास होता है।

(ग) मुखौटे केवल सिर होंगे, पूर्ण आकृतियां नहीं। बुनियादी आकार को, उपयुक्त नाक, कान आदि अंगों से विकसित करो जो दिखने में बड़े सुदृढ़ एवं त्रिआयामी हों और सिर के बुनियादी आकार से मेल खाते हों। इस बात की चेष्टा करो कि छात्र केवल चेहरे पर ही काम न करें बल्कि सिर के दाएं, बाएं, पीछे और ऊपर–सभी भागों पर काम करें।

(घ) जब सिर का हिस्सा भलीभांति तैयार हो जाए तो उसे डंडों से संलग्न किया जा सकता है। यदि डंडा लकड़ी का हो तो उसके सिर पर लेई या गोंद लगाकर सिर के पिछले भाग के अंदर से ड्राइंग पिन लगाकर उसे जोड़ दो। पशुओं के मुखौटों में जो बुनियादी तौर से चपटे होते हैं, नीचे से सुराख करके उसमें डंडा डाला जाकर और ऊपर से ले जाकर सिर की चोटी से जोड़ दिया जाता है। समाचार पत्रों अथवा कार्ड बोर्ड की तह देकर बनाए गए डंडों को पिनों तथा लेई अथवा गोंद की सहायता से जोड़ा जा सकता है और गम पेपर लगाकर पक्का किया जा सकता है।

2. कंधों पर पहनने वाले बड़े मुखौटे

भिन्न प्रकार के अनुभवों के लिए कागज के बड़े मुखौटे अच्छे होते हैं जो सिर पर पहने जाते हैं और कंधों पर टिके रहते हैं। इन मुखौटों के साथ रोचक नृत्य गतियों अथवा मूक अभिनय को प्रदर्शित

किया जा सकता है अथवा एक मुखौटे के साथ अन्य किस्म की पुतलियों का प्रयोग अधिक प्रभावशाली हो सकता है। इनके लिए आवश्यक सामग्री होगी—कागज के बड़े लिफाफे अथवा समाचार पत्र, हल्का कार्ड और यदि मुखौटे बड़े हों तो उन्हें सुदृढ़ बनाने के लिए अन्य उपयुक्त पदार्थ। किंतु वे इतने बड़े नहीं होने चाहिए कि उन्हें संभाला न जा सके। हो सकता है कि उन्हें टिकाऊ बनाने के लिए धागों का प्रयोग आवश्यक हो। कई बार बड़े मुखौटे रोचक होते हैं और इसके लिए कंधों को प्रतिभासित करने के लिए एक चपटा टुकड़ा जोड़ा जा सकता है। पूरी आकृति मत बनाइए, इतना भाग बनाना ही काफी होगा जिससे सिर तथा सहारा देने वाले डंडे के बीच निस्तरता दिखे। 36" ऊंची आकृतियां इस प्रकार बनाई जा सकती हैं।

(स) दंड पुतलियां

1. समाचार पत्र तथा गत्ते अथवा डिब्बों के सिर वाली दंड पुतलियां

समाचार पत्र की पूरी शीट से एक पट्टी काटिए जो पुतली का कंधा बनाने के लिए काफी हो। इसे गोलाकार बनाइए अथवा तह दीजिए। समाचार पत्र की दो दोहरी शीटों को, तिरछी ओर से (यथासंभव कसकर) गोलाकार बनाइए और इन्हें 'टी' के रूप में काट कर बांध दीजिए। सिर को उपयुक्त आकार और शक्ल के गत्ते के डिब्बे अथवा कार्ड पेपर से वर्ग, बेलन अथवा आयत के आकार में बनाया जा सकता है और उस पर कागज, बटन, छोटी डिब्बियों से नयन-नक्श बनाकर सुदृढ़ आयामी रूप दिया जा सकता है। बाजुओं के लिए कंधों के साथ सुदृढ़ सूती टेप लगाई जा सकती है; जिसके दूसरे सिरे पर हाथ सिले जा सकते हैं। पुतली का संचालन करने के लिए, हाथों के साथ, हल्के बांस की तीलियां, छाते की कमानियां या मोटा तार जोड़ा जाता है। इसके लिए झाडू की तीलियां भी काम आ सकती हैं। पोशाक के लिए कपड़े; क्रेप या पतला कागज प्रयोग में लाया जा सकता है। इस किस्म की पुतलियां ऐसे पात्रों के लिए उपयुक्त होती हैं जिन्हें टांगों की आवश्यकता नहीं होती तथा जिन्हें वस्त्रों से ढंक देने से ही काम चल जाता है।

2. नारियल के करछुल से बनी पुतलियां

विशेष रूप से दक्षिण भारत में, बांस के चपटे हैंडल से युक्त आधे नारियल के खोल से निर्मित करछुलें, उन दुकानदारों से सस्ते दामों में मिल जाती हैं जो बांस से बनी भिन्न-भिन्न वस्तुएं बेचते हैं। कागज की एक चपटी थैली, पुतली के गले के लिए लगभग एक इंच की लंबाई छोड़ कर हैंडल पर फिट कर दी जाती है। कंधों के लिए थैली के कोने नीचे की ओर तह कर दिए जाते हैं और आवश्यकता होने पर कमर के लिए उन्हें इकट्ठा किया जा सकता है। नारियल का खुला सिरा चेहरे के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। उस पर ऊपर से नीचे तथा दायें से बायें सुदृढ़ काले धागे गोंद से चिपका दिए जाते हैं ताकि नाक, कान आदि उनके साथ बांधे जा सकें। आंखों के लिए, चौड़ाई में चिपकाए जाने वाले धागे में लकड़ी के मोती पिरोए जा सकते हैं अथवा उन्हें अन्य पदार्थों

से बनाया जा सकता है। पहनावे के लिए वस्त्र, कागज या कपड़े से बनाए जा सकते हैं। इनके लिए टिशू अथवा क्रेप पेपर विशेष रूप से उपयुक्त है जिसके साथ विविधता के लिए कुछ प्रिंटेड तथा मार्बल पेपर का इस्तेमाल किया जा सकता है। यदि चलनशील बाजू बनाने हों तो पतली लकड़ी या बांस का टुकड़ा तिरछा करके हैंडल के साथ धागे से बांधा जा सकता है। ऐसी दशा में बाजू नीचे संख्या 3 में दी गई विधि के अनुसार टेप तथा कपड़े से बनाए जा सकते हैं अथवा तह किए हुए कागज से बने बाजू, कंधे के साथ, ढीले से टांके जा सकते हैं।

3. डंडे तथा कागज की थैलियों से बनी पुतलियां

मनुष्य पात्र अथवा पशु, केवल दो डंडों को 'टी' का आकार देकर बनाया जा सकता है। इसके लिए बांस के चपटे टुकड़ों, लकड़ी के टुकड़ों तथा वृक्ष की थोड़ी मोटी टहनियों का इस्तेमाल किया जा सकता है। यदि आवश्यक हो तो कंधों के लिए गत्ते का प्रयोग हो सकता है। शरीर, सिर और बाजुओं (और यदि पशु बनाए जा रहे हों तो उनके पंजों) के लिए अलग-अलग साइज की कागज की थैलियों का इस्तेमाल होता है। शरीर के लिए बीच वाली लकड़ी के कोने से 3" की लंबाई छोड़ कर थैली चिपकाई जाती है। छोटी थैली को मरोड़कर या तह देकर सिर का रूप तैयार किया जाता है। इसे कुछ स्थूल बनाने के लिए इसमें कुछ पतले या अखबारी कागज भर देने चाहिए। कागज की तंग थैलियों अथवा भूरा रैपिंग कागज, बाजुओं के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है जिन्हें कंधों के साथ ढीले से बांध देना चाहिए ताकि वे ऊपर-नीचे हो सकें। चमकीले कागज या कपड़े से बने हुए पहनावे के कुछ भाग पुतली को आकर्षक बना देते हैं। चेहरे के नयन-नक्श कागज, मोती, बटनों अथवा अन्य पदार्थों से बनाए जा सकते हैं। सरलता; इस प्रकार की पुतलियों का विशिष्ट गुण होना चाहिए।

4. लहरदार गत्ते से बनी दंड पुतलियां

बड़ी पुतलियां बनाने के लिए लहरदार कागज का प्रयोग उत्कृष्ट रहेगा। यह गत्ते के बड़े डिब्बों से अच्छा मेल खाता है जिन्हें सिरों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। ये पुतलियां गत्ते से भी बनाई जा सकती हैं। पूरी आकृतियां बनाने की आवश्यकता नहीं है। शरीर को इतना लंबा बनाया जा सकता है कि वह क्रीड़ा के स्तर से ऊपर अच्छी तरह दिखे। यदि चलनशील बाजुओं की व्यवस्था की जा सके तो उनकी क्रिया में स्पष्टता आ जाती है। 24" से 30" तक लंबी ऐसी पुतलियों के समूह का; निर्माण के लिए आयोजित एक प्रशिक्षण कोर्स में सफल प्रयोग किया जा चुका है।

गत्ते में से कटे हुए सीधे-सादे सिरों और शरीरों को डंडों से बांधा जा सकता है, जिनके लिए चुन्नटदार स्कर्टें अथवा गोल घाघरे, टिशू या क्रेप कागज से बनाए जा सकते हैं। ये लगभग 31" तक ऊंची हो सकती हैं और इनका वजन भी कम होगा।

(द) दस्तानानुमा अथवा हाथ की पुतलियां

1. कागज की थैली से बनी दस्तानानुमा पुतलियां

भूरे कागज की थैलियों को गले पर इकट्ठा कर लिया जाता है और वहां धागों से बांधकर पुतली के सिर और शरीर का रूप दिया जाता है। गले में इतना स्थान होना चाहिए कि संचालक तर्जनी उंगली को उसके अंदर डाल सके। थैली में सूराख कर लिए जाते हैं ताकि संचालक अपने अंगूठे और छोटी उंगली को बाहर निकाल सके अथवा कागज के हाथ बना कर थैली के साथ चिपकाए जा सकते हैं। रंगीन कागज, मोती, बटनों आदि से नयन नक्श बनाकर लगाए जाते हैं तथा पहनावे को कुछ सजावटी सामग्री के साथ आकर्षक बना लिया जाता है।

2. हथेली पुतलियां

ये पुतलियां प्रायः 12" x 16" की सादी सामग्री के टुकड़े से बनाई जाती हैं जिसे तह देकर 12'' लंबा और 8'' चौड़ा बना लिया जाता है। चारों उंगलियों को मिलाकर और अंगूठे को फैलाकर सामग्री पर हाथ रखिए। एक हल्की पेंसिल से हाथ का छाप लीजिए और लाईन से प्रायः 1/2'' हटकर सामग्री को काट लीजिए। हो सके तो मशीन से लाईन के साथ-साथ सिलाई लगा दीजिए। यदि हाथ से पक्की सिलाई हो सके तो वह भी ठीक रहेगी। तब बाल, आंखें, कान, मुंह तथा अन्य लक्षण (यदि आवश्यक हों) बनाकर सिर को पात्र का रूप दीजिए। यदि कलाई पर सामग्री में इलास्टिक सिल दिया जाए तो वह हाथ में सिर की पकड़ को मजबूत करने में सहायता देगा। गले की रेखा बनाइए और शेष सामग्री को आस्तीन का काम करने के लिए छोड़ दीजिए ताकि संचालक का बाजू दिखाई न दे। इस किस्म की पुतली, लक्षणों को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाने के फलस्वरूप काफी हास्यप्रद हो सकती है तथा व्यंग्यात्मक विषयों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त होती है। बड़े बच्चों और प्रौढ़ों को लक्षणों की गति के कारण यह अधिक रोचक लगती है, जिन्हें संचालक विकसित कर सकते हैं।

3. हस्त तथा दंड पुतलियां (अथवा दस्तानानुमा तथा दंड पुतलियां)

यह किस्म अधिक उन्नत प्रदर्शन के लिए बहुत अच्छी है क्योंकि यह दस्तानानुमा पुतली की कलाई की गति को एक दीर्घ बाजू से संयोजित करती है जिसे कंधे, कुहनी और यदि आवश्यक हो तो कलाई पर जोड़ा जा सकता है। बाजू की गति एक डंडे से नियमित होती है। इसमें पूर्ण विकसित शरीर का निर्माण किया जा सकता है किंतु यदि सरल आकृति अभीष्ट हो तो एक लकड़ी से संलग्न सिर को कंधे के टुकड़े में से गुजारा जा सकता है जिसे संचालक पकड़े रहता है। बाजुओं को कंधे के साथ बांधा जा सकता है जो लकड़ी अथवा भारी गत्ते का बना होता है।

4. जुराब से बनी पुतलियां

सूती जुराबों से कई प्रकार के पुतली पात्र बनाए जा सकते हैं जो आमतौर पर हास्यप्रद होते हैं, क्योंकि उनके मुंह बड़े होते हैं जिन्हें कार्ड में से वृत्त अथवा अंडे के आकार में काटकर और बीच में तह देकर बनाया जाता है। पुतलियों का संचालन, जुराबों को हाथ पर चढ़ाकर किया जाता है जिनमें अंगूठा, गत्ते के कार्ड के मोड़ से नीचे और आगे की उंगलियां ऊपर रहती हैं।

(क) मुंह बनाने के लिए प्रायः 3'' के व्यास के कार्ड का प्रयोग करें। लाल अथवा अन्य रंग की सामग्री के कार्ड से 1/4'' आकार के दो टुकड़े काट लें। कार्ड को इन दो टुकड़ों के बीच में रखें और चार जगह पिन लगाकर उसे पक्का कर लें, ताकि रंगीन सामग्री को कार्ड के साथ सिलते समय वह अपनी जगह से हिले नहीं। इसे बीच में से मोड़ दें।

(ख) जुराब का तलवा ऊपर की तरफ करके सीधा करो। एड़ी में, मुंह के लिए बनाए गए कार्ड के व्यास जितनी लंबी काट लगाओ। जुराब के उंगलियों वाले भाग को थोड़ा सा इस तरह काट दो कि शेष भाग पुतली का सिर बनाने के लिए काफी हो, जुराब को उलटाओ तथा मुंह के टुकड़े को ठीक स्थान पर रखकर जुराब के साथ इस तरह सिल दो ताकि टांके, सामग्री को कार्ड से जोड़ने के लिए की गई सिलाई के ऊपर आएं। जुराब के ऊपर के काटे हुए सिरे को भी सिल दें। अब जुराब को पुनः उल्टा कर सीधा कर लें।

(ग) सिर वाले हिस्से में कुछ भर कर उसे फुला दें। मुंह के जोड़ के ऊपर और नीचे भी वही सामग्री भरें किंतु उतनी अधिक नहीं कि मुंह की लचक ही नष्ट हो जाए।

(घ) आवश्यक नयन नक्शों को लगाओ। वे जुराब के साथ चिपकाए या टांके जा सकते हैं।

(ङ) मुंह के लिए कार्ड का साईज, जुराब के साईज के अनुकूल होना चाहिए। औसत आदमी की जुराब के लिए 3'' की गोलाई ठीक रहेगी। बड़े जुराबों के लिए कार्ड के बड़े टुकड़ों की आवश्यकता होगी और बच्चों के जुराबों के लिए छोटे टुकड़ों की। घोड़े या अजगर जैसे लंबे मुखों वाले प्राणियों के लिए जुराब की एड़ी के स्थान पर उंगलियों का प्रयोग संभव है, किंतु कार्ड का आकार बड़ा रहना चाहिए, नहीं तो मुख के टुकड़े को सिलने के पश्चात जुराब को उलटाना कठिन होगा।

(प) धागों से संचालित सरल पुतलियां

आमतौर पर धागों से संचालित पुतलियां, शुरू की परियोजनाओं में बच्चों तथा प्रौढ़ों के लिए भी उपयुक्त नहीं समझी जातीं, क्योंकि उन्हें बनाना अधिक जटिल होता है तथा उनका संचालन ऊपर वर्णित अन्य पुतलियों की अपेक्षा तनिक अधिक कठिन होता है। अलबत्ता, यदि उन्हें केवल दो या तीन धागों से संचालित, सरल बनाया जाए तो अन्य पुतलियों के मुकाबले में उनकी गति में एक विशेषता आ जाती है।

1. डिब्बों से बनी धागा पुतलियां

इन पुतलियों की परियोजना की सफलता के लिए सभी आकार और शक्लों के डिब्बे काफी मात्रा में उपलब्ध होने चाहिए। गत्ते से बनी अन्य वस्तुएं भी, जैसे नलियां, जिन पर टायलट पेपर लपेटा जाता है, उपयोगी होते हैं। पात्रों को उभारने के लिए हल्का कार्ड, रंगीन कागज तथा सजावटी सामान भी उपलब्ध होना चाहिए। संचालन के लिए मोटे काले धागों का प्रयोग ही ठीक रहेगा। नियामकों के लिए, जिनके साथ धागे जोड़े जाते हैं, बांस की छोटी अथवा अन्य हल्की तीलियों की आवश्यकता भी होगी। जहां तक हो सके, डिब्बों को रंग नहीं करना चाहिए। चूंकि इससे गंदगी फैलती है और इससे पुतलियां भी अक्सर अधिक आकर्षक नहीं बनतीं। बहुत से डिब्बों पर रंगीन एवं रोचक लेबल लगे होते हैं। यदि वे उपयुक्त न हों तो उन पर रंगीन कागज चिपकाया जा सकता है। बाजू, पैर, इत्यादि, कागज की पट्टियों को समकोण पर तह देकर बनाए जा सकते हैं ताकि उनमें लचक आ जाए। चलते समय पुतली के उचकने अथवा झटके खाने की 'आनुषंगिक गति' (जिसे धागों से सीधे नियमित नहीं किया जा सकता) के प्रभाव को पैदा करने के लिए अन्य साधनों को अपनाना चाहिए।

सरल, चपटे वियोजक (कट आउट) जैसे कि रेखाचित्र में दिखाए गए हैं, कार्ड बोर्ड से बनाए और रंगे जा सकते हैं तथा धागों को कंधों और कूल्हों के जोड़ों से बांधकर नीचे ले जाया जाता है ताकि बाजुओं और टांगों—दोनों को संचालित किया जा सके।

(फ) मेज पर स्थापित की जाने वाली पुतलियां

बहुत सी परियोजनाओं के लिए, विशेषकर जो छोटे बच्चों के लिए हों, उन सरल पात्रों का प्रयोग संतोषजनक रहेगा जो अपने आप खड़े हो सकते हैं तथा जिन्हें एक अथवा अधिक मेजों पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलाकर ले जाया जा सकता है। इसमें संचालक पूरी तरह दिखते तो हैं किंतु इससे खास फर्क नहीं पड़ता। यह तकनीक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह सृजनात्मक नाट्य क्रीड़ा से, पुतली रंगमंच पर उपलब्ध स्थान के संकेंद्रित प्रयोग की ओर बढ़ने के लिए बीच की कड़ी के समान है। मेज पर स्थापित पुतलियों के लिए, संचालक, पुतली के माध्यम से ही आशुरचित वाणी तथा गति का प्रयोग करने लगते हैं। यद्यपि संचालक गति की प्रक्रिया के लिए अब भी अधिकतर अपने हाथों और शरीर का प्रयोग करेंगे फिर भी रंगमंच पर प्रस्तुत की जाने वाली बड़ी गति तथा पात्रों के समूहीकरण की बुनियादी भावना को मेज पर रखी पुतलियों के माध्यम से ही प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

1. *पशु :* बक्सों, कार्ड बोर्ड तथा कागज से कई प्रकार की पशु पुतलियां बनाई जा सकती हैं। दो या तीन धागों से संचालित पक्षियों, कीड़ों तथा मछलियों का प्रयोग मेज पर स्थापित अधिक स्थूल पुतलियों के साथ किया जा सकता है और वे कथा की नाट्य क्रीड़ा को अधिक रोचक बना देती हैं।
2. *निर्जीव पदार्थों के रूप में पात्र :* पुतलियों के कार्य को आरंभ करने का (विशेषकर जब स्वतंत्र

गति संबंधी कार्य के लिए पुतलियां उपलब्ध न हों) श्रेष्ठ तरीका यह है कि गमलों, बर्तनों व बच्चों के पहनने के वस्त्रों तथा पैंसिलों, खाली बक्सों, टीन के डिब्बों इत्यादि सभी किस्म के निर्जीव पदार्थों को इकट्ठा कर लिया जाए। उनके विषय में कुछ कहानियों की रचना कीजिए (ऐसा करने के लिए सृजनात्मक नाटक पर अध्याय देखिए)। टूटे हुए, बेकार बर्तन, चबाई हुई पैंसिल अथवा फटी हुई कमीज़ के कष्ट को ध्यान में रखकर उनके दृष्टिकोण से कहानी बनाने का यत्न कीजिए।

3. *निर्जीव पदार्थों से निर्मित पुतलियां :* किसी भी भारतीय बाजार में उपलब्ध, चीनी की बनी बहुत सी साधारण वस्तुओं से पुतली पात्र बनाए जा सकते हैं, जरूरत है तो बस इतनी कि बहुधा कागज से तथा कभी-कभी अन्य पदार्थों से चेहरे, हार अथवा हैट बनाकर उन पर चिपका या लगा दिए जाएं। उनमें कइयों से मनुष्यों का तथा दूसरों से पशुओं अथवा विलक्षण काल्पनिक जीवों का आभास मिलेगा। पहले की तरह, इन पर भी कहानियों की रचना की जा सकती है और मेज पर नाट्य क्रीड़ा प्रस्तुत की जा सकती है।

4. *डिब्बों से निर्मित, मेज पर स्थापित की जाने वाली पुतलियां :* पुतलियों के सिरों को प्रभावी ढंग से बनाने के सरलतम उपायों में से एक यह है कि उन्हें भिन्न कार्ड बोर्ड के डिब्बों से बनाया जाए और धड़ वाला हिस्सा बनाए बगैर उन्हें मेज पर स्थापित की जाने वाली पुतलियों के रूप में इस्तेमाल किया जाए। सुदृढ़ चेहरों को डिजाइन करने के लिए यह एक बहुत ही अच्छा अभ्यास है और यदि डिब्बे, भिन्न साईजों और शक्लों के हों तो बहुत से ऐसे पात्र बनाए जा सकते हैं जिनसे नाटकों की रचना की जा सकती है।

5. *बोतलों से निर्मित, मेज पर स्थापित की जाने वाली पुतलियां :* कागजों में ठूंसकर भरे हुए कपड़े के टुकड़े को, बोतल के सिरे के आसपास बांधकर सिर बना लिया जाए और वस्त्रों या कागज से वेश तैयार कर लिया जाए तो एक आकर्षक आकृति बन जाएगी जो मेज पर खड़ी की जा सकेगी और संचालित भी की जा सकेगी।

(ब) छाया पुतलियां

ये मूलतया चपटी पुतलियां होती हैं जो पीछे से रोशनी डालकर पर्दे पर संचालित की जाती हैं ताकि दर्शक पुतली की छाया देख सकें। वे अक्सर साधारण श्याम छाया मूर्तियां होती हैं किंतु उन्हें कई तरीकों से रंगीन बनाया जा सकता है। बहुत सी त्रिआयामी पुतलियों से, विशेषकर जो कागज से बनाई गई हों (पूर्व वर्णित लय पुतलियों की तरह) रोचक छाया चित्र बनते हैं, जिनमें ऐसी गहराई होती है और जो सफाई से कटी हुई छायाकृतियों में नहीं मिलती। चपटी आकृतियों के साथ, भिन्न प्रकार के पार-वस्त्रों का प्रयोग भी किया जा सकता है। इसके लिए जिलेटिन जैसे पारदर्शी प्लास्टिक

का इस्तेमाल किया जा सकता है, जिसका प्रयोग थियेटर में रंगीन प्रकाश के लिए होता है। इसके लिए एक अच्छी बुनियादी सामग्री, इस्तेमाल की हुई एक्स रे फिल्म जो अस्पताल से प्राप्त की जा सकती है। इसके साथ अन्य पदार्थ आसानी से संलग्न किए जा सकते हैं।

1. सरलतम छाया पुतली

कोई भी आकृति जिसकी रूपरेखा रोचक हो—वह मनुष्य हो या पशु, वर्णमाला का कोई अक्षर हो, पत्ती हो या यंत्र—उसे लकड़ी से बांधकर छाया पुतली के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। इस आकृति में गांठ नहीं लगाई जा सकती, किंतु बहुत से नाटकों में इसकी आवश्यकता नहीं होती। इसके अतिरिक्त और भी बहुत सी आकृतियां जिनमें गांठ नहीं लगाई जाती किंतु वे नाटकों के लिए बहुत उपयोगी हो सकती हैं।

2. साधारण, सुस्पष्ट छाया पुतलियां

आवश्यक सामग्री—कार्ड पेपर 10" x 12", साधारण खुरदरा कागज 10" x 8", जोड़ने के लिए 2'' लंबी पतली तार, सूई एवं धागा, ट्रेसिंग पेपर, गोंद लगा हुआ कागज तथा झाडू की तीलियां, छोटी बांस की लकड़ियां अथवा वृक्षों की सीधी टहनियां भी काम आ सकती हैं।

पहले अभीष्ट पात्र को खुरदरे कागज पर रेखांकित कर लो। जिन अंगों को जोड़दार बनाना हो, उनके अति व्याप्त होने वाले भागों को बिंदु अंकित रेखा से चिह्नित कीजिए। शरीर और उसके जुड़ने वाले भाग—दोनों में ही बिंदु की स्थिति वृत्त के केंद्र के रूप में होनी चाहिए।

अब इन भागों को, कार्ड पेपर पर अलग-अलग ट्रेस कर लीजिए। यदि पुतलियां बड़े आकार की हों और कागज बहुत मोटा न हो तो उस पर पतला कपड़ा चिपका लेना चाहिए।

प्रत्येक भाग को काट लीजिए। जोड़े जाने वाले दोनों भागों को एक-दूसरे के ऊपर रखिए, सूई से सूराख कीजिए और उसमें पतले तार का टुकड़ा डालकर, दोनों ओर कुंडली देकर बिठला दीजिए। यदि ठीक समझें तो काले मोटे धागे का प्रयोग भी किया जा सकता है जिसमें दोनों ओर सुदृढ़ गांठ लगा देनी चाहिए।

बहुत सी साधारण पुतलियों के लिए, विशेष रूप से पशुओं के लिए, दो डंडे काफी होते हैं, एक सिर और दूसरा धड़ पर। मानव पात्रों का सामने का भाग यदि दर्शकों के समक्ष हो तो उनके लिए भी ये उचित हैं, किंतु साईड के समक्ष होने पर, हाथ को संचालित करने के लिए एक और डंडे की आवश्यकता हो सकती है।

डंडों को बांधने के दो बुनियादी तरीके हैं। एक है सरेस से चिपकाकर शरीर के साथ सिल देना और गम पेपर के इस्तेमाल से उसे सुदृढ़ बना लेना। दूसरा है डंडे के किनारे पर छेद करके, पक्के धागे से शरीर के साथ सिल देना, किंतु बीच में इतना स्थान छोड़ देना चाहिए कि डंडे को आकृति से परे, पकड़कर रखा जा सके। पहला तरीका सरल है, किंतु दूसरे में पुतली को गतिमान

करने के लिए अधिक सुविधा रहती है।

3. दंडों और धागों के साथ छाया पुतलियां

छाया पुतलियों के भागों को अपनी जगह पर टिकाए रखने के लिए रबर बैंडों तथा उन्हें संचालित करने के लिए पारभासी नायलोन के धागों का प्रयोग करना चाहिए। आकृति को सहारा देने के लिए चपटे लकड़ी के टुकड़ों अथवा गोल डंडों का प्रयोग किया जा सकता है। गति को अंशतया नियमित करने के लिए अगला पैर गतिमान किया जाता है जबकि दूसरा लगभग स्थिर रहता है। इस विधि से बनाई गई पुतलियों को नियामक डंडे, पर्दे के पीछे चपटी दशा में पकड़े रहते हैं।

7

रंगमंच तथा प्रदर्शन

पुतलियों के लिए कामचलाऊ रंगमंच कई तरह से निर्मित किए जा सकते हैं। यदि किसी स्कूल अथवा अन्य स्थान पर पुतली नर्तन, पाठ्यक्रम का नियमित अंग है तो पर्दे, लकड़ी के बक्से अथवा बैंच, वस्त्रों के टुकड़े (जिनमें कम ये कम एक तीन मीटर लंबा हो), बांस के डंडे, छह फुट से दस फुट तक लंबे तथा दो इंच से तीन इंच तक चौड़े कुछ काठ के फट्टे, तार तथा बक्सुए (छड़ के टुकड़ों को मोड़ने वाले)—ये सभी वस्तुएं उपलब्ध होनी चाहिए और विशेष नाटक की आवश्यकता के अनुसार व्यवस्थित ढंग से रखी होनी चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि संचालक के लिए, स्वतंत्रता से चलने-फिरने की पर्याप्त जगह होनी चाहिए, क्योंकि संचालकों तथा पुतलियों के लिए यथेष्ट स्थान की व्यवस्था किए बिना पुतली प्रदर्शन को सफलता से प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। रंगमंच के पीछे सदैव मेज तथा बैंच रखे रहने चाहिए जहां पर पुतलियों को तरतीब से रखा जा सके, ताकि रंगमंच पर उपस्थिति के समय वे सहज ही अपने स्थान पर मिल जाएं।

(अ) कामचलाऊ रंगमंच

1. पुतलियों के साथ प्रारंभिक कार्य के लिए किसी भी रंगमंच की आवश्यकता नहीं होती। कमरे में सभी उपलब्ध स्थान का स्वतंत्र गति तथा हस्त संचालन के बुनियादी अभ्यासों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

2. बकसुए की सहायता से एक तार को सुदृढ़ बनाकर उसके साथ कम से कम तीन गज का पर्दा लटकाना चाहिए। यह संचालकों को ढकने के लिए काफी होना चाहिए। दंड पुतलियों के लिए यह विशेष रूप से उपयोगी होता है।

3. **(क)** यदि दस फुट लंबे बांस को, दोनों ओर से दो व्यक्ति पकड़े रखें और उससे 48'' चौड़ा और तीन गज (या मीटर) लंबा कपड़े का पर्दा लटका दिया जाए तो वह लघु दृश्यों के लिए उपयुक्त रहेगा। धागों से संचालित पुतलियों के नर्तन के लिए इसे फर्श से तीन फुट ऊपर रखना चाहिए और यदि हाथ की पुतलियों अथवा दंड पुतलियों का प्रयोग करना हो तो इसे और भी ऊंचा रखना होगा।

(ख) उसी पोल को लकड़ी या बांस के दो खड़े डंडों के साथ भी बांधा जा सकता है, जिन्हें
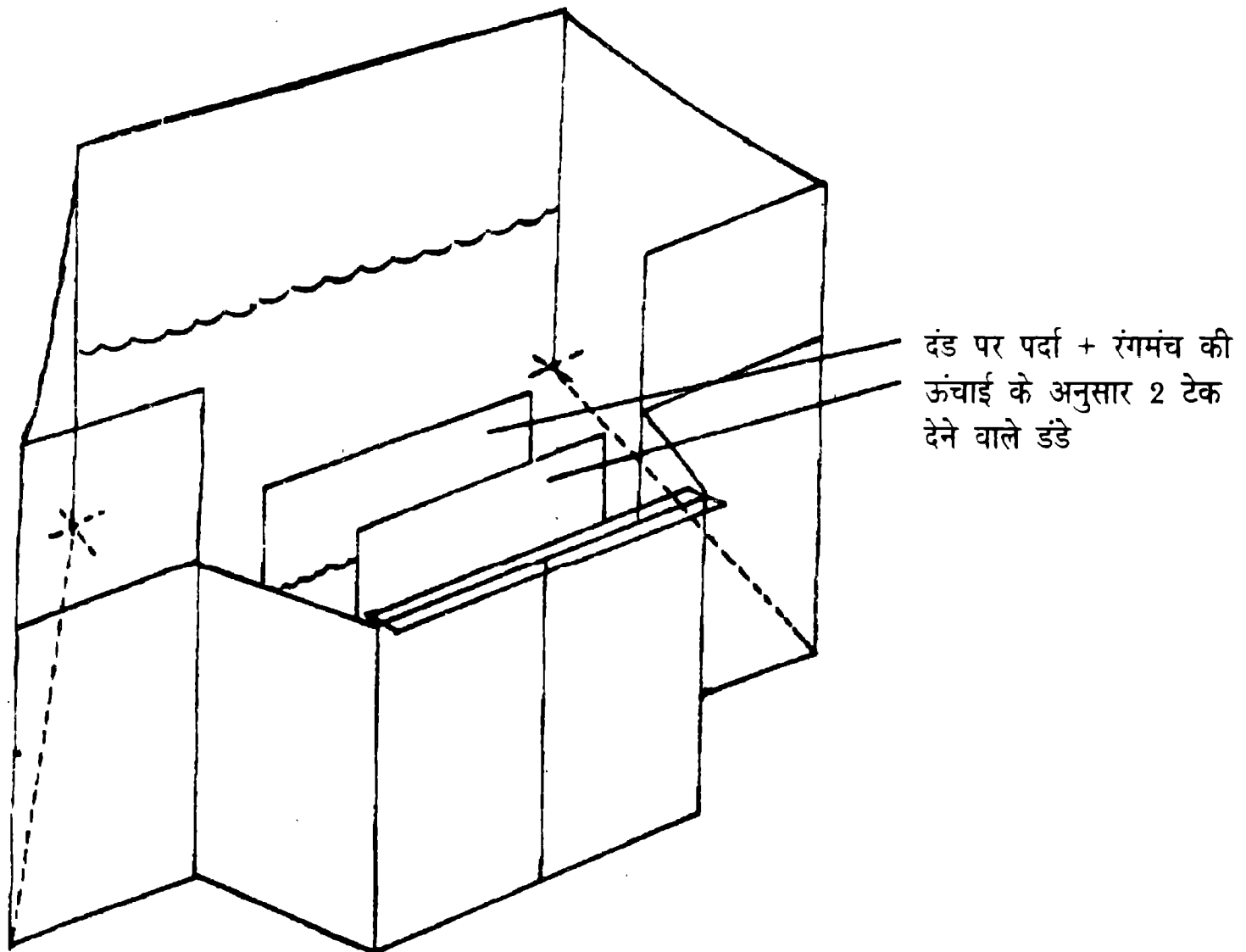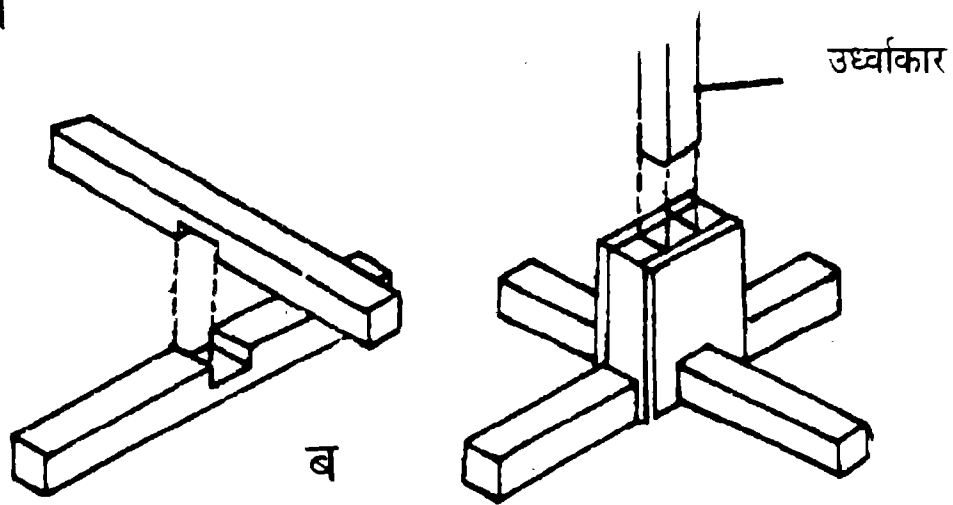
चित्र 1. दस्तानानुमा तथा दंड पुतलियों के लिए रंगमंच का डिजाइन, चित्र 2 के उसी रंगमंच के लिए योजना के साथ

पीछे के पर्दे का आधार यहां
या यहां
9'3"
यहां पिन कब्जे पर
कसा नहीं गया
यहां पिन कब्जे
पर कसा है
5
फ्रेम (ढांचा) 6
माप 3/4" = 1"
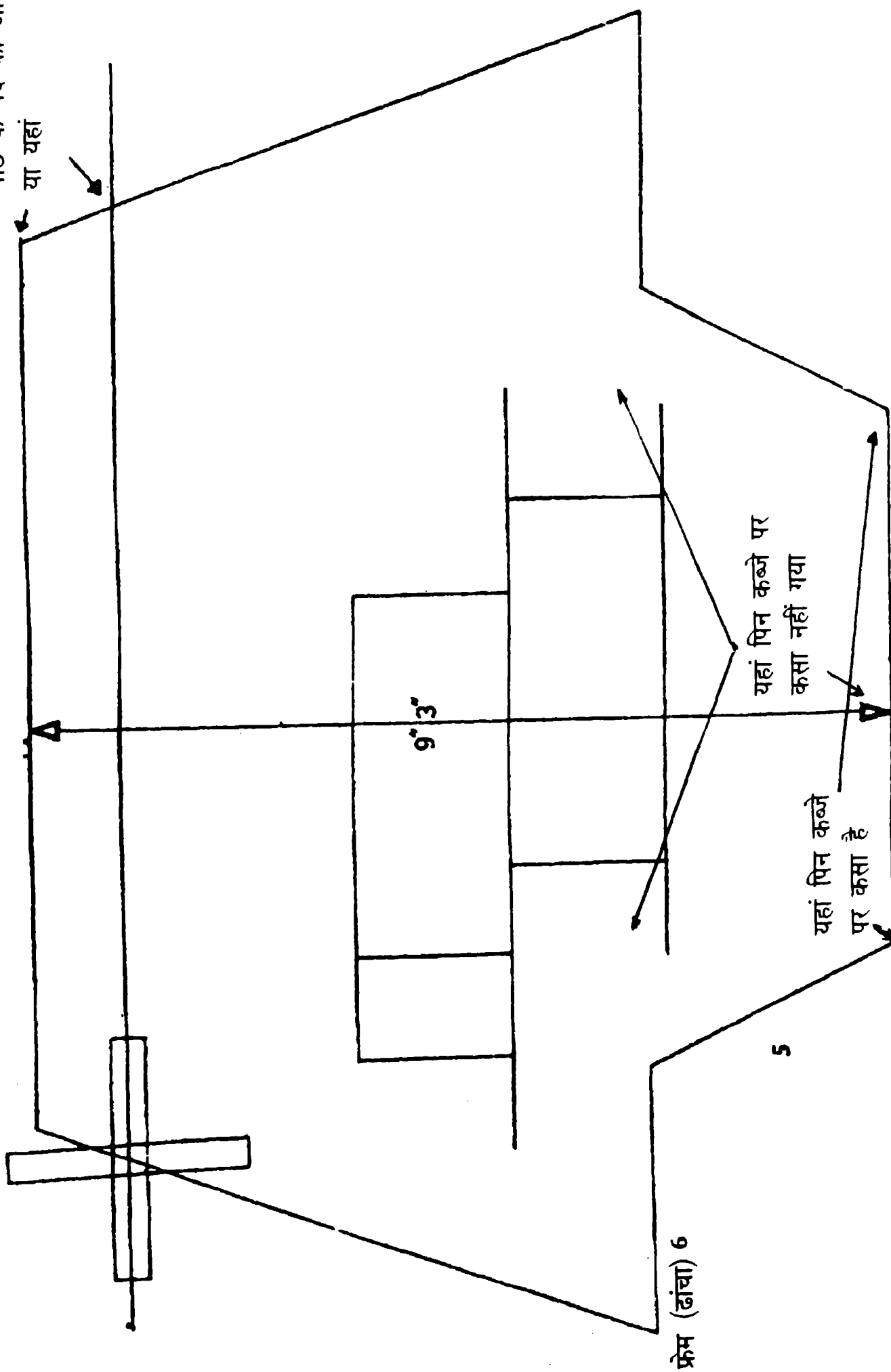
स्टेज के लिए योजना
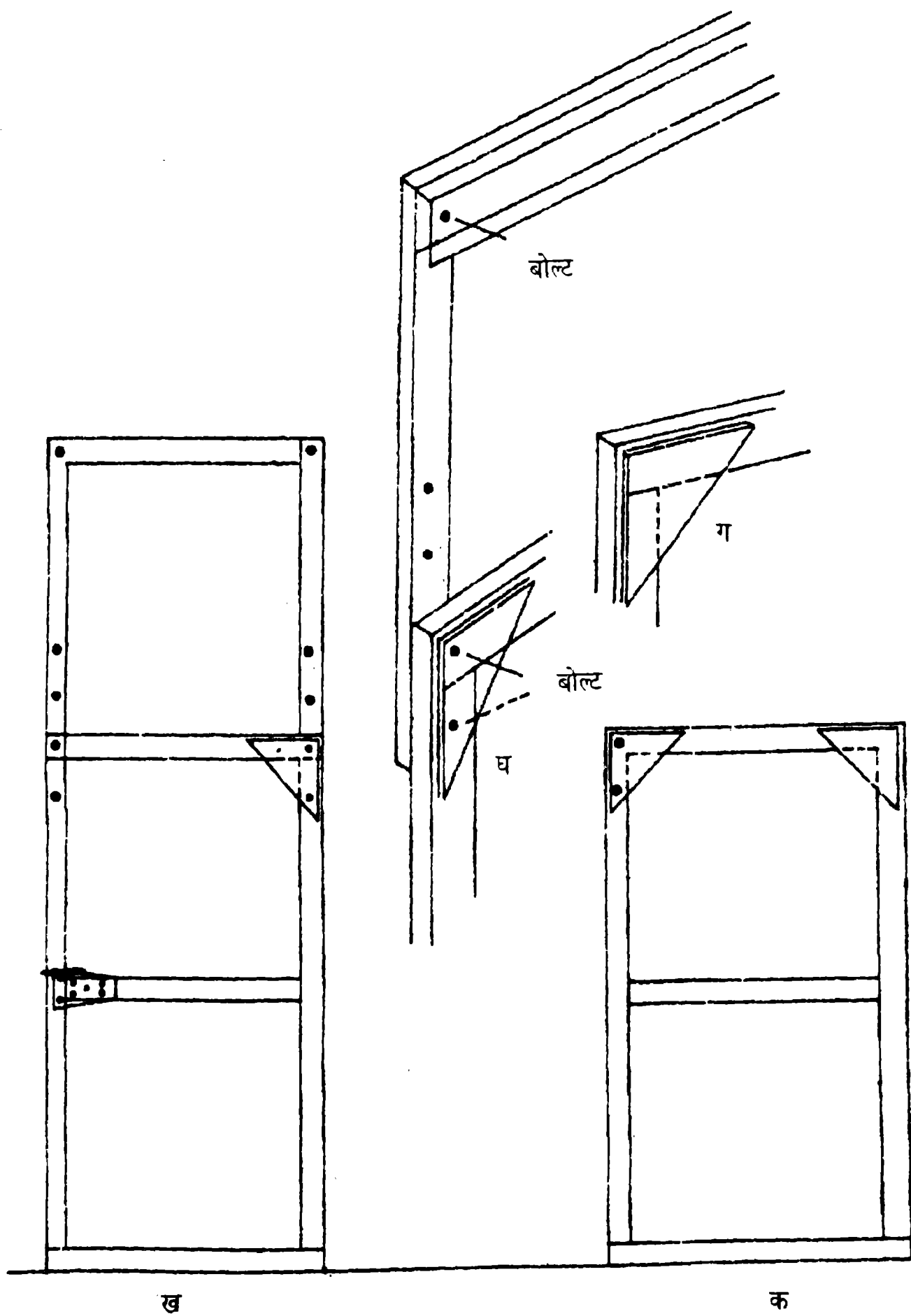
चित्र 3, 4 व 5. पर्दों के लिए फ्रेम के निर्माण का ब्योरा

फर्श
ग
ऊपर से दृश्य
4 फ्रेम
ख
प्रत्येक कोना इस
प्रकार कब्जे पर कसा
गया है।
क

27"
पिन यहां कब्जे पर कसे हैं
यहां पिन कब्जे पर कसे नहीं गये हैं।
पिन यहां कब्जे पर कसे हैं
क
कब्जे यहां हैं (फ्रेम के अंदर)
पिन यहां कब्जे पर कसे हैं
ख
बोल्ट
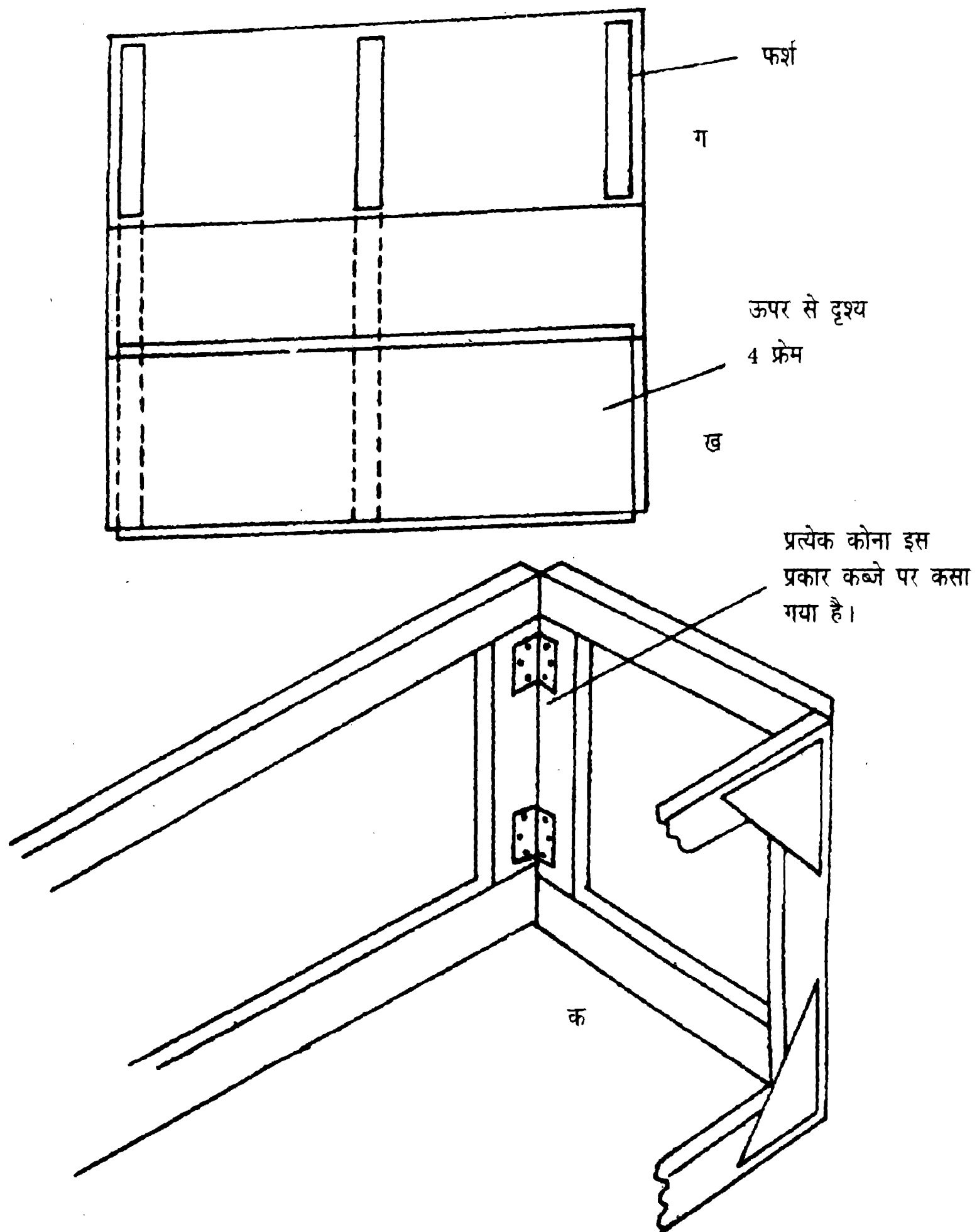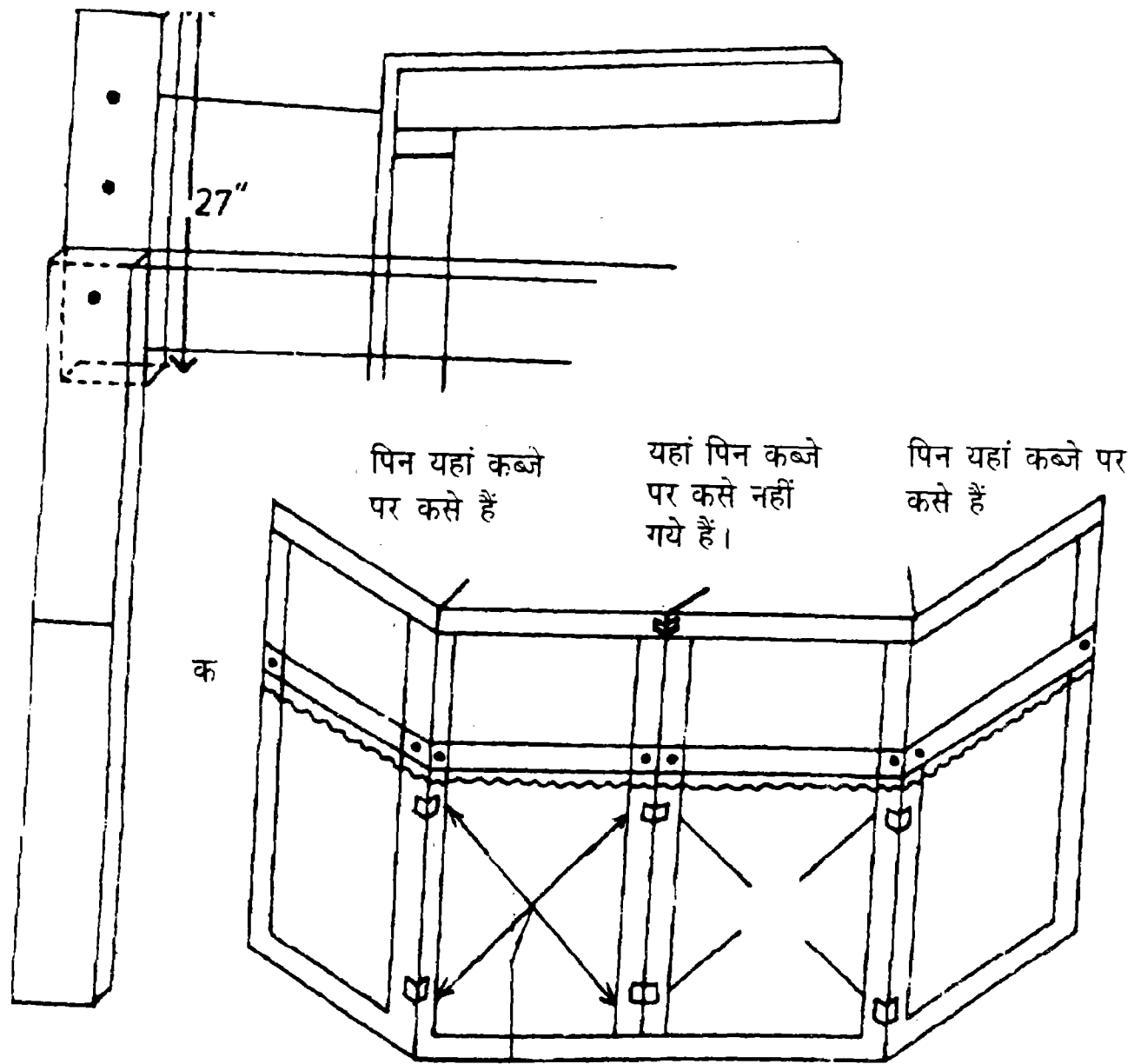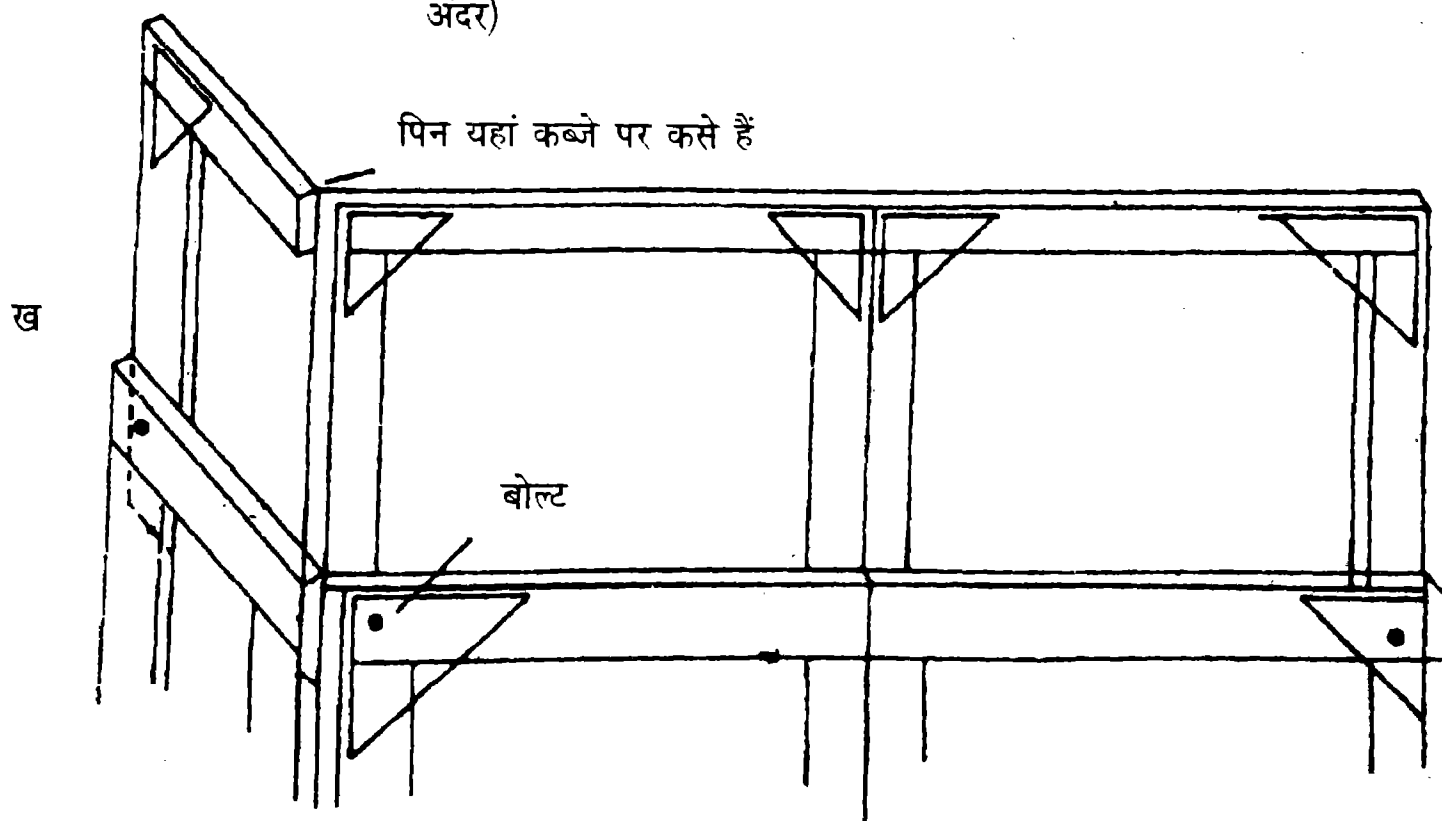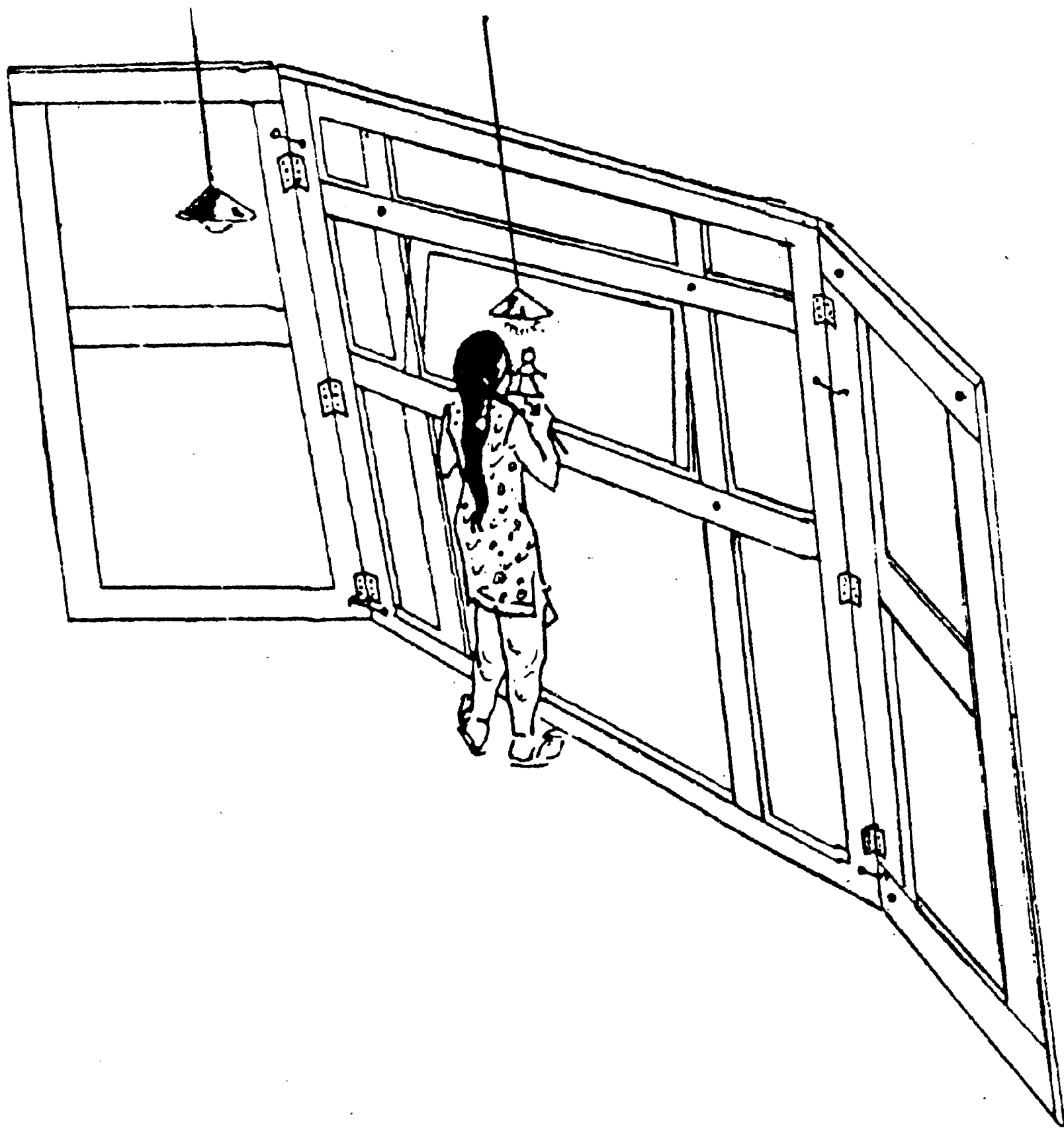
चित्र 6. दस्तानानुमा तथा दंड पुतलियों के लिए टूटवां रंगमंच तथा उसके साथ समायोज्य फ्रेम जिसे छाया नाटक के लिए भी सम्मिलित किया जा संकता है
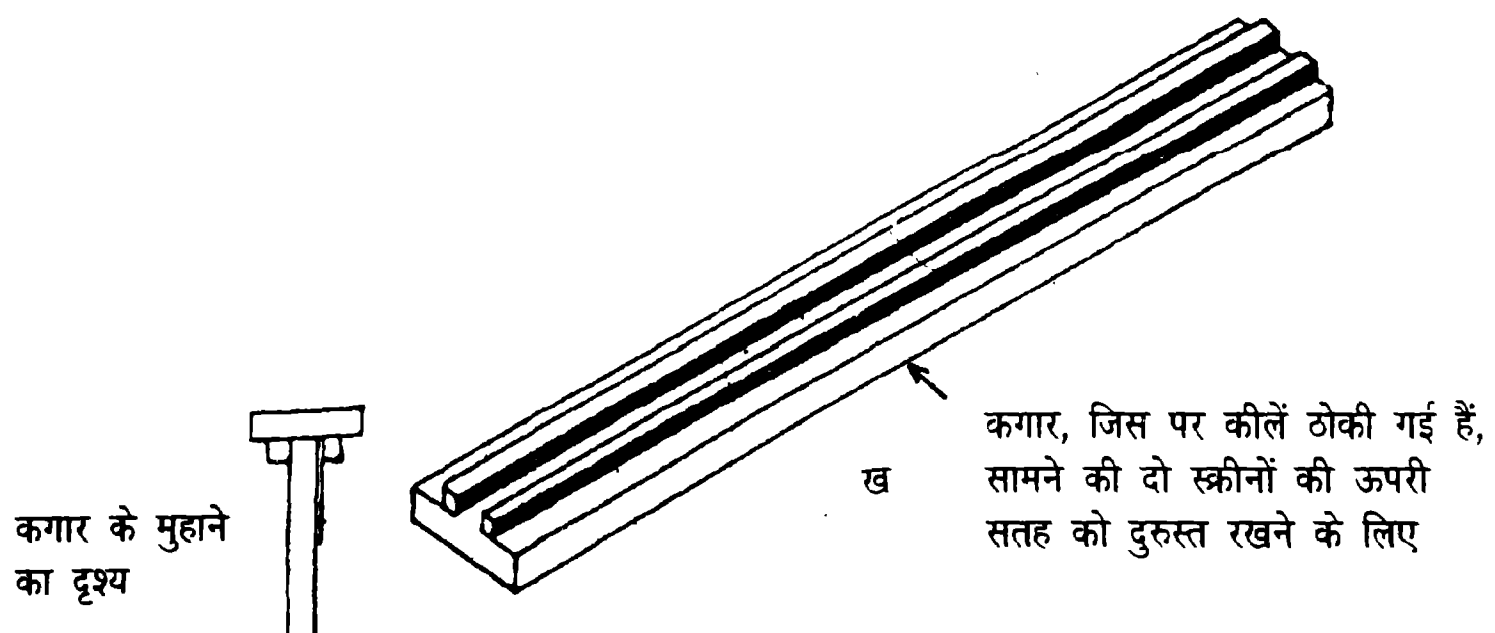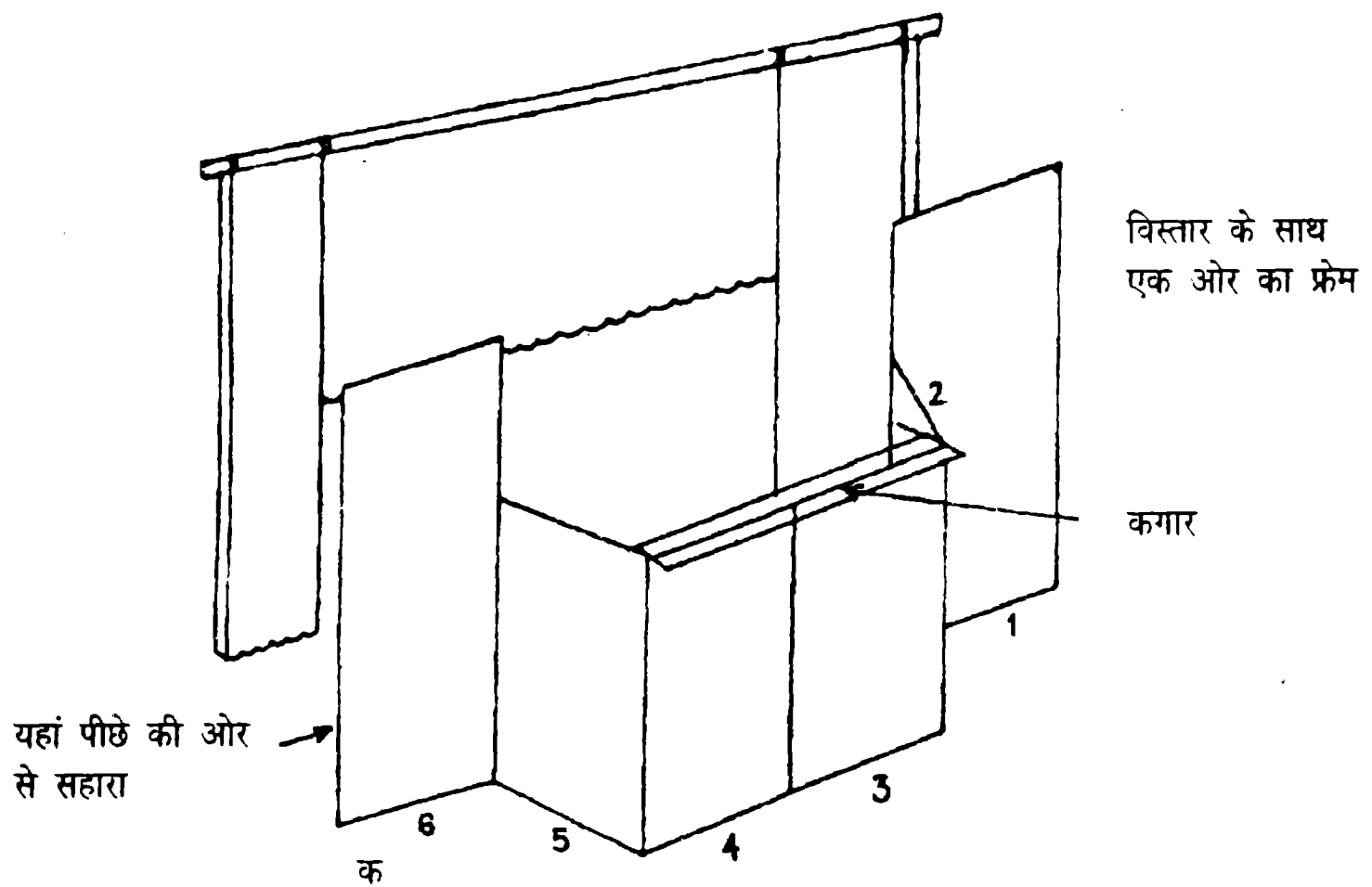
चित्र 7. समायोज्य पिछले पर्दों के साथ, खुले अग्रभाग वाला स्टेज

छाया स्क्रीन के लिए व्यवस्था
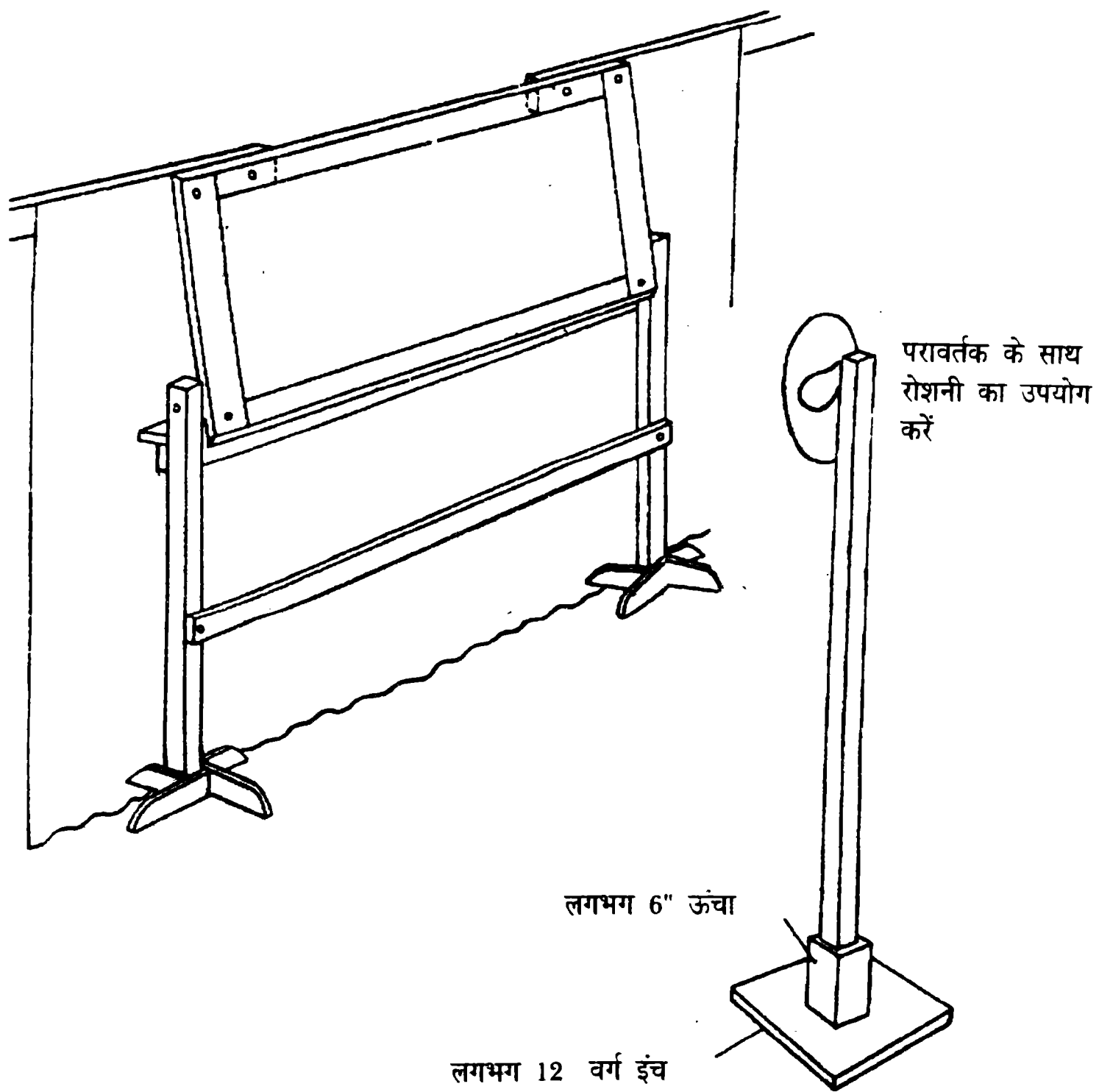
चित्र 8. छाया नाटक के स्क्रीन के लिए आशुरचित रंगमंच
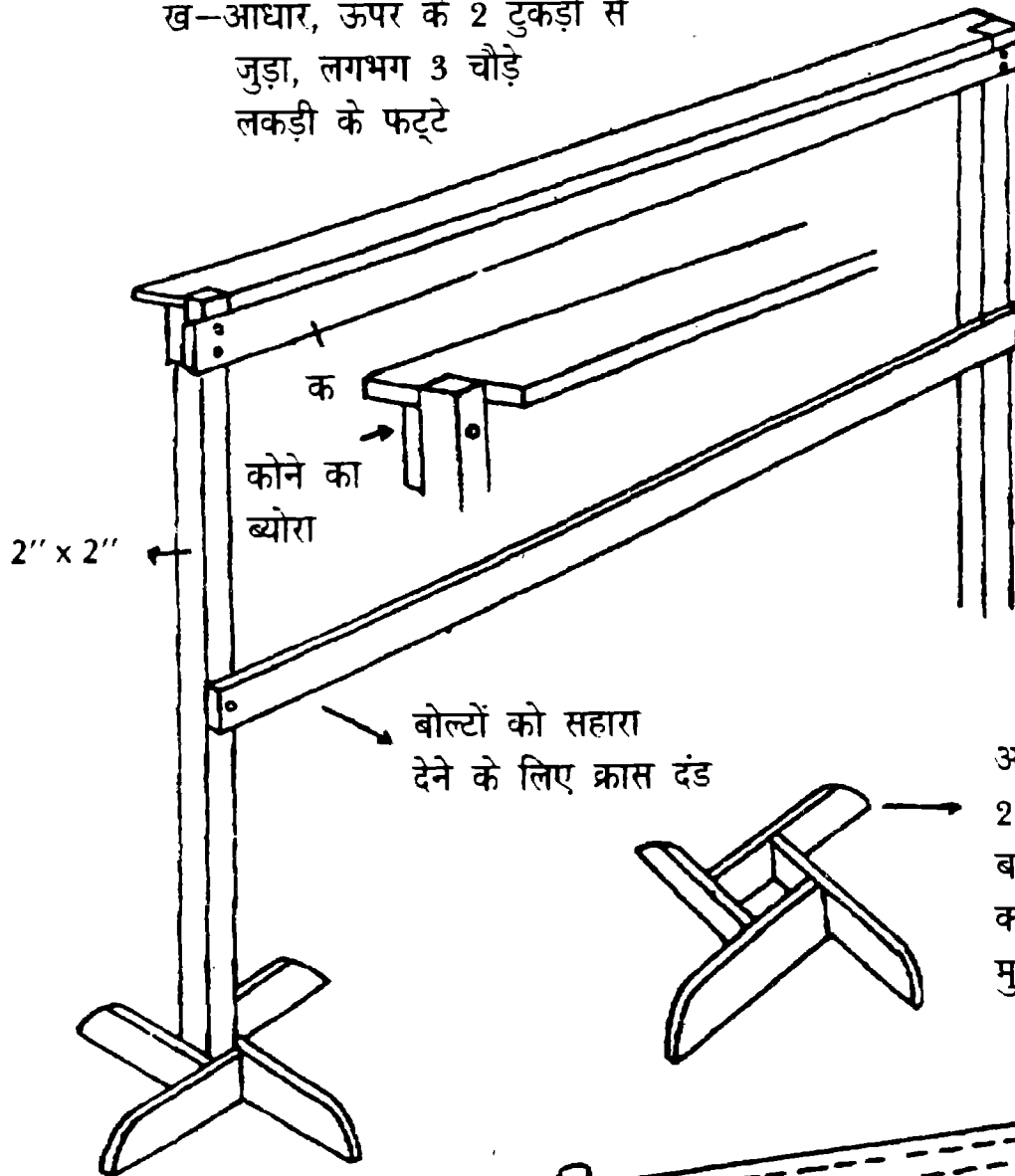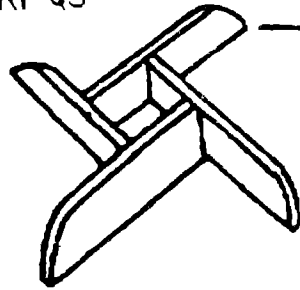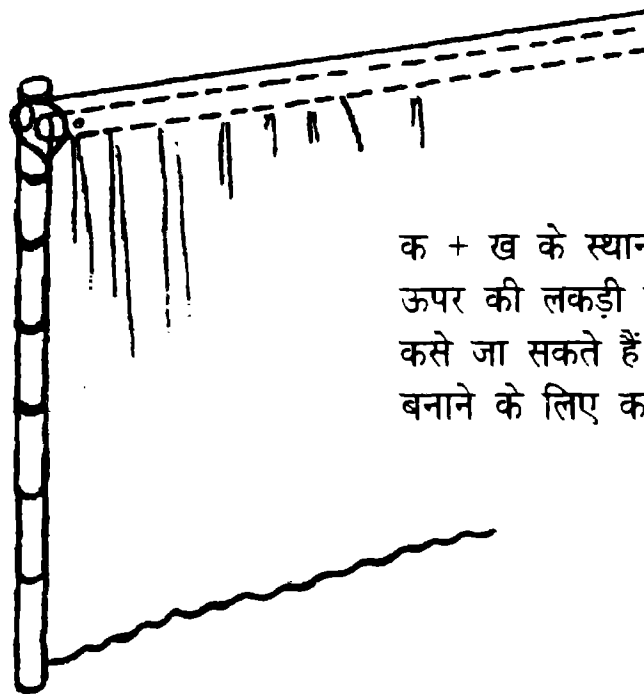
चित्र 9. प्रकाश के स्रोत सहित, उसी छायापट के निर्माण का ब्योरा
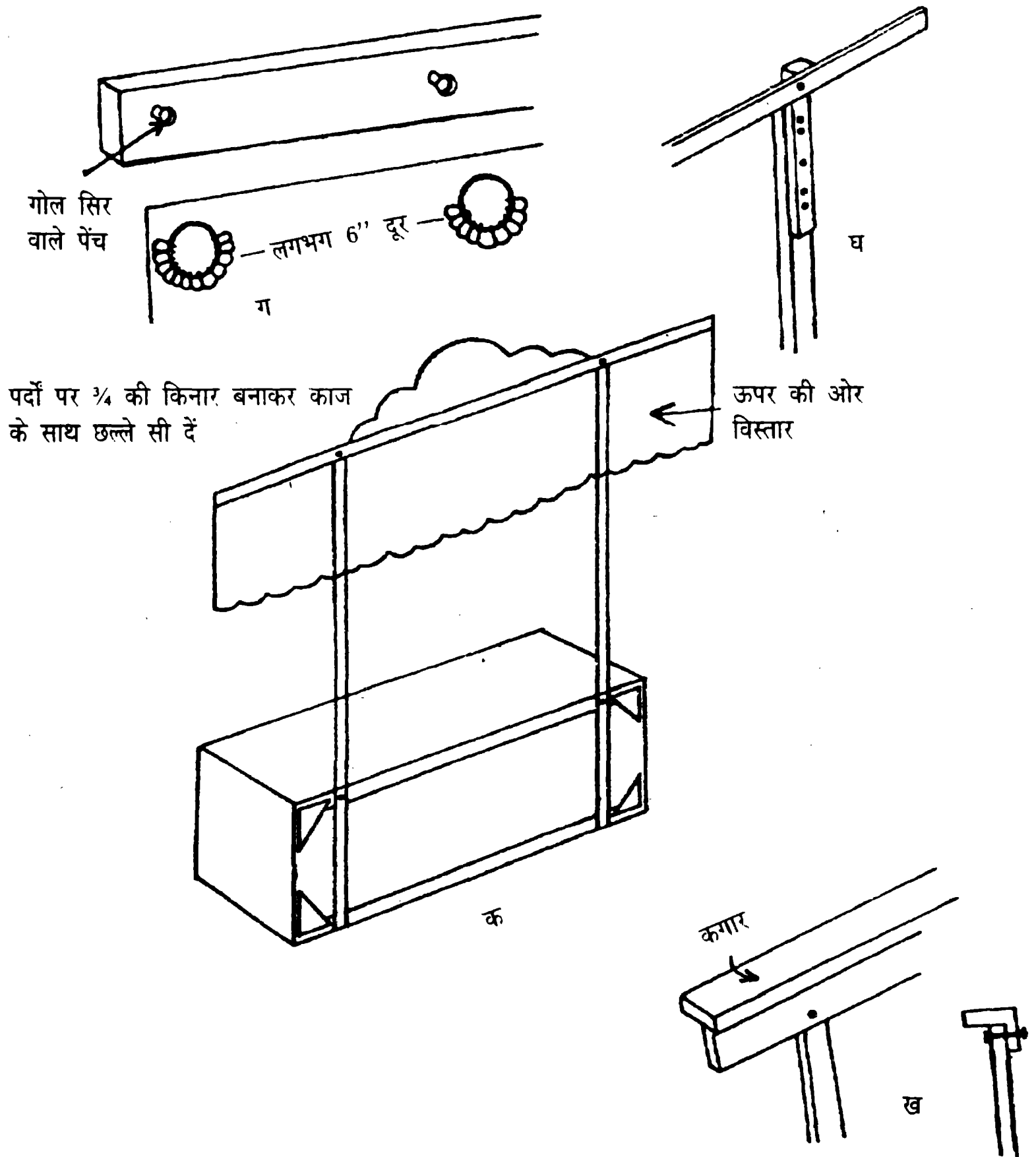
चित्र 10. धागों से संचालित पुतलियों के लिए कुछ एक आशुरचित रंगमंच
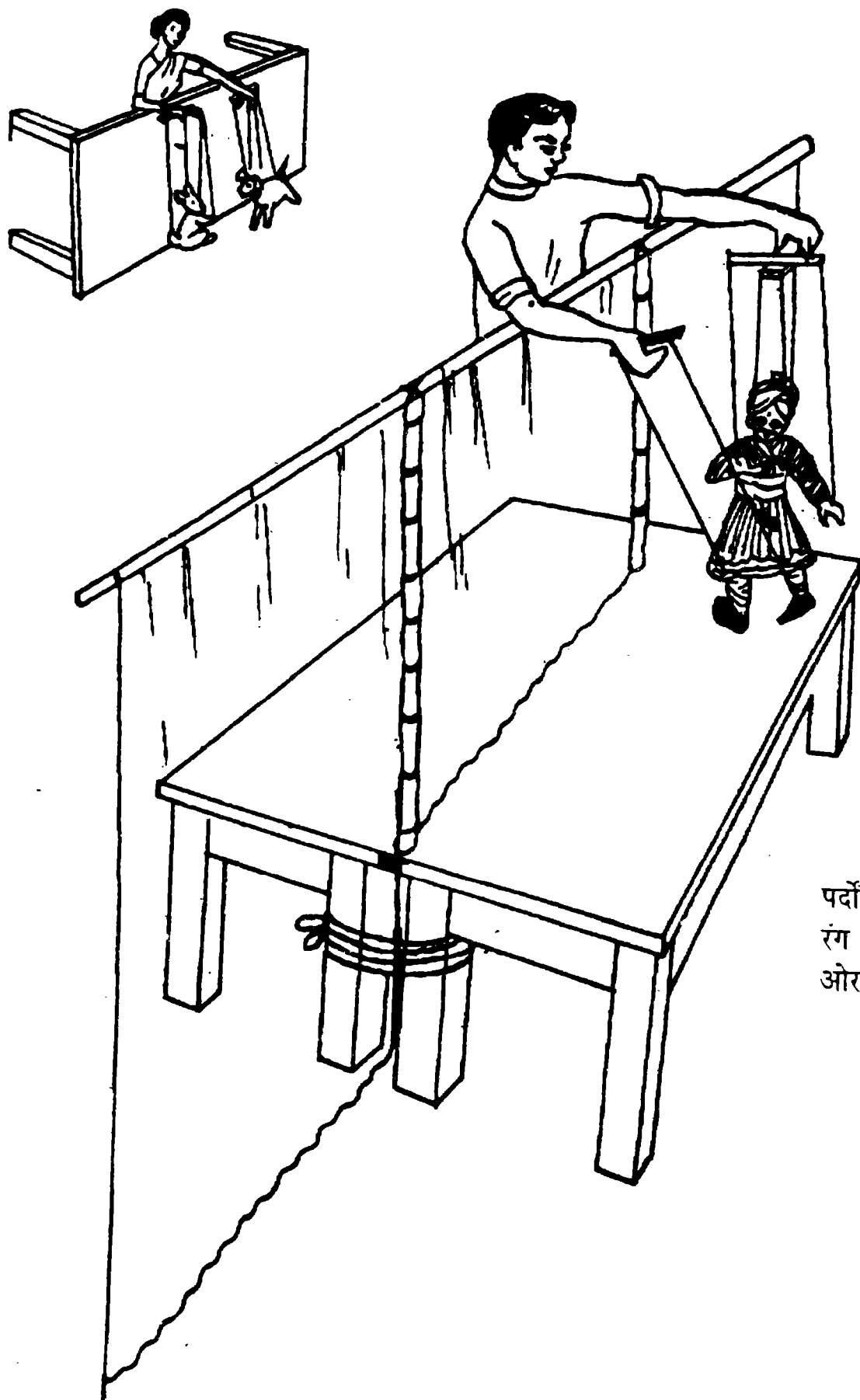
चित्र 11. धागों से संचालित पुतलियों के लिए कुछ अन्य आशुरचित रंगमंच

दस्तानानुमा अथवा दंड पुतलियों के लिए मेज का पुतलियों को आसानी से उपलब्ध कराने के लिए उपयोग कर सकते हैं

ढांचे का समंजन यहां के अनुसार

लकड़ी का ढांचा, मेज की टांगों और बांस के अवलंब के बीच जोड़ा हुआ। अवलंब को बांधने से पहले यह पूरी तरह सुरक्षित होना चाहिए
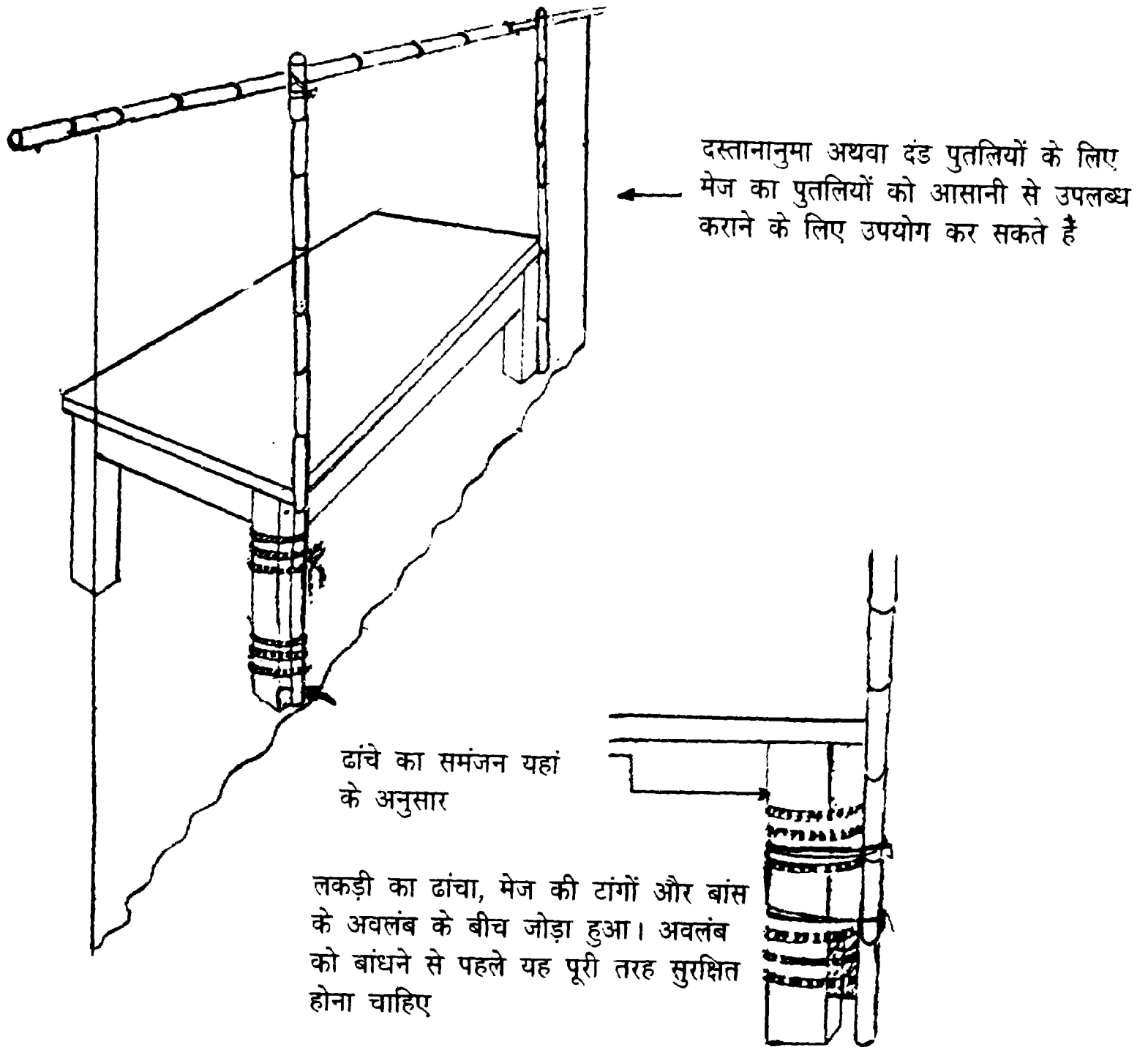
चित्र 12. संख्या 11 के आशुरचित रंगमंच के निर्माण का ब्योरा

चित्र 13. दृश्यावली का समंजन

नीचे मेज की दो टांगों से बांध देना चाहिए। इससे संचालक, हस्त पुतलियों या दंड पुतलियों के संचालन के लिए, स्वतंत्रता से चल-फिर सकते हैं। टेक देने वाले इन डंडों को सीधा रखने के लिए मेज के पटल के निर्गत भाग (प्रोजेक्शन) की चौड़ाई वाले, प्रायः 12'' लंबे लकड़ी के ब्लाक को पहले मेज की टांगों के साथ बांध देना चाहिए। टेक देने वाले डंडे फर्श तक पहुंचने चाहिए और उन्हें दो स्थानों पर बांधना चाहिए। इन डंडों की लंबाई को, रंगमंच का प्रयोग करने वाले व्यक्तियों की सामान्य ऊंचाई के अनुसार, कम या अधिक कर लेना चाहिए। प्रौढ़ों के लिए ये लगभग साढ़े पांच फुट होने चाहिए, किंतु छोटे बच्चों के लिए इस ऊंचाई को काफी कम करना होगा।

4. मेज या चारपाइयों का इस्तेमाल कई तरीकों से आशुरचित रंगमंचों की तरह हो सकता है।

(क) उन्हें आड़ा खड़ा कर, धागों से संचालित पुतलियों को फर्श के स्तर पर नचाने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। स्टेज के पिछले पर्दे के लिए, मेज या चारपाई पर कपड़े के टुकड़े को डाला जा सकता है। इसमें कठिनाई यह है कि उनकी टांगें नर्तकों के लिए बाधा बन जाती हैं। साथ ही इस प्रकार का रंगमंच केवल छोटे समूहों के लिए उपयोगी है क्योंकि धागों से संचालित पुतलियों को यदि ऊंचे स्तर पर प्रदर्शित न किया जाए तो उन्हें देखा नहीं जा सकता।

(ख) यदि नर्तक लगभग छह फुट लंबी ठोस मेजों (या जोड़कर रखे हुए दो छोटी मेजों) पर खड़े हों तथा पुतलियां सामने रखी हुई अन्य मेजों पर प्रदर्शित की जाएं, जबकि पिछला पर्दा मेजों की टांगों से संलग्न हो तो दर्शनीयता बढ़ जाती है। नर्तक अंशतया छिपे रहेंगे। यदि 3 (ख) में वर्णित टेक देने वाले डंडों की लंबाई दोनों के लिए ठीक हो तो बिल्कुल वैसी व्यवस्था का प्रयोग करना संभव होगा।

(ग) मेजों अथवा चारपाइयों के साथ, बांस तथा समुचित ऊंचाई के पर्दे को बांधकर उन्हें सिरे से ऊपर की तरफ भी खड़ा किया जा सकता है। नीचे से संचालित की जाने वाली पुतलियों के लिए यह बांस इतना ऊंचा हो कि नर्तक, दर्शकों को दिखाई न दें। धागों से संचालित पुतलियों के लिए इस ऊंचाई को समायोजित किया जा सकता है, किंतु इन पुतलियों को फर्श के स्तर पर ही प्रदर्शित किया जाएगा। फर्नीचर को खड़ी दशा में लगाने का लाभ यह है कि दोनों के बीच के स्थान को इस तरह समायोजित किया जा सकता है कि पुतलियों को गति के लिए काफी अधिक जगह मिल जाए।

5. मेज पर संचालित पुतलियों के लिए, मेजों को नाट्य क्रीड़ा की दृष्टि से कई तरह से व्यवस्थित किया जा सकता है। उनके सिरों के साथ सिरे जोड़े जा सकते हैं, उन्हें समकोण पर अथवा स्थान छोड़-छोड़ कर लगाया जा सकता है।

(ब) नीचे से संचालित पुतलियों के लिए सरल रंगमंच

एक हल्का, चलायमान रंगमंच बनाने के लिए दो 2" x 2" खंभे स्टैंड के रूप में गाड़िए। एक आड़ी लकड़ी की सहायता से रंगमंच को स्थिर बनाइए और क्रिया के लिए फलक को खंभों के साथ कस दीजिए। हस्त पुतलियों अथवा दंड पुतलियों के प्रयोग के लिए अच्छा होगा यदि अर्गला (आड़ी लकड़ी) के साथ शेल्फ लगा दिया जाए जिस पर पुतलियां क्रीड़ा कर सकें। इस रंगमंच की निर्माण विधि नीचे दी गई है। आड़ी लकड़ी की चौड़ाई इतनी होनी चाहिए कि जिस कमरे में काम हो रहा हो उसमें आ जाए, किंतु 9 या 10 इंच से कम नहीं होनी चाहिए। खंभे की चौड़ाई 3-4 इंच होनी चाहिए। रंगमंच की ऊंचाई, घटाई-बढ़ाई जा सकती है, यदि खंभों में थोड़े-थोड़े अंतर पर छेद कर लिए जाएं। यह ऊंचाई प्रौढ़ों के लिए साढ़े पांच फुट से 6 फुट तक आवश्यक है, बच्चों के लिए कम होनी चाहिए। यदि ढकने का वस्त्र, शेल्फ को सहारा देने वाली आड़ी लकड़ी के निचले किनारे के साथ बांध दिया जाए तो स्टेज के खोलने पर, उसे आड़ी लकड़ी पर लपेटा जा सकता है।

यदि इस ढांचे के लिए आवश्यक लकड़ी की व्यवस्था न हो सके तो यही सामान्य आयोजन, बांसों के साथ किया जा सकता है। जिसमें शेल्फ के लिए डेढ़ से दो इंच व्यास वाले बांस के टुकड़े आपस में बांधे जा सकते हैं। यदि ये टुकड़े, बोल्ट से एक-दूसरे के साथ कसे जा सकें तो कपड़े के किनारे को तह देकर, उन दो के बीच फंसाया जा सकता है।

छाया पुतलियों के प्रदर्शन के लिए एक परदे की आवश्यकता होगी जिस पर बारीक कपड़े को कसकर ताना जा सके। फ्रेम इतना दृढ़ होना चाहिए कि ऐसा करने से वह टेढ़ा न हो जाए। ऊपर वर्णित रंगमंच का प्रयोग, साधारण प्रदर्शन के लिए हो सकता है। खंभों के बीच मुख्य आड़ी लकड़ी को, खंभों में और छेद करके नीचे स्थिर किया जा सकता है। परदे को इस पर टिकाना चाहिए और वह ऊपर से आगे की ओर झुका होना चाहिए ताकि पुतलियों को जब संचालित किया जाए तो वे चपटी स्थिति में रहें। चूंकि परदा संभवतया खंभों के कुछ ऊपर टिका होगा, अतः उसको दोनों तरफ से ढकने के लिए वस्त्र लगा देना चाहिए। फर्श से परदे की दूरी, उसका प्रयोग करने वाले व्यक्तियों पर निर्भर करेगी। प्रौढ़ों के लिए 4 फुट ऊंचाई ठीक है, बच्चों के लिए यह कम हो सकती है। पुतलियों को सुविधा से प्रदर्शित करने के लिए आवश्यक है कि संचालक सीधे खड़े हो सकें और आसानी से चल-फिर सकें। इस दृष्टि से प्रकाश की व्यवस्था, उनके सिर के ऊपर तथा पीठ के पीछे होनी चाहिए। संचालकों की परछाइयां पर्दे पर नहीं पड़नी चाहिए। कई बल्बों की अपेक्षा 100 से 200 वाट्स का एक ही बल्ब जो प्रकाशक्षेपी (रिफ्लैक्टर) यंत्र की सहायता से तेज रोशनी दे सके, बेहतर होगा। अधिक बल्बों का प्रयोग करने से पर्दे पर कई परछाइयां पड़ेंगी। यदि ठीक स्थान पर हुक लगी हो तो बल्ब को छत से लटकाया जा सकता है, अथवा जिन रंगमंचों का ऊपर वर्णन किया गया है या रेखाचित्र क्रमांक 8 में प्रदर्शित सरल रंगमंच; में खंभों के लिए प्रयुक्त टेक के साथ इसे बांधा जा सकता है।

स्कूलों में प्रदर्शन प्रस्तुत करते समय संतोषजनक प्रकाश अक्सर किसी बड़ी खिड़की अथवा दरवाजे से मिल सकता है।

नोट–नाटक चाहे कितना ही सरल क्यों न हो, एक मेज, बेंच अथवा अन्य उपयुक्त स्थान का होना आवश्यक है, जहां पात्रों को तरतीब से रखा जा सके ताकि जब उनकी रंगमंच पर आवश्यकता हो तो वे सहज ही अपने स्थान पर मिल जाएं।

(स) दृश्यावली तथा रंगमंचीय सामग्री

पुतलियों के लिए सुंदर पार्श्व होने का अपना महत्व है, क्योंकि उससे उनका प्रदर्शन अच्छा दिखता है। अक्सर इसके लिए एक सामान्य दीवार अथवा पिछला पर्दा काफी होता है और आमतौर पर अधिक दृश्यावली की आवश्यकता भी नहीं होती। कितनी दृश्यावली का प्रयोग किया जाए अथवा उसे कहां रखा जाए यह नाटक विशेष पर निर्भर करेगा, किंतु उसे जितना सादा रखा जा सके उतना ही ठीक रहता है। मेज पर प्रदर्शित की जाने वाली पुतलियों के लिए जो भी दृश्यावली आवश्यक हो, उसे बनाकर, मेज पर रखना चाहिए। यदि रंगमंच पर पुतलियों की क्रीड़ा के लिए सुदृढ़ शेल्फ की व्यवस्था हो तो दृश्यावली की एक या दो कृतियां, रेखाचित्र क्रमांक 13 की तरह, नट बोल्टों से संलग्न की जा सकती हैं। कभी-कभी दृश्यावली की कृति को पिछले पर्दे के डंडे पर सरकने वाले किसी हुक अथवा उससे लटकने वाले तारों के साथ बांधा जा सकता है। यदि दृश्य छोटा हो, और पुतली पात्र नीचे से प्रदर्शित किए जाने हों तो दृश्यावली की कृति को डंडे से बांधा जा सकता है और कक्षा का कोई सदस्य उसे एक स्थान पर पकड़कर रख सकता है। यदि नाटक में झूमते हुए वृक्षों को प्रदर्शित करना हो तो उन्हें भी सहज ही इस तरीके से दिखाया जा सकता है।

जैसे पुतलियों के निर्माण तथा विकास में सृजनात्मकता की आवश्यकता होती है वैसे ही दृश्यावली की समस्याओं के समाधान के लिए सृजन शक्ति एवं कल्पना की सहायता लेनी पड़ती है। हां, इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जिस प्रकार की दृश्यावली की व्यवस्था की जाए वह पुतलियों के साथ मेल खाती हो। रंग-बिरंगी तथा साहित्यिक शैली के अनुसार निर्मित पुतलियों के समूह के साथ, वृक्ष की प्राकृतिक शाखा का सामंजस्य नहीं बैठ पाएगा। उनके लिए उन्हीं से मिलती-जुलती शैली के अनुसार कागज की कोई दृश्यावली बनानी होगी।

यदि पुतलियों में छतरी अथवा पुस्तक जैसी किसी सामग्री का प्रयोग करना हो तो उसे इतना बड़ा बनाओ कि आसानी से देखा जा सके। इसमें थोड़ी-बहुत अतिशयोक्ति भी क्षम्य होगी। कुछ पदार्थों को तो दर्शकों की कल्पना पर छोड़ा जा सकता है। यह आवश्यक नहीं है कि एक पात्र दूसरे पात्र को वास्तव में रुपया-पैसा दे, अंग भंगिमा से ही उसका संकेत दिया जा सकता है। हां, हस्त पुतलियों के लिए, वास्तविक सामग्री का होना महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे उसे अन्य प्रकार की पुतलियों की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह प्रतिपादित कर सकती हैं। उपलब्ध पुतलियों के साथ ऐसे प्रयोग करना आवश्यक होगा जिससे यह मालूम हो जाए कि वे कितनी बड़ी तथा किस आकार और

आकृति की वस्तु का आसानी से प्रतिपादन कर सकती हैं।

प्रकाश व्यवस्था

पुतली रंगमंच का आकार छोटा होने के कारण, उसमें पर्याप्त प्रकाश का होना बहुत महत्वपूर्ण है। इस बात को सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि पुतलियां स्पष्ट रूप से देखी जा सकें तथा उनका लचीलापन उभरकर सामने आ सके। ऊपर से पड़ने वाली तेज रोशनी, पक्षों से आने वाले प्रकाश पर छा जाती है। पुतलियों पर सबसे अधिक तेज रोशनी डालनी चाहिए तथा पृष्ठभूमि अथवा सैटों पर छितरा प्रकाश उपयुक्त रहता है। यद्यपि प्रकाश की तीव्रता में अंतर का होना वांछनीय है, किसी एक दिशा से अत्यधिक तीव्र प्रकाश से बड़ी-बड़ी काली परछाइयां पड़ सकती हैं जो पुतलियों के प्रदर्शन को बिगाड़ देती हैं। यह व्यवस्था उतनी ही बुरी है जितनी की एकरूप प्रकाश की।

यदि छाया नाटक का, दिन के प्रकाश में अभ्यास किया जाए तो परदे को खुली खिड़की के पास रखने से ही प्रदर्शन काफी प्रभावी हो सकता है, क्योंकि हमारे देश में सूर्य का प्रकाश अत्यंत प्रखर होता है। किंतु यदि छायापट नियमानुसार ही हो और उसकी लंबाई चार फुट से अधिक न हो तो एक ट्यूबलाइट अथवा सिर के ऊपर लटकते हुए 100 वाट्स के बल्ब से काम चल सकता है।

विशेष मनःस्थिति को संकेतित करने तथा उपयुक्त वातावरण के सृजन के लिए, स्पाट लाईट तथा रंगीन प्रकाश का प्रयोग किया जा सकता है, किंतु ऐसी दशा में भी उसके न्यूनतम प्रयोग तथा सरलता पर बल देना चाहिए। अनावश्यक रंग-बिरंगी रोशनी के प्रयोग से बचना चाहिए।

8

अनुपूरक पठन सामग्री

यह विवरण मुख्य रूप से *पपेट्स एंड फलेज़* पर आधारित है। बेचलदर तथा कोमर द्वारा रचित *ए क्रियेटिव एप्रोच,* जिसे हार्पर एंड रो, न्यूयार्क ने 1956 में अमेरिका में तथा फेबर एंड फेबर लिमिटेड, 24 रज़ल स्ट्रीट, लंदन, डब्ल्यू. सी. ने इंगलैंड में प्रकाशित किया है।

सृजनात्मक नाटक के विस्तृत अध्ययन के लिए विशेष रूप से उपयुक्त पुस्तकों की सूची नीचे दी गई है। विनिफ्रेड वार्ड की *प्ले मेकिंग विद चिल्ड्रॅन* (न्यूयार्क, एपलटन सेंचुरी क्राफ्ट्स इंक 1947) तथा गेरल डिन सिक की *क्रियेटिव ड्रामैटिक्स, एन आर्ट फार चिल्ड्रन* (न्यूयार्क, हार्पर एंड रो., 1958), जिज्ञासु अध्यापकों के लिए शायद सर्वाधिक महत्वपूर्ण होंगी। दूसरी पुस्तक में सामग्री को स्पष्टता से संक्षेप रूप में दिया गया है। पीटर स्लेट की *एन इंट्रोडक्शन टू चाइल्ड ड्रामा* (यूनिवर्सिटी आफ लंदन प्रैस लि., वारविक स्क्वायर ई. सी. 4, 1958) अन्य उत्कृष्ट रचना है। इसी लेखक तथा प्रकाशक की अन्य अत्यधिक गंभीर रचना है *चाइल्ड ड्रामा।* रुथलीज़ तथा गेरलडिन सिक की पुस्तक *क्रियेटिव ड्रामैटिक्स इन होम, स्कूल एंड कम्युनिटी* (न्यूयार्क, हार्पर एंड ब्रदर्ज, 1952) में कुछ ऐसे अध्याय हैं जिनमें सृजनात्मक नाट्य क्रीड़ा में बच्चों के मार्गदर्शन तथा अलग अलग आयु वर्गों के बच्चों को उसकी जानकारी देने के संबंध में अच्छा विवरण दिया गया है। इसमें एक अच्छी ग्रंथ सूची तथा परिशिष्ट भी है जिनमें ताल, नाट्य क्रीड़ा तथा मूक अभिनय के लिए विभिन्न अभ्यासों के लिए बहुत से सुझाव दिए गए हैं। विनिफ्रेड वार्ड की *स्टोरीज़ टु ड्रामेटाईज* (एंकरेज, केण्टकी–अमेरिका) दी चिल्ड्रन्स थियेटर प्रैस, 1952, नाट्य क्रीड़ा के लिए उपयुक्त कहानियों का एक अच्छा संग्रह है।

भारतीय पारंपरिक कठपुतली नर्तन तथा अन्य देशों द्वारा कार्य पर बहुमूल्य सामग्री के लिए भारतीय नाट्य संघ, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक *नाट्य, थियेटर आर्ट्स जर्नल* के 1960-61 के शरतृकालीन संस्करण में *पपेट थियेटर अराउंड द वर्ल्ड* नामक लेख देखिए।

एक अधिक विस्तृत ग्रंथ सूची का संपादन मार्जोरी बेचलदर ने *ए सिलेक्टेड बिबलियोग्राफी : क्रियेटिव ड्रामैटिक्स, पपेट्री, क्रियेटिव आर्ट्स* के नाम से किया है जिसे राष्ट्रीय दृश्य तथा श्रव्य शैक्षणिक संस्थान, इंद्रप्रस्थ इस्टेट, रिंग रोड, नयी दिल्ली ने प्रकाशित किया है। इसे विभाग से निःशुल्क प्राप्त किया जा सकता है।

भारत के बहुत से नगरों में, यूनाइटेड स्टेट्स इंफारमेशन सर्विस पुस्तकालयों अथवा ब्रिटिश काउंसिल पुस्तकालयों में भी कुछ सामग्री उपलब्ध होगी। आवश्यकता होने पर वे ऐसी पुस्तकों को अपने देशों से भी मंगवा देंगे।

कुछ अन्य संगठन भी हैं जो इस संबंध में सहायता दे सकते हैं। जैसे—नई दिल्ली में भारतीय नाट्य संघ तथा अन्य भारतीय नगरों में इसकी शाखाएं, उदयपुर में लोक कला मंडल, राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण संस्थान, नयी दिल्ली आदि।

इस निर्देशिका में विषय का केवल संक्षिप्त विवरण दिया गया है। अतः हमें आशा है कि सृजनात्मक नाटक के अध्यापक, इन प्रामाणिक रचनाओं तथा अन्य सामग्री के लिए ऊपर दी गई संस्थाओं तथा संगठनों की सेवाओं का लाभ उठा सकेंगे।

Printed at Shivam Offset Press, A-12/1 Naraina Indl. Area, Phase-I, New Delhi-110 028